



वेदशास्त्र प्रवचन

कनिष्ठ सहायक

व्यावसायिक पाठ्यक्रम स्तर 2.5

राष्ट्रीय व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा मान्यता प्राप्त





महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)

(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार)

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड

वेदविद्या मार्ग, चिन्तामण, पो. ऑ. जवासिया, उज्जैन - 456006 (म.प्र.)

Phone : (0734) 2502266, 2502254, E-mail : msrvvpujn@gmail.com, website - www.msrvvp.ac.in

वेदशास्त्र प्रवचन कनिष्ठ सहायक

प्रधान सम्पादक

प्रो. विरूपाक्ष वि. जड्डीपाल्

सचिव

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड

लेखकगण

डॉ. जय प्रकाश द्विवेदी — श्री यादवेश शर्मा

एम०ए०, पी०एचडी०(शिक्षक सामवेद कौथुम) — घनान्त (शिक्षक कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय)

डॉ. गोविन्द प्रसाद शर्मा, ज्योतिषाचार्य

एम०ए०, एम० फिल०, पी०एचडी०(शैक्षिक सहायक)

प्रधान संयोजक

डॉ.अनूप कुमार मिश्र

सहायक निदेशक, प्रकाशन एवं शोध अनुभाग

आवरण एवं सज्जा : श्री शैलेन्द्र डोडिया

तकनीकी सहयोग एवं टङ्कण : श्री नरेन्द्र सोलंकी

© महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रिय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जयिनी

ISBN : मूल्य :

संस्करण : 2024 प्रकाशित प्रति : PDF

प्रकाशक : महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रिय वेदविद्या प्रतिष्ठान

(शिक्षामन्त्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था)

वेदविद्या मार्ग, चिन्तामण, पो. ऑ. जवासिया, उज्जैन - 456006 (म.प्र.)

Email: msrvvpujn@gmail.com, Web: msrvvp.ac.in

दूरभाष (0734) 2502255, 2502254

भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की पाठ्यचर्या एवं राष्ट्रीय कौशल भारत मिशन का उद्देश्य शिक्षण विकास एवं प्रशिक्षण के द्वारा शिक्षार्थियों का सर्वांगीण विकास कर रोजगार प्रदान करना है। महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान उज्जैन सदैव शैक्षिक नवाचार के क्षेत्र में अग्रसर रहा है अतः आदर्श वेद विद्यालयों, पाठशालाओं एवं भारत के विद्यालयों में वैदिक कौशल विकास शिक्षण एवं प्रशिक्षण के द्वारा अनेकानेक गतिविधियों के माध्यम से शिक्षार्थियों को रोजगार के अवसर प्रदान कर रहा है, जिससे शिक्षार्थी प्रशिक्षण के ज्ञानार्जन द्वारा स्वयं को अद्यतन एवं जागृत कर सकेंगे तथा इसके विषय ज्ञान का लाभ अपने दैनन्दिन जीवन के साथ-साथ आजीविका प्राप्त कर राष्ट्र निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकेंगे।

वास्तुशास्त्र कनिष्ठ सहायक पाठ्यपुस्तक में इकाईयों के विषयों को विविध आयामों के साथ सहज एवं प्रभावी तरह से प्रस्तुत किया गया है लेकिन फिर भी **कोई दोष हों तो हमें सूचित अवश्य** करें क्योंकि हमारा परम उद्देश्य वैदिक सिद्धान्तों के आधार पर वैदिक ज्ञान को कौशल विकास के माध्यम से जन-जन पहुँचाना है। अतः पाठ्य पुस्तकों की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए विद्वानों के समस्त सुझावों का स्वागत है।

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

भूमिका

वेद सम्पूर्ण जगत का ज्ञानाधार स्तम्भ माना जाता है, वैदिक ज्ञानसंविधान को अपनाकर समस्त मनुष्यप्राणी अपने जीवन के प्रगतिपथ के तरफ उन्मुख हो रहे हैं।लाभदृष्टि के अनुसार वेद हमें मनोभिलषित कामनाओं की पूर्ति एवं अनिष्ट(हानिकारक) विषयों से रक्षा का उपाय बताता है। परन्तु जो प्राणी वेदशास्त्रज्ञान से विमुख होता है उसके जीवन में सुख, कार्य में सिद्धि अथवा परमगति भी नहीं मिलती है।**"य:शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्ततेकामकारत: न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं नपरां गतिम्"** (श्रीमद्भगवद्गीता१६/२३) ।

निरुक्त ग्रन्थ के अनुसार अत्रि, भृगु, वशिष्ठ, विश्वामित्र, जमदग्नि आदि अनेकों ऋषियों ने वेदमंत्रों को स्वयं अपने आँखों से प्रत्यक्ष दर्शन किए तत्पश्चात वे अपने अन्यशिष्यों को भी वेदमन्त्रों का उपदेश प्रदान किए ।

साक्षात्कृत-धर्माण ऋषयोबभूवु: तेऽवरेभ्योऽसाक्षात्कृत धर्मभ्य उपदेशेन मन्त्रान् सम्प्रादु: ,उपदेशाय ग्लायन्तोऽवरे बिल्मग्रहणायेमं ग्रन्थं समाम्नासिषु: वेदं च वेदाङ्गानि च (निरुक्त 1/6) ।

उन्होंने अन्य शिष्यों को जो वेदोपदेश दिया यही उपदेश **वेदप्रवचन** परम्परा कहलाई। यह वैदिक मन्त्र-प्रवचन परम्परा सर्वप्रथम परमपिता परमेश्वर ने प्रारम्भ की , श्वेताश्वतरोपनिषद के अनुसार इस परम्परा को आगे बढाने के लिए परमपिता परमेश्वर ने सर्वप्रथम ब्रह्मा जी को वेदज्ञान धारण कराए हैं।**"यो ब्रह्माणं विदधातिपूर्वम्"**(कृ.य.श्वेताश्वतरोपनिषद) ।ब्रह्मा जी ने अपने मानस पुत्र वशिष्ठ को वशिष्ठ ने शक्ति ,शक्ति ने पाराशर,पाराशर ने अपने पुत्र वेदव्यास और वेदव्यास ने अपने प्रमुख शिष्यों में पैल को ऋग्वेद,वैशम्पायन को यजुर्वेद,जैमिनी को सामवेद, तथा सुमन्तु नामक शिष्य को अथर्ववेद पढाए हैं।

समय समय पर वेदों के प्रवचन परम्परा की विकास के साथ-साथ ह्रास भी हुआ है। वेदों के ह्रास होने का मुख्य कारण आलस्य, प्रमाद ही है, इसी कारण तैत्तरीय उपनिषद शिक्षावल्ली में गुरु द्वारा शिष्य को उपदेश देने के सन्दर्भ में स्वाध्याय एवं प्रवचन में प्रमाद(आलस्य) न करने का कठोर आदेश प्राप्त होता है । **"स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्"** ।

वेदप्रवचन के विशिष्टता के सम्बन्ध में कृष्णयजुर्वेद तैत्तिरीयशाखा के शिक्षावल्ली के अनुसार गुरु

द्वारा शिष्य को बताई गई विद्यारूपी प्रवचन उपदेश विद्यासंधि-संहिता कहलाती है। यह प्रवचनोपदेश ही दोनों को जोडती है। **"आचार्यः पूर्वरूपम्। अन्तेवास्युत्तररूपम्। विद्या सन्धिः। प्रवचनꣳ सन्धानम्। इत्यधिविद्यम्॥ (तै. उ. शिक्षावल्ली)**

आपस्तम्बसूत्र के अनुसार यह वेदप्रवचन मुख्य रूप से दो भागों में उपदेशित हैं-

"मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्"(आपस्तम्बसूत्र)

1. **मन्त्रसंहिता या सूक्तभाग**
2. **ब्राह्मण या आख्यान(कथा)भाग**

उपर्युक्त दोनों भागों में (प्रकृतिरूपा) देवताओं के उत्कृष्टमहिमा गाथागान की गई है। प्रथमभाग में मन्त्रों के सूक्त-स्तुतियों से तथा दूसरे भाग में आख्यान(कथा) के द्वारा की गई है।

"सर्वं खल्विदं ब्रह्म" छान्दोग्य उपनिषद के अनुसार वेदों में ईश्वरतत्त्व को सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र विज्ञान, गणित, योग, आदि अनेको विषयों के रूप में सम्बोधित किया गया है, । प्राचीनकाल से आजतक ईश्वरतत्त्व के इन रहस्यों को सार रूप में जानने की उत्कण्ठा बनी रहती है। छात्रों में मूलमन्त्र कण्ठस्थपाठ ज्ञान के साथ-साथ वेदार्थ ज्ञान एवं वेद-पुराणों में प्रवचन-कथा अभ्यासज्ञान का होना परम आवश्यक है, इस हेतु कौशलविकास मन्त्रालय,भारत सरकार द्वारा पाठ्यक्रम सञ्चालित की जा रही है जिसका नाम **"वेदशास्त्रप्रवचन पाठ्यक्रम"**है। इसके द्वारा वेद कण्ठस्थीकरण में पिछडे हुए छात्रों को मदद मिलेगी।

इस वेदशास्त्रप्रवचन ग्रन्थ के पूर्ण अध्ययन से छात्रों के वेदमौलिक मन्त्रों के अभ्यास के साथ-साथ मन्त्रों का अर्थभाग का भी सम्यक ज्ञान होगा, वैदिककथा-प्रवचन के द्वारा उनके अन्दर अन्तर्मुखी कौशल विकास की प्रवृत्ति जगेगी जिसके द्वारा वेदमन्त्रों के प्रायोगिकपक्ष (कथाभाग) आदि के तरफ छात्रगण उन्मुख हो सकेंगे।

डॉ.जय प्रकाश द्विवेदी

विषय सूची

पाठ इकाई 01 वेदशास्त्र का संक्षिप्त परिचय एवं वर्ण्यविषय

(क) वेद की परिभाषा, ----------

(ख) वेदशब्द का धात्वर्थ विचार,----------

(ग) वेद का महत्त्व,----------

(घ) वेद का प्रयोजन,----------

(ङ) वेदशाखा विचार,----------

(च) वेदों के विषय वर्गीकरण (संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक उपनिषत्) ----------

पाठ इकाई 02 व्याख्यान हेतु भाषायी दक्षता----------

(क) संस्कृत भाषा (सामान्य संस्कृत सम्भाषण वर्ग)----------

(ख) हिन्दी भाषा (भाषा शुद्धीकरण अभ्यास)----------

(ग) शब्दरूप व धातुरूप का सामान्य परिचय----------

(पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग एवं नपुंसकलिङ्ग शब्दरूपों का अभ्यास। भू, पठ्, लिख् एवं गम् धातुओं के सभी लकारों में अभ्यास)

(घ) संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, अव्यय, काल(लकार), लिङ्ग, विभक्ति, वचन, सन्धि, समास, कारक का अतिसंक्षिप्त परिचय।----------

पाठ इकाई 03 वैदिक आख्यान का परिचय एवं प्रवचन कौशल का व्यक्तित्व विकास ------

(क) आख्यान की परिभाषा, महत्त्व एवं प्रयोजन----------

(ख) आख्यान का स्वरूप एवं वर्गीकरण (वैदिक एवं पौराणिक)----------

(ग) प्रवचन हेतु शारीरिक एवं मानसिक सज्जता (वेशभूषा, हाव-भाव)----------

(घ) प्रवचनों में सहायक शब्दावलियाँ----------

(ङ) सर्वशास्त्रों का अतिसंक्षिप्त परिचय ----------

पाठ इकाई 04 शिक्षाप्रद वैदिक आख्यानों का प्राथमिक कथावाचन अभ्यास----------

(क) ऋग्वेदीय -अग्निसूक्त में अग्निदेवता का वर्णन ----------

(ख) नासदीय सूक्त में (सृष्टि उत्पत्ति की कथा) ----------

(ग) यजुर्वेदीय- शिवसंकल्प सूक्त ----------

(घ) वैदिकराष्ट्रसूक्त (आ ब्रह्मन्) ----------

(मन्त्रपठनाभ्यास, भावार्थज्ञान एवं प्रवचनाभ्यास)

पाठ इकाई 05 ब्राह्मणग्रन्थ एवं उपनिषदों में प्राप्त लघु आख्यान----------

(क) ऐतरेय ब्राह्मण में वर्णित-बालक ऐतरेय जन्म की कथा, ----------

(ख) कठोपनिषद् में वर्णित-यक्ष-नचिकेता संवाद ----------

(मन्त्रपठनाभ्यास, भावार्थज्ञान एवं प्रवचनाभ्यास)

पाठ इकाई 06 पौराणिक आख्यानों का आधार परिचय----------

(क) पुराण की परिभाषा, अष्टादश पुराणों के नाम सहित अतिसंक्षिप्त परिचय । ----------

पाठ इकाई 07 श्रीमद्भगवद्गीता ग्रन्थ परिचय एवं गीता माहात्म्य पाठ----------

(क) श्रीमद्भगवद्गीता ग्रन्थ परिचय, महत्त्व, ----------

(ख) गीता माहात्म्य के सप्तश्लोकों का मूलपाठ कण्ठस्थीकरण एवं भावार्थज्ञान,----------

पाठ इकाई 08 पौराणिक ग्रन्थों का परिचय एवं श्लोकों का शुद्ध उच्चारण-पठनाभ्यास----

(क) श्रीमद्भागवत महापुराण ग्रन्थ का अतिसंक्षिप्त परिचय,----------

(ख) श्रीमद्भागवत महापुराण के कथा माहात्म्य----------

(श्लोकों का शुद्ध उच्चारणसहित पाठ,भावार्थज्ञान एवं प्रवचनाभ्यास)

॥ वैदिक प्रार्थना ॥

"वेदशास्त्र-प्रवचन" विषय का अध्ययन प्रारम्भ करने से पूर्व, आइए हम (गुरु-शिष्य) श्रद्धापूर्वक तैत्तिरीयोपनिषत् में पठित शान्तिपाठ को मङ्गलाचार के रूप में प्रार्थना करें-

ओऽम् ।सहनाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै। ओऽम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

भावार्थ- (सहनाववतु) परमात्मा के अनुग्रह से यह ज्ञान जिसे हम अर्जित करने जा रहे हैं, हम दोनों (गुरु और शिष्य) की एक साथ रक्षा करें।

(सह नौ भुनक्तु) हम दोनों इस ज्ञान का अपने-अपने जीवन में पारस्परिक समझदारी से उपयोग अथवा उपभोग करें।

(सह वीर्यं करवावहै) हम एक साथ सम्मिलित रूप से (जीवन के विविध क्षेत्रों में)पराक्रम तथा पुरुषार्थ करें। **(तेजस्विनावधीतमस्तु)** अध्ययन-अध्यापन के माध्यम से हम दोनों का यह ज्ञान तेजस्वी हो।

(मा विद्विषावहै) - हम दोनों कभी एक-दूसरे से द्वेष न करें।

ओम् शान्ति: शान्ति: शान्ति: । (अ, उ, म् = ब्रह्म-विष्णु-महेश, त्रिदेव) हमारे जीवन में त्रिविध ताप को शान्त करें ।

वैदिक प्रवचन कनिष्ठ सहायक की भूमिका का परिचय

१. चारों वेदों की संहिता जिसमें समस्त ज्ञान निहित है जो कि संस्कृतभाषा में उपलब्ध हैं, इसका सरल हिन्दी भाषा में अनुवाद करके " वेदशास्त्र कथा-प्रवचन" पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्रों को ज्ञान प्राप्त कराकर वेदार्थ चिन्तन द्वारा विकास क्षमता को उत्पन्न करना।

२. वैश्विक शान्ति के उपाय एवं वैश्विक संस्कृति-सभ्यता के विकास में वेदशास्त्र-प्रवचन परम्परा का योगदान से छात्रों को परिचित कराना।

३. वैदिक वाङ्मय में (वेद की परिभाषा, धात्वर्थविचार, शाखा विचार, वेदों के आविर्भाव - रचनाकाल, वेदों का स्वरूप, विभाजन, संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषदों) के साथ साथ चतुर्दश(१४)विद्याओं के संक्षिप्त ज्ञान से छात्रों को परिचय कराना।

४. वैदिक साहित्य, इतिहास, एवं वैदिक श्रौत-स्मार्त आदि विषयों के सामान्यतया ज्ञान से छात्रों को अवगत कराना।

५. वेदों में पठित सूक्तों, संवादों, आख्यानों के अर्थ से छात्रों को पूर्णत: परिचित कराना एवं पठित आख्यानों के आधार पर प्रायोगिक रूप में "वेदशास्त्र प्रवचन" करने का अभ्यास छात्रों द्वारा करवाना।

६. वेदशास्त्र प्रवचन में भाषायी दक्षता हेतु संस्कृत सम्भाषण , सामान्य व्याकरण आदि ज्ञान से छात्रों की भाषा समृद्ध करना।

७. वैदिक वाङ्मय में जो आधुनिक ज्ञान है, विशेष रूप से विज्ञान, गणित, खगोलशास्त्र, ऋतुविज्ञान, रसायनविज्ञान, वास्तु, ज्योतिष, आयुर्वेद, तथा आधुनिक तकनीकि आदि ज्ञान से छात्रों को अवगत कराना एवं प्रायोगिक रूप में प्रवचन क्रम में इन विषयों पर लेख तैयार करना, कथा- व्याख्यान प्रस्तुत करना।

८. छात्रों में अष्टादश(१८) पुराणों एवं श्रीमद्भगवद्गीता के विषयों ,कथा महात्म्य -श्लोकों से परिचित कराना,मन्त्र-श्लोक कण्ठस्थ कराना साथ ही प्रवचन -व्याख्यान एवं कौशल विकास की प्रवृत्ति को विकसित करना आदि उद्देश्य हैं।

इकाई 01, वेदशास्त्र का संक्षिप्त परिचय एवं वर्ण्यविषय

(क) वेद की परिभाषा-

- इष्टप्राप्ति-अनिष्टपरिहारयोः अलौकिकम् उपायं यः ग्रन्थः वेदयति स वेदः" (आचार्यसायणः)।
- विन्दन्ति जानन्ति विद्यन्ते भवन्ति विन्ते विचारयन्ति (ऋक्प्रातिशाख्यम्)
- अपौरुषेयं वाक्यं वेदः। (आचार्यसायणः)।
- पुरुषविद्याऽनित्यत्वात् कर्मसम्पत्तिर्मन्त्रो वेदे । (स्वामी दयानन्दसरस्वती)।
- विन्दन्ते लभन्ते सर्वे विद्यन्ते धर्मादयः पुरुषार्था यैः ते वेदाः। (स्वामी दयानन्दसरस्वती)

(ख) वेद परिचय एवं वेद शब्द का धात्वर्थ विचार-

वेद शब्द का अर्थ ही है ज्ञान और इस तरह वेद सकल ज्ञान-विज्ञान की निधि हैं। परा व अपरा दोनों विद्याओं का निरूपण करते हैं यही मनु का उद्घोष है कि सर्वज्ञानमयो हि सः' (सः) वह वेद (सर्वज्ञानमयः) सभी प्रकार के ज्ञान से युक्त हैं। महर्षि दयानन्द ने वेदों को समस्त सत्य विद्याओं का आधार कहा है। हमारा सम्पूर्ण जीवन, सकल क्रियाकलाप वेदों से ओतप्रोत है, कुछ भी वेद से बाहर नहीं है, इनकी उपयोगिता सार्वकालिक सार्वदेशिक सार्वजनीन है। इसलिए इन वेदों के अध्ययन पर बल दिया गया है और भौतिक विज्ञान के इस अत्यन्त समुन्नत युग में भी वेदों का ज्ञान उपयोगी, प्रासंगिक है और इन्हीं वेदों के कारण आज भी हमारी भारतीय संस्कृति संसार में पूजनीय है और भारत देश विश्वगुरु के महनीय पद पर प्रतिष्ठित है। जिस के द्वारा धर्म-अर्थ-काम-मोक्षादि-पुरुषार्थ-चतुष्टय की सिद्धि होती है वही वेद है। "विद् - ज्ञाने' धातु एवं घञ्-प्रत्यय से निष्पन्न यह वेद शब्द ज्ञान राशि, ज्ञान का द्योतक है।व्याकरण के अनुसार शब्दार्थ का निर्णय करें तो वेद शब्द की निष्पत्ति चार धातुओं से निष्पन्न कर सकते हैं। यथा-

- **विद्यते-** विद् सत्तायाम् (दिवादि-गणे) विद्+घञ् प्रत्यय=**सत्ता-उपस्थिति अर्थ में**[वेद की सत्ता नित्य है।] ।
- **वेत्ति-** विद् ज्ञाने (अदादि-गणे) विद्+घञ् प्रत्यय =**ज्ञान अर्थ में**[ब्रह्माण्ड के समस्त ज्ञानभण्डार] ।
- **विन्ते-** विद् विचारणे (रुधादि-गणे) विद्+अच् प्रत्यय=**विचार अर्थ में** [वेद अनुसन्धेय ज्ञानराशि है।] ।

❖ **विन्दति-** विद्लृ लाभे (तुदादि-गणे) विद्लृ+घञ् प्रत्यय=**लाभ अर्थ में** [पुरुषार्थ चतुष्टय का लाभ] ।

वेद के पर्यायवाचीनाम -

(1) श्रुति (2) निगम (3) आगम (4) त्रयी (5) छन्द (6) स्वाध्याय (7) आम्नाय।

(ग) <u>वेदों का महत्त्व-</u>

वेद भारतीय एवं विश्व साहित्य के उपलब्ध सबसे प्राचीन ग्रन्थ हैं, इनसे पहले का कोई भी अन्य ग्रन्थ अब तक प्राप्त नहीं हुआ है। इसीलिए कहा जाता है कि वेद सम्पूर्ण संसार के पुस्तकालयों की पहली पोथी हैं और भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के तो वेद प्राचीनतम एवं सर्वाधिक मूल्यवान् धरोहर हैं, हमारे स्वर्णिम अतीत को अच्छी तरह प्रकाशित करने वाले विमल दर्पण वेद ही हैं।

वेदों का स्वरूप-

वेद अपौरुषेय एवं नित्य है। भारतीय परम्परा के अनुसार वेदों की रचना किसी पुरुष द्वारा नहीं हुई है बल्कि हमारे पूर्वज ऋषियों ने अपनी सतत साधना -तपश्चर्या से इस वेद ज्ञानराशि का साक्षात्कार किया है और प्रत्यक्ष दर्शन करने के कारण इनकी संज्ञा 'ऋषि' है-ऋषिर्दर्शनात् (दर्शनात्) मन्त्रों के साक्षात्कार करने के कारण से इन्हें ऋषि कहते हैं। "ऋषयो मन्त्रद्रष्टारः" (मन्त्रद्रष्टारः) मन्त्रों को देखने वाले (ऋषयः) ऋषिलोग युग के प्रारम्भ में हुए। "साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवुः" (साक्षात्कृतधर्माणः) धर्म-धारकतत्त्व सत्य का साक्षात्कार करने वाले (ऋषयः) ऋषि लोग (बभूवुः) युग के प्रारम्भ में हुए। वेदमन्त्र प्रत्यक्ष किए जाने के कारण वेद प्रतिपादित ज्ञान सर्वथा संदेहरहित, निर्दोष माना जाता है, अतएव वेद प्रामाणिक हैं। इनमें कुछ भी मिथ्या की सम्भावना नहीं है इसीलिए वेदों का स्वतः प्रामाण्य है। अपनी पुष्टि प्रामाणिकता के लिए वेद किसी के आश्रित नहीं हैं। वेदों का सर्वाधिक महत्त्व इसी बात में है कि इनके द्वारा स्थूल-सूक्ष्म निकटस्थ दूरस्थ, अन्तर्हित व्यवहित, साथ ही भूत, वर्तमान, भविष्यत् त्रैकालिक समस्त विषयों का नि:संदिग्ध निश्चयात्मक ज्ञान होता है ,इसीलिए भगवान् मनु ने वेदों को सनातन चक्षु कहा है। यह अनुपम ज्ञाननिधि सुदूर प्राचीन काल से आज तक अपने उसी रूप में सुरक्षित चली आ रही है। इसमें एक भी अक्षर यहाँ तक कि एक मात्रा का भी जोड़ना-घटाना सम्भव नहीं है। आठ प्रकार के विशिष्ट पाठों से यह वेद पूर्णतः सुरक्षित है।

(घ) <u>वेद का प्रयोजन एवं उपयोगिता</u>

भौतिक विज्ञान के इस प्रकर्ष युग में वेद सर्वथा प्रासंगिक हैं। इनका अध्ययन सर्वतोभावेन-सभी प्रकार से उपयोगी है, क्योंकि मानव का सम्पूर्ण जीवन वेदों से ओतप्रोत है। मनुष्य का मुख्य प्रयोजन है सुख की प्राप्ति और इसकी सिद्धि में वेद सर्वथा उपकारक हैं। वेदों के सुप्रसिद्ध व्याख्याकार आचार्य सायण का कथन है कि इष्ट की प्राप्ति तथ अनिष्ट के परिहार के उपाय वेदों में ही मिलते हैं। इस तरह लौकिक अभ्युदय तथा निःश्रेयस दोनों प्रयोजनों की सिद्धि वेदों से होती है। वास्तव में वेद एक सुव्यवस्थित समन्वित जीवन परियोजना को प्रस्तुत करते हैं। केवल वर्तमान जीवन को सुखी बनाना ही उद्देश्य नहीं है, अपितु भावी जीवन को और अधिक सुखमय बनाना है, अमृतत्व की प्राप्ति करना है और वेद तो अमृतत्वसिद्धि के संविधान भण्डार हैं। मृत्यु के भय से छुटकारा दिलाकर वेद ही हमें अमरता का बोध कराते हैं।

अमृतस्यपुत्रा वयम् - हम सभी अमृतपुत्र हैं। इस प्रकार वेद परमसुखमयी आह्लादमयी जीवन दृष्टि प्रस्तुत करता है- **इहैव स्तं मा वि यौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम् । क्रीळन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वे गृहे ॥** (ऋग्वेद 10.85.42) विवाह के पवित्र मांगलिक अवसर पर नव दम्पती को प्रदान किया गया यह शुभआशीर्वचन है। यह संसार सुखमय है। सुख प्राप्ति के लिए इसे छोड़ कर कहीं अन्यत्र जाने की आवश्यकता नहीं है। सभी प्रकार का वास्तविक सच्चा सुख यहीं पर है। हे यजमानदम्पति! तुम दोनों (इह-एव) यहीं पर (स्तम्) रहो। (मा) नहीं (वियौष्टं) वियुक्त अलग होवो। (विश्वम् आयुः) सम्पूर्ण आयु 100 वर्ष की (वि अश्नुतम्) प्राप्त करो। (पुत्रैः) पुत्रों के साथ (नृनृभिः) पौत्रों के साथ (क्रीडन्तौ) खेलते हुए (मोदमानौ) प्रमुदित होते हुए (स्वे गृहे) अपने घर में (स्तम्) रहो। रुग्ण दुःखी-दीन होकर नहीं अपितु बलवान् बलिष्ठ अंगों से बराबर कार्य करते हुए 100 वर्ष तक जीवित रहने की कामना की गई है। **जीवेम शरदः शतम्** (शरदः शतम्) सौ वर्ष तक (जीवेम) हम जीवित रहें।

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः । भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिः। व्यशेम देवहितँय्यदायुः ।। (तै. आ. १)

(देवा:) हे देवगण (कर्णेभिः) कानों से (भद्रं) मंगल-शुभ (शृणुयाम) हम सुने। (यजत्राः) हे यजनीय-पूजनीय देवगण (अक्षिभिः) आँखों से (भद्र) मंगलशुभ (पश्येम) हम देखें। (स्थिरैः अंगै तनूभिः।) बलिष्ठ अंगो से युक्त शरीरों से (तुष्टुवांसः) प्रार्थना करते हुए (देहहितं) देवनिहित-निर्धारित (यद् आयुः) जो (100 वर्ष की) आयु है (वि-अशेम) हम अच्छी तरह प्राप्त करें अर्थात् इस अवधि में रोगी न

होवें, बराबर निरोगी रहें। ऋषि कामना करता है कि "कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः" (इह) इस लोक संसार में (कर्माणि) (निर्धारित) कार्यों को (कुर्वन् एव) करते हुए-सम्पन्न करते हुए (शतं समाः) सौ वर्ष तक (जिजीविषेत् -जीवित रहने की इच्छा करनी चाहिए और केवल 100 वर्ष तक ही नहीं, अपितु इससे भी अधिक जीवित रहने की बात कही गई है - भूयश्च शरदः शतात् (शतात् शरदः भूयः) और सौ वर्ष से अधिक जीवित रहें।

हमारे वैदिक ऋषि ने तो विश्वायु विश्वधात्री विश्वकर्मा, जबतक चाहे तब तक जीवित रहने की, सब कुछ धारणा करने की और सब कुछ करने की बात कही है। वास्तव में मानव-शरीर कर्मभूमि है और कर्म ही जीवन है तथा सिद्धिः कर्मजा-विजयश्री की प्राप्ति कर्म से होती है, इसलिए कर्म करने पर बल दिया गया है तथा कार्य को कभी भविष्य के लिए नहीं टालना चाहिए क्योंकि मनुष्य के कल की बात को कौन जानता है।

न श्वः श्वमुपासीत। को हि मनुष्यस्य श्वो वेद। ऋषि अथर्वन् का बहुत ही प्रेरणास्पद कथन है कि हमारा यह शरीर ही देवपुरी अयोध्या है, इसमें सभी देवता निवास करते हैं, यह अपराजेय ज्योतिर्मय है। इस पुरी में स्थित आत्मा ही परमदेव, परमात्मा है। जो इस पुरी का राजा है -

अष्टाचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या (अथर्ववेद-१०/२/३१)

(अष्टचक्रा) आठ चक्रों (नवद्वारा) नव द्वारों वाला हमारा यह शरीर ही (देवानां) देवताओं की (पूः) पुरी (अयोध्या) अयोध्या-अपराजेय है। अतः यह शरीर सर्वतोभावेन रक्षणीय है, इसको स्वस्थ एवं स्वच्छ बनाए रखना है।

मानवशरीर की ब्रह्माण्ड, यज्ञशाला, ऋषि आश्रम, तीर्थ एवं स्वराज्य रूप में अवधारणा वेदों के सुप्रख्यात व्याख्याकार पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर ने अपनी व्याख्या में मानवशरीर को ही विशेष महत्त्व प्रदान किया है। सकल ब्रह्माण्ड अंश रूप में इस शरीर में विद्यमान है। **"यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे"** इसलिए जो कुछ ब्रह्माण्ड में है, वह इस शरीर में भी है। हमारा शरीर ही यज्ञशाला है। शरीर के भीतर होने वाली समस्त क्रियाएँ यज्ञीय क्रिया कलापों के समान हैं। मानव शरीर ही ऋषियों का आश्रम एवं तीर्थ स्थल है। इस प्रकार से उन्होंने शरीर की पावनता पर बल दिया है। भावों, विचारों तथा ज्ञान से अपने इस शरीर की पवित्रता को बनाए रखना है।

सप्तऽऋषयःप्रतिहिताःशरीरे सप्तरक्षन्ति सदमप्रमादम् ॥ (यजुर्वेद 34.55)

(शरीरे) मानव शरीर में (सप्त ऋषयः) सप्त ऋषि (प्रतिहिता) स्थापित विद्यमान हैं। (सप्त) सातों ऋषि (सदम्) शरीर रूपी घर की (अप्रमादम्) बिना प्रमाद के सावधानीपूर्वक (रक्षन्ति) रक्षा करते हैं।

पं. सातवलेकर ने मानव शरीर को अपना स्वराज्य बतलाया है। यह शरीर ही रत्नादि से परिपूरित अपराजेय देव पुरी अयोध्या है और स्वकीय आत्मा ही इस स्वराज्य का राजा है। शरीर रूपी यह स्वराज्य सभी को सहज ही स्वाभाविक रूप से प्राप्त है। धनी हो अथवा निर्धनी, सभी व्यक्ति का अपना स्वराज्य है और आत्मा रूपी राजा का शासन इस पर चलना चाहिए। इस प्रकार मनुष्य को अपने शरीर के महत्त्व का बोध कराया गया है।

वेदों में पारिवारिक/सामाजिक जीवन दृष्टि- मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, वह एकाकी, अकेले नहीं, अपितु परिवार में, समाज में रहता है और सुखमय जीवनयापन करना मनुष्य की सहज स्वभाविक अभिलाषा होती है। एतदर्थ वेदों में पारिवारिक एवं सामाजिक व्यवस्था का बहुत ही सुन्दर चित्रण किया गया है। सुख समृद्धि की प्राप्ति हेतु ही ऋषियों ने 4 प्रत्यक्ष देवों को प्रस्तुत किया है। देव का अभिप्राय(अर्थ) ही **देना** है, जिनसे हमें वांछित फल की प्राप्ति होती है। निरुक्त के अनुसार "देवो दानात्" (दानात्) दान, इच्छित फल प्रदान करने के कारण ही (देवः) देव (कहलाते हैं)। तैत्तिरीयोपनिषद् शिक्षावल्ली के अनुसार प्रत्यक्ष देवता 4 हैं -

1. माता
2. पिता
3. आचार्य
4. अतिथि

मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव, अतिथिदेवो भव, तैत्तिरीयोपनिषद् शिक्षावल्ली में विद्याध्ययन की सम्पूर्ति पर गुरुकुल से घर जाने वाले छात्रों को दिया गया यह उपदेश सभी मनुष्यों को इन प्रत्यक्ष देवों की सेवा सुश्रूषा के लिए प्रेरित कर रहा है। पारिवारिक-सामाजिक बन्धन को सुदृढ़ एवं प्रगाढ़ कर रहा है। इनकी सेवा करने से निश्चित रूप से अभीष्ट की सिद्धि होती है।

सच्चा सुख तो वास्तव में परिवार में है, अकेले रहने में कोई सुख नहीं है। अतः ऋग्वेद नासदीयसूक्त के अनुसार भगवती वेद श्रुति कहती है कि प्रारम्भ में वह परमात्मा अकेला था, उसे कुछ अच्छा नहीं लगा- **एकाकी स न रेमे** तत्पश्चात् उन्होंने पुनः संकल्प किया कि मैं अकेला हूँ, बहुत हो

जाऊँ, प्रजाओं की सृष्टि करू **एकोऽहं बहु स्याम, प्रजायेय** इस तरह उस एक परमात्मा ने आत्मरमणार्थ, क्रीडा के लिए नामरूपात्मिका इस सृष्टि की रचना की। सृष्टि की रचना करके वह परमात्मा इसमें प्रवेश कर गया, इसलिए सच्चिदानन्द परमात्मा से उद्भूत यह सृष्टि आनन्द बहुला है - **तत्सृष्ट्वा तदेवानुप्राविशत्** (वह परमात्मा) (तत् सृष्ट्वा) उस जगत् की रचना करके (तद् एव अनु प्र-अविशत्) उसी में प्रवेश कर गया। छान्दोग्योपनिषद् के अनुसार (सर्वं खल्विदं) ब्रह्म, (इदं सर्वं) यह सब कुछ (खलु) निश्चित रूप से (ब्रह्म) ब्रह्म है। इसका यही अभिप्राय है कि सच्चा सुख जो प्रत्येक मनुष्य को अभीष्ट है, गृहस्थ जीवन में है और वेद गृहस्थ जीवन का बहुत ही रमणीय वर्णन प्रस्तुत करते हैं-

कुटुम्ब के सभी सदस्यों में परस्पर सौहार्द सौमनस्य सहयोग का भाव हो, प्रेमपूर्वक मधुर वाणी बोलते हुए मिलजुल कर एक साथ रहने की, एक साथ चलने की, मिल कर कार्य करने की बात वेदों में कही गयी है। सभी का खाना-पीना एक साथ हो, आपस में द्वेष-अलगाव की भावना न हो और इसप्रकार अभीष्ट लक्ष्य को सिद्ध करने के लिए प्रेरित किया गया है। माता-पिता, पत्नी, भाई-बहनों को परस्पर व्यवहार की विधि-रीति वेदों से प्राप्त होती है -

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः।

जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शन्तिवाम्।। (अथर्ववेद 3.30.2)

(पुत्रः) पुत्र (पितुः) पिता के (अनुव्रतः) अनुकूल आचरण वाला (भवतु) हो। (मात्रा) माता (संमनाः) सभी सन्तानों के प्रति समान मन-स्नेह वाली (भवतु) हो (जाया) पत्नी (पत्ये) पति के प्रति (मधुमतीं) मधुर-मीठी (शन्तिवाम्) शान्ति सुख प्रदान करने वाली (वाचं) वाणी (वदतु) बोले।

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा । (अथर्व. 3.30.3)

(भ्राता) एक भाई (भ्रातारं) दूसरे भाई से (मा द्विक्षत्) द्वेष न करे। (उत) और (स्वसा) एक बहन (स्वसारम्) दूसरी बहन से (द्वेष न करें) यहाँ पर वेद पारिवारिक सुख-शान्ति और समृद्धि के लिए एक सदव्यवहार की प्रेरणा दे रहा है। यह सर्वथा सार्थक है। पुत्र के लिए आवश्यक है कि वह अपने पिता के विचारों को जान कर तदनुसार कार्य करें, वह आज्ञाकारी हो। माता ममता स्नेह की मूर्ति होती है, उसकी गोद को पहली पाठशाला कहा गया है। सभी सन्तानों के प्रति उसका स्नेह वात्सल्य होना चाहिए। वेद में पत्नी को ही घर कहा है।

जायेदस्तम् (जाया) पत्नी (इत्) ही (अस्तम्) घर है। अर्थात् घर की समृद्धि में जाया का विशेष उत्तरदायित्व है। गृहस्वामी पति की वह अपनी प्रिय मधुर वाणी से थकावट दूर करें। इसी प्रकार भाई-बहन सभी आपस में मिल-जुल कर रहें और अपने निर्धारित कर्त्तव्यों का पालन करते हुए परिवार को सुखी बनाएँ। इस प्रकार सामाजिक एकता समरसता सह अस्तित्व का वेद मार्गदर्शक है।

समानी प्रपा सह वोऽन्नभागः। (अथर्ववेद 3.30.6)

(हे मनुष्यों) (वः) आप सभी की (प्रपा) पानीयशाला (समानी) समान एक हो (अन्नभागः) अन्न का भाग वितरण समान हो। अकेले ही सम्पूर्ण अन्नभाग को ग्रहण नहीं करें।

केवलाघो भवति केवलादी। (ऋग्वेद 10.117.6)

(केवल-आदी) केवल अकेला खाने वाला (केवल अघः भवति) केवल पाप को भोगने वाला होता है।

पुमान्न्पुमा७सम्परिपातुविश्वतः। (शु.य.मा.२९/५१) (पुमान्) एक मनुष्य (पुमांसं) दूसरे मनुष्य की (विश्वतः) सभी तरफ से (परिपातु) रक्षा करे। इस प्रकार वेद सभी मनुष्यों के सह अस्तित्व, सहचारित्र पर बल देता है। सभी सुखी-समृद्ध रहें। अथर्ववेद के मन्त्र में यही कामना की गई है।

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ।। (अथर्ववेद ६/६४/३)

हे मनुष्यों (वः) आप सभी के (आकूतिः) विचार संकल्प (समानी) समान हों। (वः) आप सभी के (हृदयानि) हृदय (समाना) समान होवें (वः) आप सभी के (मनः) मनन-चिन्तन (समानम् अस्तु) समान होवें। (यथा) जिससे (वः) आप सभी का हो। सह अस्तित्व के लिए चिन्तन-मनन, भावना सबमें समानता-एकरूपता आवश्यक है।

वेदों में प्रेम की राष्ट्रीय चेतना- देशप्रेम राष्ट्रीयता की उदात्त शिक्षा वेद प्रदान करता है। मनुष्यों में राष्ट्रीय चेतना जागृत करने वाले अनेक मन्त्र हैं – **माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः** । (अथर्ववेद 12.1.12)

(भूमिः) भूमि हमारी माता है। (अहं) मैं (पृथिव्याः) पृथिवी का पुत्र हूँ। **नमो मात्रे पृथिव्यै। (यजुर्वेद** 9.22) (मात्रे पृथिव्यै) माता पृथिवी को (नमः) नमस्कार है। वेदों के इन वचनों से मातृभूमि के प्रति आत्मीय भावना होती है और इस पर रहने वाले हम सभी बहन-भाई हैं। अतः हम सभी को परस्पर मेल-मिलाप से रहना चाहिए। परस्पर एक दूसरे के हित का ध्यान रखना चाहिए।

विश्वबन्धुत्व की भावना- विश्वमानुष, बन्धुत्व, भाईचारा का उदात्त पाठ हमें वेद सिखाता है। **"यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्"** (यत्र) जहाँ पर (विश्वं) सम्पूर्ण संसार (एकनीडम्) एक घोसला,घर (भवति) हो जाता है। **"ईशावास्यमिदं सर्वम्"** (इदं सर्वम्) यह सब कुछ (ईशावास्यम्) ईश्वर परमात्मा से परिव्याप्त है। पुरुष एवेदं सर्वम् (इदं सर्वम्) यह सब कुछ (पुरुषःएव) परमपुरुष परमात्मा ही है।

"सर्वं खल्विदं ब्रह्म" (इदं सर्वम्) यह सम्पूर्ण जगत् (खलु) निश्चित रूप से ब्रह्म ही है इत्यादि रूप से सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है। **वसुधैव कुटुम्बकम्** जैसी उदात्त भावना जागृत करने में वेदों का ही योगदान है और इसी का फल है सर्वकल्याण समष्टि का हित "सर्वे भवन्तु सुखिनः" - सभी सुखी हों। संकुचित क्षुद्र स्वार्थ भावना से ऊपर उठकर सर्वहित प्रेरणा वेदों से मिलती है। वेद सर्वहित सम्पादक महौषधि हैं।

इस तरह वेद समस्त मानवता को एक सूत्र में संग्रथित करते हैं और सकल विश्व के लिए वेदों का यह अनुपम योगदान है।

वेदों में पर्यावरण चेतना- हमारे वैदिक ऋषि मनीषी पर्यावरण रक्षण के प्रति बहुत ही जागरूक सावधान रहे हैं। "पर्यावरण रक्षण" का अभिप्राय है स्वयं की रक्षा। अतः स्वकीय रक्षा हेतु यह पर्यावरण रक्षणीय है, इसी दृष्टि से उन्होंने प्रकृति की दैवतभाव से उपासना की। सहज रूप से कल्याणकारिणी वरदायिनी यह प्रकृति पूजा के योग्य है, इसको नियन्त्रित, वश में नहीं करना है, इसके सन्तुलन को बाधित नहीं करना है। उपासना से यह इच्छित फल प्रदान करने वाली है। एक ही परम तत्त्व सर्वत्र ओतप्रोत है– "सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च" (जगतः) जंगम-गमनशील चेतन (च) और (तस्थुषः) स्थावर अचेतन की (आत्मा सूर्यः) आत्मा सूर्य है अर्थात् सूर्यरूपी परमात्मा सभी चेतन और अचेतन पदार्थों में परिव्याप्त है, उससे बाहर कुछ भी नहीं है। सब कुछ परमात्मस्वरूप होने से केवल मनुष्यों की नहीं, अपितु पशु-पक्षियों, लता-वनस्पतियों सभी की रक्षा हो जाती है और एक सुखमय आह्लादमय रहने योग्य संसार बन जाता है। ऋषियों ने इसी दृष्टि से नदी, अश्मा, वनस्पतियों की भी दैवतभाव से प्रार्थना की है। भौतिक प्राकृतिक पर्यावरण रक्षण के साथ ही ऋषियों ने आन्तरिक पर्यावरण स्वच्छता पर, उदात्त जीवन मूल्यों के रक्षण पर बल दिया है और इस तरह वर्तमान में पर्यावरण प्रदूषण की विश्वव्यापी गम्भीर विषम समस्या का समाधान वेदों से प्राप्त हो जाता है -

'**अग्निमीळे पुरोहितम्' (ऋग्वेद** 1.1.1)

(पुरोहितम् अग्निम्) पुरोहित अग्नि की (ईळे) में प्रार्थना करता हूँ। वैदिक ऋषि की दृष्टि में यह अग्नि केवल पाचक दाहक प्रकाशक ही नहीं, अपितु यह सर्वज्ञ सर्वान्तर्यामी अग्रगामी नेतृत्व करने वाला सर्वाधिक रमणीय धनों को देने वाला है। अतः जातवेदस् वैश्वानर पुरोहित देव इत्यादि रूप में यह अग्नि प्रार्थनीय है।इस प्रकार से वेद की विशिष्टता की बात अनेकों मन्त्रों में प्राप्त होती है।

(ङ) <u>वेदशाखा विचार</u>

व्याकरण महाभाष्य में भगवान् पतञ्जलि ने ऋग्वेद की 21, यजुर्वेद की 101, सामवेद की 1000 तथा अथर्ववेद की 9 शाखाओं का उल्लेख किया है, इनके द्वारा उल्लिखित सभी 1131 शाखाएँ आज उपलब्ध नहीं हैं। वर्तमान में उपलब्ध प्रमुख शाखाएँ निम्नलिखित हैं।

(च) <u>वेदों के विषय वर्गीकरण (संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक उपनिषत्)</u>

वास्तव में सम्पूर्ण ज्ञानराशि को ही वेद कहते हैं। यह ज्ञाननिधि अतीव समृद्ध तथा विशाल है। इसलिए अध्ययन की सुविधा तथा कई अन्य दृष्टियों से इसका वर्गीकरण किया गया। भगवान् वेदव्यास ने इस एक ज्ञाननिधि का चार भागों में विभाजन करके अपने चार शिष्यों को पढ़ाया -

१. ऋग्वेद – पैल

२. यजुर्वेद - वैशम्पायन

३. सामवेद - जैमिनि

४. अथर्ववेद = सुमन्तु

इस तरह एक ही वेद ज्ञानसमूह को अध्ययन-अध्यापन की दृष्टि से विषय विभाग से चार भागों में विभक्त हो गया और इसी विभाजन के कारण वेदव्यास - वेदों को विभक्त किया) वादरायण का नाम वेदव्यास पड़ गया। पुनः इनके पैलादि शिष्यों ने परम्परा को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए वेदव्यास अपने शिष्यों को उन-उन ऋग्वेदादि को पढ़ाया और इस प्रकार गुरु-शिष्य-परम्परा से एक ही वेद = ज्ञाननिधि असंख्य शाखा प्रशाखाओं में विभक्त हो गया। यज्ञ की दृष्टि से भी वेदों का विभाजन किया गया है। यज्ञ में मुख्यतः 4 पुरोहित या ऋत्विक होते हैं -

1. होता 2. अध्वर्यु 3. उद्गाता 4. ब्रह्मा

होता नामक ऋत्विक् यज्ञ में हव्यग्रहण करने के लिए इन्द्र-विष्णु-वरुणादि देवताओं को बुलाता है **"देवानाम् अह्वाता इति होता"**, एतदर्थ देवताओं का आवाहन मन्त्र ऋग्वेद में हैं। उद्गाता नामक

ऋत्विक ऊँचे स्वरों के साथ मधुर गीति द्वारा देवों की प्रशंसा करता है**"उच्चैस्वरैःय:गायति स उद्गाता"** । गेयमन्त्र सामवेद में हैं। अध्वर्युनामक ऋत्विक् यज्ञ सम्बन्धी विविध क्रियाकलापों को करता है यथा यज्ञवेदी का निर्माण, हवनसामग्री संकलनादि, **"अध्वरस्य -यज्ञस्य नेता इति अध्वर्यु:"** इन कार्यों अनुष्ठानों का निरूपण यजुर्वेद में किया गया है। चतुर्थ ऋत्विक् ब्रह्मा यज्ञ का अधिष्ठाता होता है, अपने निरीक्षण एवं निर्देशन में वह यज्ञ को सम्पन्न कराता है। यह ऋक्-यजुस्-साम सभी वेदों का ज्ञाता होता है,**"सर्वं जानाति इति ब्रह्मा"** यद्यपि इसका अपना स्वतन्त्र अथर्ववेद है। विशेष रूप से इन पद्य,गद्य,गेय को क्रमश: ऋक् यजुस् साम के मन्त्रों का विनियोग यज्ञ में होता है और वेदत्रयी रूप में इन्हीं की प्रसिद्धि है। उत्तरकाल में अथर्ववेद को यज्ञ को प्रधान ऋत्विक् ब्रह्मा के साथ जोड़ दिया गया इसीलिए अथर्ववेद ब्रह्मवेद के नाम से प्रसिद्ध है।

आचार्य आपस्तम्ब ने मन्त्र तथा ब्राह्मण दोनों भागों के सम्मिलित रूप को वेद संज्ञा से सम्बोधित किया है **(मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्)** । इस दृष्टि से वेद के दो प्रमुख भाग हैं –

वेद के दो प्रमुख भाग - (1) **मन्त्र भाग** (2) **ब्राह्मण भाग**

इनमें भी में मन्त्र भाग मूल है और इसी की व्याख्या ब्राह्मण भाग अपने मूल मन्त्र भाग की व्याख्या प्रस्तुत करते हैं। यह व्याख्या भी तीन दृष्टियों से की गई है -

ब्राह्मण भाग के विषयपरक तीन उपविभाग हैं - 1. ब्राह्मण 2. आरण्यक 3. उपनिषद्

इस प्रकार ब्राह्मणग्रन्थ -कर्मकाण्डपरक, आरण्यक -उपासनापरक, एवं उपनिषद् – ज्ञानपरक है ।

वेद के चार मुख्य विषयविभाग -१.मन्त्र ,२. ब्राह्मण ३. आरण्यक ४. उपनिषद्

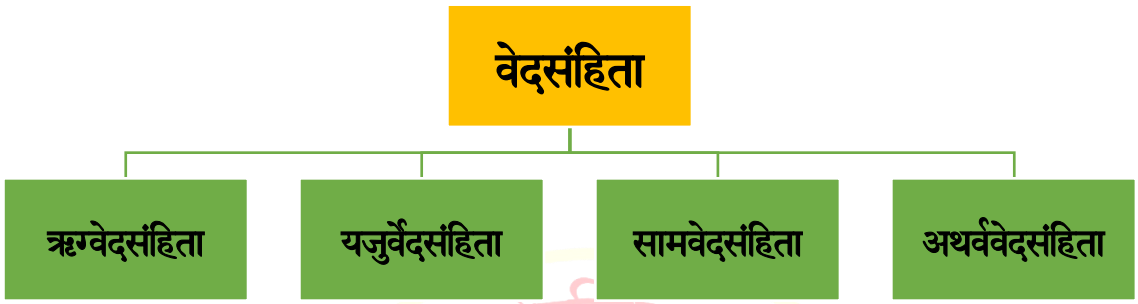
वेद के चार मुख्य विषयविभाग के रूप में हम इस प्रकार समझते हैं। जिसमें मन्त्र भाग को संहिता कहते हैं और ये मुख्य रूप से चार वेद के चार संहिताएँ हैं -

1. ऋक् संहिता, 2. यजुर्वेद संहिता, 3. सामवेद संहिता, 4. अथर्ववेद संहिता

वस्तुतः मन्त्र भाग की ही व्याख्या ब्राह्मण भाग हैं, इसमें मन्त्र भाग में संहिताएँ हैं उतने ही व्याख्यानात्मक ब्राह्मण भाग भी हैं।

वेदों के उपवेद- ऋग्वेद का उपवेद वैद्यविद्या बोधक 'आयुर्वेद', यजुर्वेद का उपवेद शास्त्रविद्या विषयक 'धनुर्वेदः', सामवेद का उपवेद गानविद्या अवबोधक ' गान्धर्ववेदः' एवं अथर्ववेद का उपवेद शिल्पविद्या अवबोधक 'स्थापत्य वेद ' है।

इसके अतिरिक्त प्रत्येक वेदविभाग के आचार्य, देवता, ऋत्विज , उपवेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषदादि विषय एवं कल्पवेदाङ्गविभाग के श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र तथा शुल्वसूत्र तथा प्रातिशाख्यादिग्रन्थ भी अलग अलग होते हैं। संक्षिप्त रूप में समझने के लिए चार्ट प्रस्तुत किया जा रहा है।



वेद	प्रथम अचार्य	देवता	ऋत्विज	उपवेद
ऋग्वेद	पैल	अग्नि	होता	आयुर्वेद
यजुर्वेद	वैशम्पायन	वायु	अध्वर्युः	धनुर्वेद
सामवेद	जैमिनि	आदित्य	उद्गाता	गान्धर्वेद
अथर्ववेद	सुमन्तु	सोम	ब्रह्मा	स्थापत्यदिवेद

वेद	शाखा	ब्राह्मण	आरण्यक	उपनिषद्	शिक्षाग्रन्थ
ऋग्वेद	आश्वालयन शाङ्खायन माण्डूकायन शाकल बाष्कल	ऐतरेय कौशीतकि/ शाङ्खायन	ऐतरेय कौशीतकि/ शाङ्खायन	ऐतरेय कौशीतकि/ शाङ्खायन बाष्कल	पाणिनीयशिक्षा स्वराङ्कुशा षोडशश्लोकी शैशिरीय आपिशलिशिक्षा
यजुर्वेद	माध्यन्दिनी वाजसनेयी	शतपथब्राह्मण	बृहदारण्यक	ईशावास्य बृहदराण्यक	याज्ञवल्क्यशिक्षा वासिष्ठी शिक्षा

कृष्णयजुर्वेद	तैत्तिरीय मैत्रायणी कठ कपिष्ठल	तैत्तिरीय मैत्रायणी कठब्राह्मण कपिष्ठलब्राह्मण	तैत्तिरीय मैत्रायणी	तैत्तिरीय मैत्रायणी श्वेताश्वतर कठोपनिषद्	
सामवेद	कौथुमी राणायणीय जैमिनीय	प्रौढ, वंश,षड्विंश आर्षेय, छान्दोग्य सामविधानम् देवताध्याय जैमिनीय, संहितोपनिषद्	तवल्कार जैमिनीय छान्दोग्य	छान्दोग्योपनिषद् केनोपनिषद्	नारदीयशिक्षा गौतमीशिक्षा लोमशीशिक्षा
अथर्ववेद	शौनक पैप्पलाद्	गोपथब्राह्मण	उपलब्ध नहीं	प्रश्नोपनिषद् मुण्डकोपनिषद् माण्डूक्योपनिषद्	माण्डूकी शिक्षा

वेद	**श्रौतसूत्र**	**गृह्यसूत्र**	**धर्मसूत्र**	**शुल्वसूत्र**
ऋग्वेद	शाङ्खायन आश्वलायन	आश्वलायन शाङ्खायन (कौषितकि)	वासिष्ठ	नहीं है।
शुक्लयजुर्वेद	कात्यायन	पारस्कर	विष्णु	कात्यायन
कृष्णयजुर्वेद	बौधायन भारद्वाज बाधुल	बौधायन भारद्वाज मानव	बौधायन वैखानस आपस्तम्ब	बौधायन आपस्तम्ब बाधूल

	मानव आपस्तम्ब काठक सत्याषाढ वैखानस वाराह	आपस्तम्ब काठक अग्निवेश्य हिरण्यकेशीय वैखानस वाराह		
सामवेदः	लाट्यायन द्राह्यायण आर्षेयकल्प/मशक जैमिनीय	गोभिल खादिर द्राह्यायण जैमिनीय कौथुम	गौतमधर्मसूत्र	नहीं है
अथर्ववेद	वैतानश्रौतसूत्र	कौशिकगृह्यसूत्र	नहीं है	नहीं है

इकाई 02: व्याख्यान हेतु भाषायी दक्षता

(क) संस्कृत भाषा (सामान्य संस्कृत सम्भाषण वर्ग)

भाषा की परिभाषा

भाषा शब्द संस्कृत के 'भाष' धातु से बना है। जिसका अर्थ है-बोलना या अपने भावों को प्रकाशित करना, " **भाषते-प्रकाशते इति भाषा** "।

परिभाषा - जिस शब्द-ध्वनि के माध्यम से हम अपने भाव-विचारों को प्रकट कर पाते हैं अथवा मन के भावों को दूसरो के साथ प्रकाशित कर पाते हैं उसे भाषा कहते हैं।

व्युत्पत्ति-"यया भाषया स्वविचारान् बोधयति प्रकाशयति इति भाषा"

(ख) भाषा के प्रकार

मुख्य रूप से भाषा के तीन भेद होते हैं । लिखित, मौखिक एवं सांकेतिक

① **लिखित भाषा** - इसके द्वारा हम अपने भाव विचारों को दूसरे तक वर्ण -अक्षर के द्वारा वाक्यरूप में लिखकर पहुंचाते हैं।

② **मौखिक भाषा** - इसके माध्यम से हम ध्वन्यात्मक वर्णाक्षरों के द्वारा अपने विचारों को प्रकट कर पाते हैं।

③ **सांकेतिक भाषा** - यह भाषा एक मर्यादित भाव- विचारों को ही प्रकाशित कर पाता है, यह सांकेतिकभाषा लिखित -मौखिक भाषा प्रयोग में सहायता प्रदान करता है। इन तीनों भाषाओं में उपर्युक्त लिखित एवं मौखिक भाषा लोकव्यवहार एवं कार्यालयीय स्थानों में ज्यादातर प्रयोग किए जाते हैं ।

भाषा की उत्पत्ति-अवतरण

भाषा की उत्पत्ति के विषय में कृष्णयजुर्वेद का यह मन्त्र सांकेतिक रूप में वाक्देवी (वाणी की देवी के लिए) निर्दिष्ट कर रहा है। इस प्रकार मन्त्रार्थ पर विचार करें।

ॐ देवीं वाचमजनयन्त देवाः । तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति ।

सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना । धेनुर्वागस्मानुपसुष्टुतैतु॥

देवी जो स्वयं प्रकाशवान है यह (परा, पश्यन्ति, मध्यमा, वैखरी) इन वाक् रूपों में मध्यमा रूप में उत्पन्न है। यह देवी देवताओं के द्वारा प्रकट हुई है। वह देवी मन्द्र (मदन) के द्वारा स्तुत्य है तथा वह सभी प्राणियों को प्रसन्न रखने वाली है। वह देवी सुवृष्टि प्रदान करके धन-धान्य से परिपूर्ण करती है । वह धेनु रूप में घृत - दुग्ध का क्षरण प्रदान करती है । यह हमारे द्वारा स्तुत्य है। अतः यह देवी हमें प्राप्त हो जाए। इस मन्त्र में वाक् (भाषा) की देवी की उत्पत्ति के विषय में प्रमाण मिलता है ।

भाषा का महत्त्व

"हम सब जानते हैं कि कोई भी मनुष्य ज्ञान से परिपूर्ण होने के बाद यदि वह अपने अन्तर्ज्ञान को दूसरे तक नहीं पहुंचा पाता है तो उसका सम्पूर्ण ज्ञान निरर्थक माना जाता है। ऐसे लोग स्वयं तो सम्पूर्ण ज्ञान जानते हैं परन्तु अपना ज्ञान अनुभव दूसरे को नहीं दे पाता हैं , अत: एक तरह से मानो वह ज्ञानभार को अकेला ही ढो रहा है।

अतः हमे अपने ज्ञान - अनुभव को दूसरे तक पहुंचाने के लिए भाषाज्ञान का होना परम आपेक्षित है । भाषा को समृद्ध करने हेतु व्याकरण ज्ञान होना परम अवश्यक है। साथ ही शब्दबोध का ज्ञान होना नितान्त जरुरी है।

भाषा का इतिहास

भाषा के इतिहास के विषय में वेदमन्त्रों में अनेक प्रमाण मिलते हैं इसमें भाषा -वाक्देवी की उत्पत्ति पूर्वक अनेको प्रकार से स्तुति की गई है। वाणी को चार (परा, पश्यन्ति, मध्यमा, वैखरी) रूपों में प्रार्थना की गई है। इस सन्दर्भ में बृष्णयजुर्वेद तैत्तिरीय ब्राह्मण ग्रन्थ के देवीसूक्त का पठन किया जा रहा है।

ॐ देवीं वाचमजनयन्त देवाः । तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति । सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना । धेनुर्वागस्मानुपसुष्टुतैतु॥ यद्वाग्वदन्त्यविचेतनानी । राष्ट्री देवानां निषसाद मन्द्रा । चतस्र ऊर्जं दुदुहे पयाꣳसि । क्व स्विदस्याः परमं जगाम ॥ अनन्तामन्तादधिनिर्मितां महीम्। यस्यां देवा अदधुर्भोजनानि। एकाक्षरां द्विपदाꣳ षट्पदां च। वाचं देवा उपजीवन्ति विश्वे॥ वाचं देवा

उपजीवन्ति विश्वे। वाचं गन्धर्वाः पशवो मनुष्याः। वाचीमा विश्वा भुवनान्यर्पिता सा नो हवं जुषतामिन्द्रपत्नी॥ वागक्षरं प्रथमजा ऋतस्य। वेदानां माताऽमृतस्य नाभिः। सा नो जुषाणोपयज्ञमागात्। अवन्ती देवी सुहवा मे अस्तु॥ यामृषयो मन्त्रकृतो मनीषिणः। अन्वैच्छन्देवास्तपसा श्रमेण। तां देवीं वाचꣳ हविषा यजामहे। सा नो दधातु सुकृतस्य लोके॥ चत्वारि वाक्परिमिता पदानि । तानि विदुर्ब्राह्मणा ये मनीषिणः।गुहा त्रीणि निहिता नेङ्गयन्ति। तुरीयं वाचो मनुष्या वदन्ति ॥

भाषा की विशेषताएँ

भाषा की विशेषताएँ से तात्पर्य है भाषा की प्रकृति। विश्व के अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग भाषाएँ बोली जाती हैं, तथापि भाषा का जो सामान्य लक्षण तथा गुण है वही भाषा की प्रकृति है। भाषा की विशेषताएँ जो विश्व की सभी भाषाओं में पाई जाती हैं, निम्नलिखित हैं

भाषा प्रतीकात्मक है जब कोई शब्द से किसी विशिष्ट अर्थ का बोध हो, तो वह प्रतीक कहलाता है। इसका शब्द के गुण से कोई संबंध नहीं होता बल्कि उस विशेष वस्तु को प्रतीकित करने के लिए इसका प्रयोग होता है। उदाहरण के लिए पंकज और जलज शब्द दोनों 'कमल' के पर्याय हैं जबकि दोनों का अर्थ क्रमशः कीचड़ में पैदा होने वाला और जल में पैदा होने वाला है।

वेदव्याख्यान में व्याकरणादि -संस्कृतसम्भाषण भाषायीज्ञान का अभ्यास मुख्य उपकरण है। इसलिए संस्कृतसम्भाषण के साथ हिन्दी ,अँग्रेजी भाषा सम्बन्धित भाषायी ज्ञान होना अनिवार्य है, यह ज्ञान संस्कृतसंभाषण ग्रन्थों के अध्ययन के अपेक्षा लोकभाषा के दैनिक व्यवहार में प्रयोग होने वाले शब्दों /वाक्यों में बोलने से ही भाषायी ज्ञान समृद्ध होगा। अत: छात्रों के लिए संस्कृत-हिन्दी एवं अँग्रेजी भाषा में "संभाषण शब्द-वाक्यकोष" दिया जा रहा है ,छात्रगण अपने शिक्षकों के सहायता से इसका अभ्यास करें।

संस्कृतभाषा में संभाषणशब्द-वाक्यकोश (दैनिकशिष्टाचारः)

- हरिः ॐ! Hello! नमस्ते!
- सुप्रभातम् = Good morning. शुभोदय/शुभ प्रातः ।
- नमस्कारः नमस्ते । = Good afternoon/Good evening. शुभमध्याह्न/शुभसायम्।
- शुभरात्रिः । = Good night. शुभरात्रि ।
- धन्यवादः। Thank You. धन्यवाद ।
- स्वागतम् । Welcome. स्वागत है ।
- क्षम्यताम् । = Excuse/Pardon me. क्षमा करें ।
- चिन्ता मास्तु । = Dont worry. चिन्ता न करें ।
- कृपया । = Please. कृपा पूर्वक।
- पुनः मिलामः । = Let us meet again. फिर मिलेंगे ।
- अस्तु । = All right./O.K. ठीक है ।
- श्रीमन् । = Sir. श्रीमान ।
- मान्ये/आर्ये । = Miss. भगिनी/बहन
- साधु साधु/समीचीनम् । Very good. बहुत बढ़िया
- मिलनम् = Meeting. बैठक
- भवतः नाम किम् ? What is your name? (पुरुष) आपका नाम क्या है?
- भवत्याः नाम किम् What is your name? (स्त्री) आपका नाम क्या है?
- मम नाम त्रिभुवनः। My name is Tribhuwan. मेरा नाम त्रिभुवन है ।
- मम नाम अस्मि शर्मा। My name is Asmi sharma. मेरा नाम अस्मि शर्मा है ।
- एषः मम मित्रम् This is my friend यह मेरा मित्र/दोस्त है ।
- एतेषां विषये श्रुतवान् = I have heard of them. मैने इनके बारे में सुना है।
- एषा मम सखी This is my friend' (fem.). ये मेरी मित्र है।
- भवान् किम् उद्योगं करोति ? What do you do? (पुरुष) आप क्या कार्य करते हैं?
- भवती किम् उद्योगं करोति? What do you do? (स्त्री) आप क्या कार्य करती हैं?
- अहम् अध्यापकः अस्मि । = I am a teacher (पुरुष) मै अध्यापक हूँ ।

- अहम अध्यापिका अस्मि । I am a teacher. (स्त्री) मै अध्यापिका हूँ ।
- उद्दङ्कः = Typist टंकक /टाइप करने वाला
- तन्त्रज्ञः = Engineer; अभियन्ता
- प्राचार्यः Principal प्राचार्य ।
- लिपिकः Clerk. लिपिक ।
- न्यायवादी = lawyer. वकील ।
- विक्रयिकः Salesman: विक्रेता
- उपन्यासकः = Lecturer व्याख्याता
- अहं राष्ट्रिय-आदर्शवेदविद्यालये कार्यं करोमि। = I work in a RAVV. मैं राष्ट्रिय आदर्श वेदविद्यालय में कार्य करता हूँ ।
- कार्यालये In an office; कार्यालय में ।
- महाविद्यालये = In a college महाविद्यालय में ।
- वित्तकोषे In a bank: बैंक में ।
- चिकित्सालये = In a hospital. चिकित्सालय में ।
- यन्त्रागारे = In a factory कारखाने में ।

प्रश्नोत्तरसम्बन्धित संवाद

- कुशलं वा ? = are you Fine? क्या आप सकुशल हैं?
- कथमस्ति भवान् ? How are you? आप कैसे हैं ?
- गृहे सर्वे कुशलिनः वा? Are all well at home? घर में सब सकुशल हैं ?
- सर्वं कुशलम् । All is well. सब सकुशल हैं ।
- कः विशेषः (का वार्ता ?) = What special? क्या विशेष है ?
- भवता एवं वक्तव्यम् । You have to say. आपको ऐसा कहना होगा ।
- कोऽपि विशेषः ? Anything special? कोई विशेष ?
- भवान् (भवती) कुतः आगच्छति ? Where are you coming from? आप कहाँ से आ रहे हैं?
- अहं शालातः, गृहतः I am coming from school/house. मैं विद्यालय से/घर से आ रहा हूँ।
- भवान्/भवती कुत्र गच्छति ?Where are you going? आप कहाँ जा रहे हैं?
- भवति वा इति पश्यामः। Let's see what will happened. देखेंगे आगे क्या होगा ।
- ज्ञातं वा ? Understand? क्या आप समझ गये?
- दिनं कथम् आसीत् ? How was it? आपका दिन कैसा था?
- कति अपेक्षितानि ? How much do you expect? आप कितनी अपेक्षा रखते है?
- अद्य एव वा ? = Is it today? आज ही क्या?
- अहं नवमीकक्ष्यायां पठामि। I am in Std. IX. मै नवमीं कक्षा में पढ रहा हूँ ।
- भवतः ग्रामः कः? Which is your village? आपका गाँव कौनसा है?

छात्राः = Students छात्रगण

- सिद्धता कथम् अस्ति ? How is your preparation? तैयारी कैसी है?
- पाठभागः एवं न समाप्तः। Syllabus have not been completed. पाठ्यक्रम पूर्ण नहीं हुआ है ।
- अद्य किमपि न पठितवान् एव । Couldn't study anything today. आज कुछ भी पढाई नहीं की।
- मम अक्षराणि न सुन्दराणि। My handwriting is not good. मेरा लेखन सुन्दर नहीं है।
- एतां कथां पठितवान् वा? Have you read this story? क्या आपने इस कथा को पढ ली है?
- बहु सम्यक् अस्ति । It is very Good. यह बहुत उत्तम है ।
- बहु पूर्वमेव पठितवान् । = I read it very long ago. इसे मैनें बहुत पूर्व में पढा था ।
- शीघ्रं पठित्वा ददामि भोः। I'll return it soon after reading. मैं इसे पढकर शीघ्र लौटा दूँगा।
- अद्य उत्थाने विलम्बः सञ्जातः। Got up a bit late today. आज जागने में विलंब हो गया।
- अहं गृहे एव त्यक्त्वा आगतवान् । I have left it at home. मै घर में ही छोड के गया था।
- अद्य तु विरामः । Today is a holiday, anyway. आज तो छुट्टी है ।
- भवतः वर्गशिक्षकः कः? Who is your class teacher? आपके वर्गशिक्षक कौन है ?
- अद्य समवस्त्रेण गन्तव्यं वा ? Do we have to go in our uniforms today? आज गणवेश में जाना है क्या?
- यावत् शालां गतवान् तावत् घण्टा ताडिता। The bell went by the time I reached school. जब शाला पहुचा तब तक घंटी बज चुकी थी ।
- श्रीमान्, अन्तः आगच्छामि वा ? May I come in, sir? महोदय! क्या मै अन्दर आ सकता हूँ?

- लेखनीम् एकवारं ददाति वा? Can you give me your pen once? क्या आप लेखनी एकबार दे सकते है ?
- टिप्पणीं किञ्चित् ददाति वा? Can you give me your notes? आप टिप्पणी कुछ दे सकते हैं क्या?
- ह्यः एव गिरीशः पुस्तकं स्वीकृतवान्। Girish bought a book yesterday. कल ही गिरीश ने पुस्तक लिया।
- अहं तद्दिने वर्गे न आगतवान् आसीत् । = I did not attend the class that day. मैं उस दिन कक्षा में नहीं आया था ।
- आगच्छतु भोः, क्रीडामः। Come on, let's play. आओ मित्र, हमसब खेलते हैं ।
- पठनीयं बहु अस्ति भोः । = I have a lot to read, you know. पढाई करने के लिए बहुत है ।
- किं मम पठनीयं नास्ति वा? Do you think I don't have anything to read? क्या मुझे पढाई करना नही है ?
- सम्यक न स्मरामि भोः । = I do not remember exactly.ठीक से मुझे याद नहीं है।
- तिष्ठतु, अहं स्मरामि तत् । Wait, I know it.रुकिये मैं स्मरण करता हूँ।
- श्वः आरभ्य सहाध्ययनं कुर्मः। We will study together from tomorrow. कल से एकसाथ अध्ययन करेंगे।

परीक्षा = Examination

- परीक्षारम्भः कदा इति ज्ञातो वा? Do you know when the examination will commence ? क्या आप जानते हैं कि परीक्षा कब से प्रारम्भ होगी?
- प्रवेशपत्रं स्वीकृतं वा? Have you taken the admission ticket? क्या आपको प्रवेशपत्र मिल गया?
- परीक्षा अग्रे गता । = The examination is postponed.परीक्षा तिथी आगे बढ गई।
- परीक्षावेलापत्रिका आगता वा ? Has the examination time table been announced? क्या परीक्षा समय सारिणी आ गई?

- परीक्षा कथम् आसीत्! How was the exam. ? परीक्षा कैसी रही?
- प्रश्न पत्रिका किञ्चित् क्लिष्टा आसीत् = The question paper was a bit tough.प्रश्नपत्र कुछ कठीन था।
- अतीव सुलभा आसीत् । = It was very easy.बहुत ही आसान था।
- अहं प्रथमश्रेण्यां उत्तीर्णः। I have passed in first division. मैं प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हूँ।
- ह्यः फलितांशः प्रकटितः। The result was announced yesterday.कल परीक्षाफल प्रकाशित होगा।
- अङ्कद्वयेन प्रथमश्रेणी न लब्धा। I missed first class by two marks.मैं दो नम्बर से प्रथमश्रेणी प्राप्त नहीं कर पाया।
- प्रश्नेषु विकल्पः एव नासीत् । Were there no options in the questions? प्रश्नों में विकल्प ही नहीं था।
- फलितांशः श्वः ज्ञातः भविष्यति। The result will be announced tomorrow.परीक्षाफल कल जानकारी हो जाएगी।
- रमेशः उत्तीर्णः वा? Has Ramesh passed? रमेश उत्तीर्ण हुआ?
- एकं पत्रम् अवशिष्टं इति उक्तवान्। yet. He told me that only one paper is left. एक ही पेपर शेष बचा है ऐसा बोला।
- पठितं किमपि न स्मरामि भोः ।Sir! I am not able to remember whatever I read earlier. हे महाशय, मैं कुछ पढा हूँ लेकीन याद नहीं आ रहा है।
- दशवारं पठितवान्, तथापि न स्मरामि । = I read it ten times, even then I do not remember. मैं दस बार पढा हूँ तब भी याद नहीं आ रहा है।
- अस्माकं गणे सर्वेऽपि उत्तीर्णाः।All members of our group have passed in examinetion. हमलोगों के साथ वाले गण सभी उत्तीर्ण हुए हैं।
- प्रतिशतं कति अङ्काः प्राप्ताः ? what percentages of marks did you achieve? कितने प्रतिशत अंक प्राप्त किए?

कार्यालयः = Office

- भवान् कति दिनानि विरामं स्वीकरोति ? How many days of leave you have taken? आप कितने दिनों की छुट्टी लिए हैं?
- एषु दिनेषु महान् कार्यभारः।Currently,there is a heavy workload. इन दिनों में बहुत ही ज्यादा कार्य का भार है।
- इमा सूचनाफलके स्थापयतु । Put this information on the notice board.इस सूचना को सूचनापट पर लगा दो।
- अत्र हस्ताङ्कनं करोतु । Sigh here, Please! कृपया यहाँ हस्ताक्षर कीजिए।
- सः विरामं स्वीकृतवान्। He is on leave. वह छुट्टी पर है।
- अस्मिन् विषये पुनः अपि चिन्तयामि। I will think about this again. इस विषय में पुनः विचार करता हूँ।
- आगामि सप्ताहे मां पश्यतु । See me next week. अगले सप्ताह में मुझे देखना।
- अस्मिन् विषये अनन्तरं वदामि। I'll talk about it later. मैं बाद में इस विषय में बोलता हूँ।
- एतत् अहम् अवश्यं स्मरामि । = I' definitely remember this.इसको मैं अवश्य याद करता हूँ।
- भवदुक्तं सर्वं ज्ञातवान् भोः । = I have understood whatever you said.आपने जो भी बोला, मैं सब समझ गया।
- मम कृते काऽपि दूरवाणी आगता वा = Any phone calls for me?
  मेरे लिए कोई दूरवाणी (फोन) आया है क्या?
- भवतः कृते दूरवाणी आगता आसीत्। = There was a phone call for you. आपके लिए दूरवाणी (फोन) आया था ।
- भवान् कस्मिन् स्थाने नियुक्तः अस्ति? Which post do you occupy in the office?
  आप किस कार्यालय/स्थान में नियुक्त हैं?

- एषः सर्वदा आगत्य पीडयति । He troubles me always. यह मुझे हमेशा आकर परेशान करता है।
- इदानीं समयः अतीतः।Time has passed. अभी समय बीत चुका है।
- कृपया श्वः आगच्छतु । please Come tomorrow.. कृपया कल आइए।
- सः आगतवान् इति स्मरामि। I remember, he came here.वह आया था,मुझे याद है।
- पञ्चवादनपर्यन्तं अत्रैव आसीत्। He was here till 5.00.पाँच बजे तक वह यही पर था।
- माम् आहूतवान् वा ? Did you call me? क्या आपने मुझे बुलाया है?
- तां व्यवस्थां अहं करोमि । I will make that arrangement. वह व्यवस्था मैं करता हूँ।
- कार्यालयस्य समाप्तिः कदा? When does your office close? कार्यालय कब समाप्त/बन्द होता है।
- एतद्विषये श्वः पुनरपि स्मारयतु। Remind me again about this matter tomorrow.इस विषय में कल दुबारा याद दिलाना।
- तम् अत्र आगन्तुं सूचयतु । inform them to come here.उनको यहाँ आने के लिए सुचित करो।
- किमर्थम् इदानीम् अपि कार्यं न आरब्धम् ? Why hasn't the work startedyet ? अभी तक किस कारण से कार्य प्रारम्भ नहीं हुआ?
- अन्येषाम् उपहासेनेव कालं यापयति । He spends time criticizing others. वह दूसरों का उपहास/आलोचना करके समय बिता दिया।
- मया किं करणीयं, वदतु। Tell me what I should do.मुझे क्या करना है बोलिए?
- अहं किं करोमि भोः ? What shall I do? मैं क्या करूँगा महाशय?
- अस्तु परिशीलयामः। Sure, we will see. ठीक है हमलोग देखते हैं।
- आगच्छतु, किञ्चित् कार्कीं पिवामः। Come, let's have a cup of coffee.आइए ,थोडा कॉफी पीते हैं।
- भवान् शीघ्रं प्रत्यागच्छति वा? Will you come soon? क्या आप शीघ्र लौट आएँगे?
- कृपया उपविशत् । Please, sit down. कृपया बैठ जाइए।

- पञ्चनिमेषेषु एतद् कृत्वा ददामि। I'll get this task done in five minutes.पाँच मिनट में यह कार्य करके देता हूँ।
- अद्य सः अत्र नास्ति किल । Is he not here today. क्या वह आज यहाँ नहीं है?

आरोग्यम् = Health

- मम आरोग्यं समीचीनं नास्ति। I am not well.. मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं है।
- महती पादवेदना । Terrible leg pain. बहुत ज्यादा पैरदर्द हो रहा है।
- सामान्यतः शिरोवेदना यदा तदा आगच्छति । Generally I get headache now and then. सामान्य रूप से शिरदर्द है कभी कभी दर्द हो रहा है।
- किञ्चित् ज्वरः इव Feeling little feverish... थोडा बुखार जैसा लग रहा है।
- वैद्यं पश्यतु । = Consult a doctor.डॉक्टर को दिखाओ।
- मम वमनशङ्का । I feel like vomitting. मुझे वमन(उल्टी) जैसी लग रही है।
- वैद्यस्य निर्देशनं स्वीकरोतु । = Get a doctor's advice. डॉक्टर (वैद्य) का निर्देश/सलाह मानो।
- अहम् अतीव श्रान्तः । = I am very tired. मैं बहुत ही थक गया हूँ।
- तस्य आरोग्यं कथं अस्ति? How is his health? उसकी तबीयत कैसी है?
- अद्य किञ्चित् उत्तमा (दहस्थितिः। A bit better today. आज कुछ बेहतर लग रहा है।
- प्रातः आरभ्य लघु शिरोवेदना । Slight headache since morning.सुबह से लेकर थोडा-थोडा शीरदर्द है।
- आरोग्यं तावत् सम्यक नास्ति । Somehow, my health is not good. सम्भवत: मेरी तबीयत ठीक नहीं है।
- वैद्य कदा दृष्टवान्? When did you see the doctor last? डॉक्टर ने कब देखा है?
- उत्साहः एवं नास्ति भोः ।there is not the same enthusiasm as before. पहले जैसे उत्साह नहीं है।
- ह्यः तु स्वस्थः आसीत्। He was all right yesterday. कल तो स्वस्थ था।

- किम् अद्य अहं भोजनं करोमि वा? Shall I have my meals today? क्या मैं आज तो भोजन करूँगा न ?
- अद्य ज्वरः कथम् अस्ति How is the fever today? आज बुखार कैसा है?
- यथावत् । As usual. पहले जैसे ही है।
- तदा तदा उदरवेदना पीडयति किल?Do you sometimes feel troubled by stomach-ache? कभी कभी पेटदर्द से आप परेशान हो क्या?
- ज्वरपीडितः वा? कदा आरभ्य Are you suffering from a Fever? Since when? बुखार से पीडित हो क्या ,कब से अया है?

समयः Time

- कः समयः ? What is the time? कितना समय हो रहा है?
- सपादनववादनम् । = A quarter past 9 O claock. सवा नौ बज रहा है।
- द्विवादने अवश्यं गन्तव्यम् अस्ति। I must leave at 2 o'clock. दो बजे ही जाना है।
- त्रिवादने एक यानम् अस्ति । There is a bus at three o'clock.तीन बजे एक गाडी है।
- पादोन षड्वादने भवान् मिलति वा ? Will you meet at a quarter to six? पौने छः वजे आप मिलेंगे क्या?
- सार्धपञ्चवादने अहं गृहे तिष्ठामि। I will be at home at half past five.साढे पाँच बजे मै घर पर ही रहूँगा।
- संस्कृतवार्ताप्रसारः सायं दशाधिक षड्वादने। The Sanskrit news bulletin will telecast at 6.10 p.m
- शाम को छः बजकर दस मिनट पर संस्कृतवार्ता का प्रसार होगा?
- सार्धं द्विघण्टात्मकः कार्यक्रमः। It is a programme for two and a half hours. ढाई घण्टे का कार्यक्रम है।
- षड्वादनपर्यन्तं तत्र किं करोति ? What are you going to do there till six o'clock?

  छः बजे तक आप वहाँ क्या करेंगे?

- विद्यालयः एकादशवादनतः किल The school is from 11 o'clock, isn't it? विद्यालय ११ बजे से है न ?
- इतोऽपि यथेष्टं समयः अस्ति। Still there is a lot of time. फिर भी अच्छा समय है।
- सः पञ्चवादनतः षड्वादनपर्यन्तं योगासनं करोति । He does Yogasana from 5 AM. to 6AM. वह ५ बजे से ६बजे तक योगासन करता है।
- मम घटी निमेषद्वयम् अग्रे सरति। My watch is running two minutes ahead. मेरी घडी 2 मिनट आगे चल रही है।
- समये आगच्छतु । = Come in time.समय से आ जाएँ।
- अरे। नववादनम् । Oh! it is 9 o'clock. अरे नौ बज गया।
- भवतः आकाशवाणी समयः वा? It is time for your radido news broadcast? आपका आकाशवाणी समाचार का समय हो रहा है?
- इदानीं यथार्थः समयः कः? What is the exact time now? इस समय सही समय कितना हो रहा है?
- किमर्थम् एतावान् विलम्बः? Why are you so late? क्यों इतनी देरी हुई?
- इदानीं भवतः समयावकाशः अस्ति वा? Are you free now? (Can you spare a few इस समय आपके पास मुक्त समय (फ्री) है क्या?
- राजुमहोदयस्य गृहं वा? Is it Mr. Raju's house? यह राजु महोदय का घर है क्या?

दूरभाष से बात करने में वाक्य प्रयोग-:

- अहं कृष्णः । = I am Krishna, speaking. मैं कृष्ण बोल रहा हूँ,
- कः अपेक्षितः ? Whom do you want to speak to? आप किससे बात करना चाहते हैं?
- कृष्णः गृहे अस्ति वा? Is Mr. Krishna at home? कष्णा घर पर है क्या?
- क्षम्यतां, सः गृहे नास्ति। Sorry, he is not at home. क्षमा चाहता हूँ वह घर पर नहीं है।
- कृपया एतत् कृष्णं सूचयतु। Would you kindly inform this on to Mr. Krishna?
- कृपया, यह कृष्ण को सुचित कर दीजिए।
- कृपया तम् आह्वयति वा? Would you please call him? कृपया उसको बुलाएँगे क्या?

- अस्तु, एकक्षणं तिष्ठतु । Yes, wait a minute, please. ठीक है, कृपया १ मिनट रूकिए।
- कः दूरवाणीं कृतवान् इति वदामि ? = shall I tell you who made the phone call?
- दूरवाणी(फोन) कौन किया था यह मैं बताता हूँ,
- सः श्वः आगमिष्यति । He is coming tomorrow. वह कल आने वाला है।
- अस्तु, श्वः पुनः दूरवाणीं करोमि । OK. I will call again .
- ठीक है, मैं पुन: कल फोन करता हूँ।
- किं इदानीमपि न आगतवान् वा? What? Hasn't he come yet? इस समय भी नहीं आया क्या?
- तस्य दूरवाणी संख्या का ? What is his phone number? उसका फोन नम्बर क्या है?
- गृहे मिलेत् वा ? Will he available at home? घर पर मिलेंगे क्या?
- मद्रासतः इदानीमपि न आगतवान्। Not yet returned from Madras. मद्रास से अभी तक नहीं आए हैं।
- अवश्यं सूचयामि । I will definitely provide the information . अवश्य ही सूचना देता हूँ।
- स्थापयामि वा ? Did you hang up the phone? फोन रख दिए क्या?
- किञ्चित् उच्चैः वदतु । Speak louder, please.कृपया जोर से बोलो।
- अस्तु। Ok धन्यावादः Thank you धन्यावाद /आभार

सामान्य संस्कृत सम्भाषण का परिचय-

सामान्य रूप से संभाषण के समय वाक्य कर्तृवाच्य में प्रयोग करते हैं । (कर्तृपद में प्रथमा विभक्ति, कर्म द्वितीया विभक्ति एवं क्रिया कर्ता के अनुसार लगाते हैं) जिस वाक्य में कर्ता प्रधान होता उसे कर्तृवाच्य कहते हैं। वाक्यनिर्माण के लिए छः 'लट्' लकारों का मुख्य रूप से करेंगे।

कर्तृवाच्य के सामान्य नियम-

कर्ता	प्रथमाविभक्तिः (कर्तृपदं प्रथमाविभक्तौ स्यात्)
कर्म	द्वितीयाविभक्तिः (कर्मपदं द्वितीयाविभक्तौ स्यात्)

क्रिया	कर्तृपदानुसारम् (कर्तृपदस्य पुरुषवचनलिङ्गानुसारं भवति क्रियाया: पुरुषवचनानि ।)	
	कर्तृपदम्	**क्रियापदम्**
	प्रथमपुरुष:	प्रथमपुरुष:
	मध्यमपुरुषः	मध्यमपुरुष:
	उत्तमपुरुषः	उत्तमपुरुष:
	एकवचनम्	एकवचनम्
	द्विवचनम्	द्विवचनम्
	बहुवचनम्	बहुवचनम्

उदाहरण-

1	रामः	ग्रामं	गच्छति ।
	कर्ता – प्रथमपुरुष: एकवचनम्	कर्म - द्वितीयाविभक्ति:	क्रिया - प्रथमपुरुष: एकवचनम्
2	**बालकौ**	**काव्यं**	**पठत: ।**
	कर्ता – प्रथमपुरुष: द्विवचनम्	कर्म - द्वितीयाविभक्ति:	क्रिया - प्रथमपुरुष: द्विवचनम्
3	**छात्रा:**	**पुस्तकं**	**पठन्ति ।**
	कर्ता – प्रथमपुरुष: बहुवचनम्	कर्म - द्वितीयाविभक्ति:	क्रिया - प्रथमपुरुष: बहुवचनम्
4	**त्वं**	**मधुरं**	**खादसि ।**
	कर्ता – मध्यमपुरुष: एकवचनम्	कर्म - द्वितीयाविभक्ति:	क्रिया - मध्यमपुरुष: एकवचनम्
5	**युवां**	**चलच्चित्रं**	**पश्यथ: ।**
	कर्ता – मध्यमपुरुष: द्विवचनम्	कर्म - द्वितीयाविभक्ति:	क्रिया - मध्यमपुरुष: एकवचनम्
6	**यूयं**	**भोजनं**	**खादथ ।**
	कर्ता – मध्यमपुरुष: वहुवचनम्	कर्म - द्वितीयाविभक्ति:	क्रिया - मध्यमपुरुष: बहुवचनम्
7	**अहं**	**गीतं**	**गायामि ।**
	कर्ता – उत्तमपुरुष: एकवचनम्	कर्म - द्वितीयाविभक्ति:	क्रिया - उत्तममपुरुष: एकवचनम्
8	**आवां**	**चित्रं**	**रचयाव: ।**
	कर्ता – उत्तमपुरुष: द्विवचनम्	कर्म - द्वितीयाविभक्ति:	क्रिया - उत्तममपुरुष: द्विवचनम्
	वयं	**संस्कृतं**	**वदाम: ।**

9	कर्ता – उत्तमपुरुष: बहुवचनम्	कर्म - द्वितीयाविभक्ति:	क्रिया - उत्तममपुरुष: द्विवचनम्

अधोलिखित वाक्यों का अभ्यास कीजिए-

1. Always speak the truth. / सदा सत्य बोलो ।

1. सदा सत्यं वद ।

2. The past never comes back. / बीता हवा समय फिर नहीं लौटता ।

2. अतीत: समय: पुन: न आगच्छति ।

3. What is the name of your school? / तुम्हारे विद्यालय का नाम क्या है ?

3. तव विद्यालयस्य नाम किम् ?

4. Where are you going? / तुम कहाँ जा रहे हो ?

4. त्वं कुत्र गच्छसि ?

5. Gopal and Ganesh are playing in the garden. / गोपाल और गणेश उद्यान में खेल रहे हैं ।

5. गोपाल: गणेश: च उद्याने क्रीडत: ।

6. There is a temple near my house. / मेरे घर के पास एक मंदिर है ।

6. मम गृहस्य समीपे एकं मन्दिरम् अस्ति ।

7. I am going to school. / मैं विद्यालय जा रहा हूँ ।

7. अहं विद्यालयं गच्छामि ।

8. Flowers are blooming in the garden. / उद्यान में फूल खिल रहे हैं ।

8. उद्याने पुष्पाणि विकसन्ति ।

9. I have five fruits in my hand. / मेरे हाथ में पांच फल हैं ।

9. मम समीपे पञ्च फलानि सन्ति ।

10. Delhi is the capital of India. / दिल्ली भारत की राजधानी है ।

10. दिल्ली भारतस्य राजधानी अस्ति ।

11. Both of us went to Goa yesterday. / कल हम दोनों गोवा गए थे ।

11. ह्यः आवां गोवाम् अगच्छाव ।

12. Please bring water for me. / कृपया तुम मेरे लिए पानी लाओ ।

12. कृपया मह्यं जलम् आनय ।

13. I will go to festival on Saturday. / शनिवार को मै उत्सव में जाऊँगा ।

13. अहं शनिवासरे उत्सवे गमिष्यामि ।

14. You should study now. / अब तुम पढो ।

14. त्वम् अधुना पठ ।

15. All of us study Sanskrit. / हम सब संस्कृत पढ़ रहे हैं ।

15. वयं सर्वे संस्कृतं पठाम: ।

16. Girls are playing with football. / लड़कियां गेंद से खेल रही हैं ।

16. बालिका: पादकन्दुकेन क्रीडन्ति ।

17. I go to school. / मै विद्यालय जा रहा हूँ ।

17. अहं विद्यालयं गच्छामि ।

18. Leaves are falling from the tree. / पेड़ से पत्ते गिर रहे हैं ।

18. वृक्षात् पत्राणि पतन्ति ।

19. He lives in the village. / वह गाव में रहता है ।

19. स: ग्रामे वसति ।

20. Mother cooks the food. / माता खाना पकाती है ।

20. माता भोजनं पचति ।

21. There are fruits on the tree. / पेड़ पर फल है ।

21. वृक्षे फलानि सन्ति ।

22.The dog safeguards the house. / कुत्ता घर की रक्षा करता है ।

22. कुक्कुर: गृहस्य रक्षां करोति ।

23.The birds sit upon the tree. / पक्षी पेड़ के ऊपर बैठते हैं ।

23. खगा: वृक्षे उपविशन्ति ।

24.Mahatma Gandhi is the father of our nation. / महात्मागांधी हमारे राष्ट्रपिता है ।

24. महात्मागान्धी अस्माकं राष्ट्रपिता अस्ति ।

25.The sun gives us the light. / सूरज हमें रोशनी देता है ।

25. सूर्य: अस्माकं कृते प्रकाशम् उष्णं च ददाति ।

26.Students are writing an examination. / छात्र एक परिक्षा लिख रहे हैं ।

26. छात्रा: एकां परीक्षां लिखन्ति ।

27.An artist draws a picture. / चित्रकार एक चित्र बनाता है ।

27. चित्रकार: एकं चित्रं रचयति ।

28.The water of river Ganga is pure. / गंगा नदी का पानी शुद्ध है ।

28. गङ्गाया: जलं शुद्धं भवति ।

29.Rekha is going to the school after drinking the milk. / रेखा दूध पीकर विद्यालय जा रही है।

29. रेखा दुग्धं पीत्वा विद्यालयं गच्छति ।

30.Stars are shining on the sky in the night./ रात में आकाश में तारे चमकते हैं ।

30. रात्रौ आकाशे तारा: शोभन्ते ।

31.The river Ganga originates from Himalayas. / गंगानदी हिमालय से बहती है ।

31. गङ्गानदी हिमालयात् उद्भवति ।

32. Arjuna is the friend of Krishna. / अर्जुन कृष्ण का मित्र है ।

32. अर्जुन: कृष्णस्य मित्रम् अस्ति ।

33.The father gives advice to son. / पिताजी बेटे को उपदेश देते हैं ।

33. पिता पुत्रम् उपदिशति ।

34.Helping others gives happiness. / परोपकार खुशी प्रदान करता है ।

34. परोपकार: आनन्दं ददाति ।

35.I am going to my mother's house. / मैं मा के घर जाता हूँ ।

35.अहं मातु: गृहं गच्छामि ।

36.There are many lotuses in the pond. / तालाब में कई कमल हैं ।

36. तडागे अनेकानि कमलानि सन्ति ।

37.You are climbing on the tree. / तुम पेड़ पर चढ़ रहे हो ।

37. त्वं वृक्षम् आरोहसि ।

38.The mango is very nutritious. / आम्रफल बहुत पौष्टिक होता है ।

38. आम्रफलम् अतीव पोषकसमृद्धं भवति ।

39.All of you are watching a film. / तुमसब एक चलच्चित्र देख रहे हो।

39. यूयं चलच्चित्रं पश्यथ ।

40.A life without education is useless. / शिक्षा के बिना जीवन व्यर्थ है ।

40. विद्यां विना जीवनं व्यर्थम् ।

(ख) हिन्दी भाषा (भाषा शुद्धीकरण अभ्यास)-

हिंदी भाषा की सबसे छोटी इकाई ध्वनि होती है। इसी ध्वनि को ही वर्ण कहा जाता है। वर्णों को व्यवस्थित करने के समूह को वर्णमाला कहते हैं। हिन्दी में उच्चारण के आधार पर ५२ वर्ण होते हैं। इनमें ११ स्वर और ४१ व्यञ्जन होते हैं। लेखन के आधार पर ५४ वर्ण होते हैं इसमें १३ स्वर , ३५ व्यञ्जन तथा ४ संयुक्त व्यञ्जन होते हैं।

वर्णमाला के दो भाग होते हैं —

१. स्वर २. व्यञ्जन

1. स्वर क्या होता है? - जिन वर्णों को स्वतन्त्र रूप से बोला जा सके उसे स्वर कहते हैं।

व्यञ्जन क्या होता है ?- जो वर्ण स्वरों की सहायता से बोले जाते हैं उन्हें व्यञ्जन कहते हैं। हर व्यञ्जन के उच्चारण में अ स्वर लगा होता है। अ के बिना व्यञ्जन का उच्चारण नहीं हो सकता। वर्णमाला में कुल ४५ व्यञ्जन होते हैं।

क वर्ग - क , ख , ग , घ , ङ

च वर्ग - च , छ , ज , झ , ञ

ट वर्ग - ट , ठ , ड , ढ , ण

त वर्ग - त , थ , द , ध , न

प वर्ग - प , फ , ब , भ , म

य वर्ग -य , र , ल , ळ, व

श वर्ग - श , ष , स , ह

संयुक्त व्यञ्जन - क्ष , त्र , ज्ञ , श्र

यह वर्णमाला देवनागरी लिपि में लिखी गई है। देवनागरी लिपि में संस्कृत, मराठी, कोंकणी, नेपाली, मैथिलि भाषाएँ लिखी जाती हैं। हिन्दी वर्णमाला में दीर्घ ऋ , ऌ , ॡ , ळ का प्रयोग नहीं किया जाता है।

वर्णों के उच्चारण स्थान

किसी भी वर्ण के उच्चारण के लिए मुख के विभिन्न भागों का सहारा लेना पड़ता है। मुख के जिस भाग (अवयव) से वर्ण का उच्चारण किया जाता है, वह भाग उस वर्ण का उच्चारण स्थान कहलाता है उच्चारण स्थान मुख्यत: १० हैं—(१) कंठ। (२) तालु।(३) मूर्धा (तालु के ऊपरी भाग) (४) दंत (दांत) (५) ओष्ठ (ओंठ)। (६) नासिका (नाक)।(७) कण्ठतालु ।(८) कण्ठोष्ठ।(९) दन्तोष्ठ(१०)जिह्वामूल। उच्चारण-स्थान के आधार पर सभी वर्णों का वर्गीकरण किया गया है, जो निम्नलिखित हैं—

1. **कंठ्य** - जिनका उच्चारण कंठ से हो वे कंठ्य वर्ण हैं। जैसे-अ, आ, क-वर्ग, विसर्ग तथा ह।

   सूत्र- अकुहविसर्जनीयानां कण्ठ:

2. **तालव्य** - जिनका उच्चारण तालु से हो वे तालव्य वर्ण हैं। जैसे-च-वर्ग इ,ई,य तथा श।

   सूत्र - इचुयशानां तालु

3. **मूर्धन्य** - जिनका उच्चारण मूर्द्धा से हो वे मूर्द्धन्य वर्ण हैं। जैसे -ट-वर्ग,ऋ, र तथा ष ।

   सूत्र- ऋटुरषाणां मूर्धा

4. **दंत्य** - जिनका उच्चारण दाँत से हो वे दंत्य वर्ण हैं। जैसे—त-वर्ग, ऌ,ल और स।

   सूत्र- ऌतुलसानां दन्ता:

5. **ओठ्य** - जिनका उच्चारण ओठ से हो वे ओष्ठ्य वर्ण हैं। प-वर्ग, उ, ऊ तथा एवं उपधमानीय (:प,:फ)वर्ण।

सूत्र- उपूपध्मानीयानामोष्ठौ

6. **नासिका/अनुनासिक -** जिनका उच्चारण मुख और नाक दोनों से हो वे अनुनासिक वर्ण हैं। जैसे—पंचमाक्षर (ङ, ञ, ण, न, म), अनुस्वार और चन्द्रबिंदु

सूत्र- ञमङणनानां नासिका च।

7. **कण्ठतालु** - तालव्य जिनका उच्चारण कंठ और तालु से हो वे कंठ-तालव्य वर्ण हैं। जैसे - ए तथा ऐ ।

सूत्र - एदैतो:कण्ठतालु

8. **कण्ठोष्ठ** - जिनका उच्चारण कंठ और ओष्ठ से हो वे कंठोष्ठ्य वर्ण हैं। जैसे - ओ तथा औ ।

सूत्र- ओदौतो:कण्ठोष्ठम्

9. **दंतोष्ठ्य** - जिसका उच्चारण दंत और ओष्ठ से हो वह दंतोष्ठ्य वर्ण है। जैसे - व ।

सूत्र - वकारस्य दन्तोष्ठम्

10. **जिह्वामूल** - जिह्वामूलीय वर्णों का उच्चारणस्थान जिह्वामूल होता है।:क,:ख

सूत्र - जिह्वामूलीयस्यजिह्वामूलम्

11. **नासिका** - अनुस्वारवर्ण ( )(ँ) का उच्चारणस्थान नासिका (नाक) होता है।

सूत्र - नासिकानुस्वारस्य

(ग) शब्दरूप व धातुरूप का सामान्य परिचय

(पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग एवं नपुंसकलिङ्ग शब्दरूपों का अभ्यास।

वास्तव में संस्कृत भाषा में प्रत्येक शब्द क्रिया तथा प्रत्ययों के योग से बने हैं इन प्रत्ययों से लिंग का निर्धारण हो जाता है। संस्कृत भाषा में जो शब्दरूप पढे जाते हैं वे तीन लिङ्गों में पठित होते हैं ,इन शब्दरूपों का सञ्चालन एवं निर्माण सु औ जश् आदि प्रत्ययों के योग से होते हैं ,इस कारण इन्हें सुबन्त शब्दरूप भी बोलते हैं। संस्कृतभाषा में सुबन्त एवं तिङन्त दो प्रकार के शब्द होते हैं जिसमें सुबन्त को शब्दरूप या कर्तारूप एवं तिङन्त को धातुरूप या क्रियारूप बोलते हैं।

सुबन्त शब्दरूप-

सुबन्त - सुप् प्रत्ययान्त सुबन्त। सुबन्त, तिङन्त की पदसंज्ञा होती है। साथ ही सुबन्त की प्रातिपदिक संज्ञा भी होती है। यथा - वेद + सु (वेदः)। वेद प्रातिपदिक है तथा सु प्रत्यय है, इसमें लिङ्ग, विभक्ति और वचन होते हैं।

अकारान्तपुंलिङ्ग वेदशब्दः(वेदग्रन्थ)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा -	वेदः	वेदौ	वेदाः
द्वितीया -	वेदम्	वेदौ	वेदान्
तृतीया -	वेदेन	वेदाभ्याम्	वेदैः
चतुर्थी -	वेदाय	वेदाभ्याम्	वेदेभ्यः
पञ्चमी -	वेदात्	वेदाभ्याम्	वेदेभ्यः
षष्ठी -	वेदस्य	वेदयोः	वेदानाम्
सप्तमी -	वेदे	वेदयोः	वेदेषु
सम्बोधनम्-	हे वेद !	हे वेदौ !	हे वेदाः !

अकारान्त पुल्लिङ्ग राम शब्द (दशरथपुत्र राम)

रामः	रामौ	रामा:
रामम्	रामौ	रामान्
रामेण	रामाभ्याम्	रामै:
रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
रामात्/ रामाद्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
रामे	रामयोः	रामेषु
हे राम!	हे रामौ!	हे रामा:!

आकारान्तस्त्रीलिङ्ग रमा शब्द (लक्ष्मी)

रमा	रमे	रमाः
रमाम्	रमे	रमाः

रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः
रमायै	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
रमायाः	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
रमायाः	रमयोः	रमाणाम्
रमायाम्	रमयोः	रमासु
हे रमे!	हे रमे!	हे रमाः!

ईकारान्तस्त्रीलिङ्ग लक्ष्मी शब्द(धन की देवी)

लक्ष्मी	लक्ष्म्यौ	लक्ष्म्य:
लक्ष्मीम्	लक्ष्म्यौ	लक्ष्मी:
लक्ष्म्या	लक्ष्मीभ्याम्	लक्ष्मीभि:
लक्ष्म्यै	लक्ष्मीभ्याम्	लक्ष्मीभ्य:
लक्ष्म्या:	लक्ष्मीभ्याम्	लक्ष्मीभ्य:
लक्ष्म्या:	लक्ष्म्यो:	लक्ष्मीणाम्
लक्ष्म्याम्	लक्ष्म्यो:	लक्ष्मीषु
हे लक्ष्मि!	हे लक्ष्म्यौ!	हे लक्ष्म्य:!

तिङन्त-

तिङ अन्त :तिङन्त :, तिङ प्रत्यय जिसके अन्त में हो वह तिङन्त शब्द कहलाते है, तिङन्त को ही क्रिया कहते हैं, इस क्रिया का मूलरूप धातु है। ये धातु तीन प्रकार के होते हैं। यथा - परस्मैपदी, आत्मनेपदी और उभयपदी। संस्कृतभाषा में धातुओं के काल निर्णय के लिए दस लकार हैं। यथा - लट्, लिट्, लुट्, लृट्, लेट्, लोट्, लङ्, लिङ्, लुङ् एवं लृङ् । लेट् का प्रयोग वेदों में होता है।

पुरुष- क्रिया अर्थबोधक पुरुष तीन प्रकार के होते हैं - प्रथमपुरुष, मध्यमपुरुष, और उत्तमपुरुष। प्रथमपुरुष के कर्ता वचन के अनुसार इस प्रकार होते हैं यथा - सः तौ ते, रामः रामौ रामाः आदि। मध्यम पुरुष के कर्ता युष्मद् शब्द (त्वम्, युवाम्, यूयम्), एवं उत्तम पुरुष के कर्त्ता अस्मद् शब्द (अहम्, आवाम्, वयम्) इस प्रकार सरल मानक से कर्त्ता का निर्धारण कर सकते हैं। यथा-

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्

प्रथमपुरुषः	सः/रामः पठति	तौ/रामौ पठतः	ते/ रामाःपठन्ति
मध्यमपुरुषः	त्वं पठसि	युवां पठथः	यूयं पठथ
उत्तमपुरुषः	अहं पठामि	आवां पठावः	वयं पठामः

इनके अतिरिक्त समस्त संज्ञा तथा सर्वनाम पद प्रथम पुरुष में आते हैं। साथ ही इनमें पुल्लिंग, स्त्रीलिंग तथा नपुसंकलिंग का भेद होता है। परन्तु मध्यम पुरुष तथा उत्तम पुरुष के त्वं बालकः, त्वं बालिका, अहं बालकः, अहं सर्वनामों में लिंग का कोई भेद नहीं होता, यथा बालिका तथा मध्यम तथा उत्तम पुरुषों में संज्ञापद नहीं होते हैं।

वेदों में लकार का प्रयोग एवं क्रियारूप- वैदिक संस्कृत में लकारों के प्रयोग में अधिक दृढता नहीं पाई जाती, एक लकार के अर्थ में अन्य लकारों का प्रयोग देखा जाता है -

"छन्दसि लुङ्लङ्लिटः सर्वलकारेषु स्युः"

वेद में लुङ्, लङ् तथा लिट् लकारों का अन्य लकारों के अर्थ में प्रयोग होता है।

वेदों में लेट् लकार का बहुल प्रयोग मिलता है जिसका लौकिक संस्कृत में अभाव सा है। इसका अतीव विरल प्रयोग निषेधार्थक मा के साथ मिलता है -

मा गमः, मा कार्षीः, मा हार्षीः

लुङ्लकार का भी वेदों में बहुत अधिक प्रयोग मिलता है। इसके 7 प्रकारों तथा इनके आधार पर बनने वाले लेट् लकार का बहुल प्रयोग देखा जाता है। लुङ् का अडागम रहित प्रयोग भी बहुलता से मिलता है -

गमत्, गमः वोचत् कः भरत् धात् = अगमत् अगमः अवोचत् अकः अभरत् अधात् स्मः मिनीमः क्रिया रूप लट्लकार उत्तमपुरुष स्मसि मिनीमसि

भू, पठ्, लिख् एवं गम् क्रिया-धातुओं के सभी लकारों में अभ्यास)

भू-धातु (होने के अर्थ में क्रिया) लट्लकार (वर्तमानकाल)

एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
भवति	भवतः	भवन्ति
भवसि	भवथः	भवथ
भवामि	भवावः	भवामः

लोट्लकार (आदेशार्थक)

भवतु/ भवतात्	भवताम्	भवन्तु
भव	भवतम्	भवत
भवानि	भवाव	भवाम

लङ्लकार (भूतकाल)

अभवत्	अभवताम्	अभवन्
अभव:	अभवतम्	अभवत
अभवम्	अभवाव	अभवाम

विधिलिङ्लकार (विधि निमन्त्रण)

भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
भवे:	भवेतम्	भवेत
भवेयम्	भवेव	भवेम

लृट्लकार (भविष्यत्काल)

भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

पठ-धातु(पढने अर्थ में क्रिया) लट्लकार (वर्तमानकाल)

एकवचनम्	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
पठति	पठतः	पठन्ति
पठसि	पठथः	पठथ
पठामि	पठावः	पठामः

लोट्लकार (आदेशार्थक)

पठतु/ पठतात्	पठताम्	पठन्तु
पठ	पठतम्	पठत
पठानि	पठाव	पठाम

लङ्लकार (भूतकाल)

अपठत्	अपठताम्	अपठन्
अपठ:	अपठतम्	अपठत
अपठम्	अपठाव	अपठाम

विधिलिङ्लकार (विधि निमन्त्रण)

पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
पठे:	पठेतम्	पठेत
पठेयम्	पठेव	पठेम

लृट्लकार (भविष्यत्काल)

पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

लिख्-धातु(लिखने अर्थ में क्रिया) लट्लकार (वर्तमानकाल)

एकवचनम्	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
लिखति	लिखतः	लिखन्ति
लिखसि	लिखथः	लिखथ
लिखामि	लिखावः	लिखामः

लोट्लकार (आदेशार्थक)

लिखतु/ लिखतात्	लिखताम्	गच्छन्तु
लिख	लिखतम्	लिखत
लिखानि	लिखाव	लिखाम

लङ्लकार (भूतकाल)

अलिखत्	अलिखताम्	अलिखन्

अलिख:	अलिखतम्	अलिखत
अलिखम्	अलिखाव	अलिखाम

विधिलिङ्लकार (विधि निमन्त्रण)

लिखेत्	लिखेताम्	लिखेयुः
लिखे:	लिखेतम्	लिखेत
लिखेयम्	लिखेव	लिखेम

लृट्लकार (भविष्यत्काल)

लेखिष्यति	लेखिष्यतः	लेखिष्यन्ति
लेखिष्यसि	लेखिष्यथः	लेखिष्यथ
लेखिष्यामि	लेखिष्यावः	लेखिष्यामः

गम् -धातु(जाने अर्थ में क्रिया) लट्लकार (वर्तमानकाल)

एकवचनम्	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

लोट्लकार (आदेशार्थक)

गच्छतु/ गच्छतात्	गच्छताम्	गच्छन्तु
गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

लङ्लकार (भूतकाल)

अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

विधिलिङ्लकार (विधि निमन्त्रण)

गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत
गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

लृट्लकार (भविष्यत्काल)

गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

(घ) **संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, अव्यय, काल (लकार), लिङ्ग, विभक्ति, वचन, सन्धि, समास, कारक का अतिसंक्षिप्त परिचय।**

१. **संज्ञा-** किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम को संज्ञा कहते हैं। (ये सभी लिङ्ग,संख्या,वचन से युक्त होते हैं, अत: इसे नाम, संज्ञा, कर्ता, सत्व, द्रव्य के पर्याय रूप में भी जानते हैं। **उदाहरण-व्यक्ति-**राम, श्याम, सीता, गीता आदि। **वस्तु-** टेबल, कुर्सी, पंखा आदि। **स्थान-** उज्जैन, पटना, इन्दौर आदि।

२. **सर्वनाम-** संज्ञा के बदले या स्थान पर जिसका नाम लिया जाय वह सर्वनाम कहलाता है। **उदाहरण-** वह, तुम, मैं, वे लोग, आप, सभी इत्यादि।

३. **विशेषण- किसी भी वस्तु, संज्ञा आदि के विशिष्टता को जो बतलाया जाय वह विशेषण कहलाता है।**

उदाहरण- काली गाय, सफेद अश्व, कृष्णसर्प, रक्तचन्दन आदि।

४. **अव्यय-** ऐसा संज्ञावाची शब्द जिसका कोइ भी, किसी भी लिङ्गों में रूप नहीं चलता हो वह अव्यय कहलाता है। **उदाहरण-** ऊँचा, नीचा, दिन, रात, आज, कल, परसों इत्यादि। (नोट-: अव्यय को आगे विस्तार से दिया गया है।)

५. **क्रिया-** कर्ता द्वारा जो भी कार्य सम्पादित होता है वह **क्रिया** या **आख्यात** कहलाती है। **उदाहरण-** पढना, खेलना, जाना, देखना, भोजन करना, पूजा करना इत्यादि।

क्रिया रूप (धातु)- संस्कृत की क्रियायें जिस मूल से बनती हैं, उन्हें धातु कहते हैं। जैसे सः पुस्तकम् पठति। (यह पुस्तक पढता है।) वाक्य में 'पठति' (पढ़ता है) के द्वारा पढ़ने का होना पाया जाता है। अतः 'पठति' क्रिया है यह पठ् मूल से बनती है। इस तरह 'पठ्' धातु है।

क्रिया के भेद - क्रियायें दो प्रकार की होती हैं 1. सकर्मक क्रिया तथा 2. अकर्मक क्रिया।

१. **सकर्मक क्रिया -** जो क्रियायें अपना कर्म रखती है अर्थात् जिनके व्यापार का फल कर्ता को छोड़कर किसी अन्य पर पड़ता है, सकर्मक क्रियाये कही जाती हैं। क्रिया के आगे किसको अथवा क्या लगाने के उत्तर में आने वाले शब्द कर्म होता है। जैसे सः पुस्तकम् पठति। (वह पुस्तक पढ़ता है) में पठति क्रिया का फल पुस्तक पर पड़ रहा है और क्या पढ़ता है? के उत्तर में भी 'पुस्तकम्' आता है। अतः पुस्तकम् और पठति क्रिया सकर्मक है।

२. **अकर्मक क्रिया-** वे क्रियायें जो कर्म नहीं रखते तथा जिनका फल कर्त्ता पर ही पड़ता है, वे अकर्मक क्रियायें कही जाती हैं। जैसे सः स्वपिति। (वह सोता है।) 'स्वप्' (सोने) का फल 'सः' पर है। अतः 'स्वपिति' क्रिया अकर्मक है।

पदिक क्रियाएँ-क्रियाओं के रूप जिस सारणी के अनुसार चलते हैं, वे पद कहे जाते हैं। ये तीन प्रकार के होते हैं।

१.परस्मैपद, २.आत्मनेपद ३.उभयपद

१. **परस्मैपद-** जिनके रूप पठति, पठतः पठन्ति की तरह चलते हैं, वे परस्मैपद कहे जाते हैं।

२. **आत्मनेपद-** जिनके रूप लभते, लभेते, लभन्ते की तरह चलते हैं, वे आत्मनेपद कहे जाते हैं।

३. **उभयपद** -जिनके रूप उक्त दोनों प्रकार से चलते हैं, वे उभयपद कहे जाते हैं।

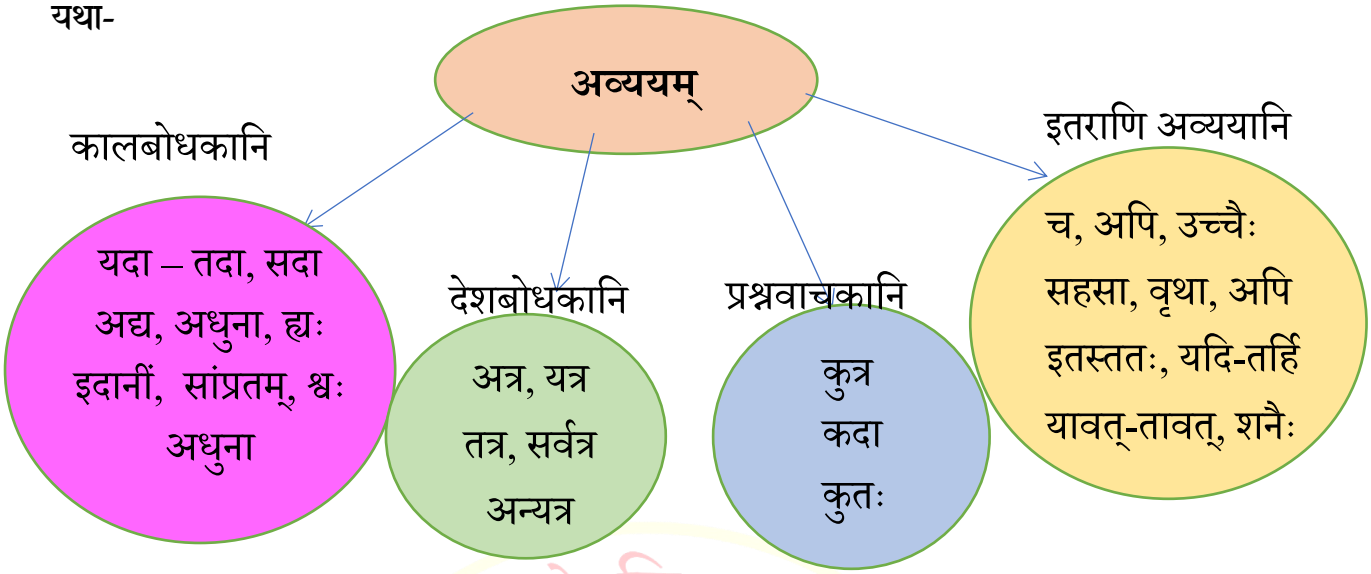
क्रियागण- करोति कुरुतः कुर्वन्ति धातुओं के रूप मुख्य रूप से 10 प्रणालियों पर चलते हैं जो गण कहे जाते हैं। प्रत्येक गण का नाम गण की पहली धातु के नाम पर रखा गया है। वे इस प्रकार हैं-

१. **भ्वादि गण,२.अदादि गण, ३.जुहोत्यादि गण, ४.दिवादि गण, ५.स्वादि गण,६.तुदादि गण, ७.रुधादि गण, ८.तनादि गण, ९.क्रयादि गण तथा १०.चुरादि गण।**

अव्यय पद- तीनों लिङ्गों में, सभी विभक्तियों और सभी वचनों में इनके रूप समान होते हैं। यथा -

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु ।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम् ॥

यथा-



<u>पाठ्यपद्धतौ अन्तर्गतानि अव्ययपदानि</u>

1.	अद्य	-	TODAY , आज
2.	श्वः	-	TOMORROW ,आने वाला कल
3.	ह्यः	-	YESTERDAY, बीता हुआ कल
4.	यदा	-	WHEN (Connecting word with THEN) कब
5.	तदा	-	THEN (Connecting word with WHEN)तब
6.	अधुना	-	NOW अब/अभी / इस समय
7.	इदानीम्	-	NOW अब/अभी / इस समय
8.	साम्प्रतम्	-	NOW अब/अभी / इस समय
9.	अत्र	-	HERE यहाँ
10.	यत्र	-	WHERE (Connecting word with THERE)जहाँ
11.	तत्र	-	THERE (Connecting word with WHERE)वहाँ
12.	सर्वत्र	-	EVERYWHERE सभी जगह
13.	अन्यत्र	-	SOMEWHEREअन्य जगह
14.	कुतः	-	FROM WHERE कहां से
15.	कुत्र	-	WHERE कहां?
16.	कदा	-	WHEN कब?

17. च - AND और/तथा

18. अपि - ALSO भी

19. उच्चैः - LOUDER / HIGH ऊँचे /ऊपर

20. सहसा - SUDDENLY/ UNEXPECTEDLY / QUICKLY अचानक

21. वृथा - VAIN / USELESS बेकार/ निरर्थक

22. इतस्ततः - HERE AND THERE यहाँ-वाहाँ

23. यदि-तर्हि - IF-THEN (Used to combine two sentences into one) यदि-तभी

24. यावत्-तावत् - WHEN –TILL THAT TIMEजब तब

25. शनैः - SLOWLY धीरे

अत्र अव्ययानां प्रयोगः उदाहरणानां साहाय्येन जानीमः।

अद्य - TODAY **आज**

यदा **अद्य** इत्यव्ययस्य प्रयोगं कुर्मः तदा क्रियापदं वर्तमानकाले (लट् लकारे) एव स्यात् ।

- **अद्य** संस्कृतपरीक्षा भवति । आज संस्कृत परीक्षा होगी।
- **अद्य** पशुमहोत्सवः भवति । आज पशुमहोत्सव/मेला होगा।
- सः **अद्य** विद्यालयं गच्छति । वह आज विद्यालय जा रहा है।
- **अद्य** सोमवासरः भवति। आज सोमवार है।
- **अद्य** मम जन्मदिनम् अस्ति ।आज मेरा जन्मदिन है।

श्वः - TOMORROW

यदा **श्वः** इत्यव्ययस्य प्रयोगं कुर्मः तदा क्रियापदं भविष्यकाले (लृट् लकारे) एव स्यात् ।

- लता **श्वः** पुस्तकं पठिष्यति । लता कल पुस्तक पढेगी।
- अहं **श्वः** देवालयं गमिष्यामि। मैं कल देवालय(मन्दिर) जाउँगा।
- **श्वः** कः मया सह खेलिष्यति ? कल मेरे साथ कौन खेलेगा?
- मम पिता **श्वः** विद्यालयम् आगमिष्यति । मेरे पिता जी कल विद्यालय में आएंगे।

- सर्वे छात्रा: **श्वः** भ्रमणार्थं कन्याकुमारीं गमिष्यन्ति । सभी छात्र कल घूमने के लिए कन्याकुमारी जाएँगे।

ह्यः - YESTERDAY

यदा **ह्यः** इत्यव्ययस्य प्रयोगं कुर्म: तदा क्रियापदं भूतकाले (लङ् लकारे) एव स्यात् ।

- **ह्यः** कः वासरः आसीत् ? कल कौन सा दिन था?
- **ह्यः** त्वं चलच्चित्रं द्रष्टुम् अगच्छः ।कल तुम चलचित्र(फिल्म) देखने के लिए आए थे।
- **ह्यः** मम विद्यालयस्य वार्षिकोत्सवः आसीत् ।कल मेरे विद्यालय का वार्षिकोत्सव था।
- नगरे **ह्यः** वृष्टि: अभवत् ।कल नगर में बारिश हुई थी।
- अहं **ह्यः** जन्तुशालाम् अगच्छम् ।मैं कल जन्तुशाला में गया था।

यदा- तदा - WHEN-THEN (Connecting wordS)

- **यदा** सूर्यः उदेति **तदा** कमलानि विकसन्ति । जब सूर्य उदित होगा तब कमल खिलेगा।
- **यदा** अध्यापकः कक्षां प्रविशति **तदा** छात्राः उत्तिष्ठन्ति ।जब अध्यापक कक्षा में प्रवेश करेंगे तब छात्रगण खडे हो जाएँगे।
- **यदा** प्रवर्षः भवति **तदा** जलोपप्लवः भवति । जब ज्यादा वर्षा होगी तब बाढ आएगी।
- **यदा** सिंहराज: गर्जति **तदा** जन्तव: भयभीता: भवन्ति ।जब सिंहराज (शेर) गरजता है तब सभी जन्तु भयभीत हो जाते हैं।
- **यदा** वृष्टि: भवति **तदा** जना: छत्रम् उद्घाटयन्ति ।जब वर्षा होती है तब छाता खोला जाता है।

अधुना - NOW **अब**

- छात्र: **अधुना** पाठं पठति ।छात्र अभी पाठ कर रहा है।
- त्वम् **अधुना** कुत्र गच्छसि ? तुम अभी कहा जा रहे हो?
- **अधुना** किं करणीयम् ? इस समय क्या करना चाहिए?
- **अधुना** अत्र वृष्टि: प्रचलति । अभी यहाँ पर वर्षा हो रही है।
- **अधुना** गृहकार्यं कुरु । अभी गृह कार्य करो।

इदानीम् - NOW अभी

- **इदानीम्** अहं लिखामि । अभी मैं लिख रहा हूँ।

- **इदानीं** यानम् आगच्छति । अभी यान (गाडी) आ रहा है।
- **इदानीं** वायुमण्डलं दूषितं भवति। अभी वायुमण्डल दूषित हो गया है।
- **इदानीं** विद्यालये विराम: वर्तते । अभी विद्यालय में विराम /छुट्टी है।
- **इदानीं** भोजनं कुरु । अभी भोजन करो।

साम्प्रतम् - NOW अभी

- **साम्प्रतं** कार्यं कुरु । अभी कार्य करो।
- त्वं **साम्प्रतं** ग्रामं गच्छ । अभी तुम गाँव जाओ।
- **साम्प्रतं** किं करणीयम् ? अभी क्या करना चाहिए?
- सः **साम्प्रतं** दूरदर्शनं पश्यति ।वह अभी दूरदर्शन देख रहा है।
- अहं **साम्प्रतं** आपणं गच्छामि । **मैं** अभी बाजार जाता हूँ ।

अत्र – HERE यहाँ

- त्वं **अत्र** आगच्छ ।तुम यहाँ आओ।
- **अत्र** जीवितं दुर्वहं जातम् । यहाँ जीवित रहना दुर्लभ है।
- **अत्र** व्याघ्र: जम्बूकः च आगच्छत: । यहाँ बाघ और जम्बूक(भालू) आए थे।
- **अत्र** एक: विषसर्प: अस्ति । यहाँ पर एक विषसर्प है।
- मम गृहम् **अत्र** अस्ति । मेरा घर यहाँ पर है।

यत्र-तत्र – WHERE-THERE (Connecting word) **जहाँ- तहाँ**

- **यत्र** पुष्पाणि सन्ति **तत्र** भ्रमराः आगच्छन्ति ।जहाँ पर फूल होते हैं भ्रमर वहीं होते हैं।
- **यत्र** जलं **तत्र** जीवनम् ।जहाँ पर जल है वही जीवन है।
- **यत्र** धूम: अस्ति **तत्र** अग्नि: अपि अस्ति ।जहाँ पर धूआ है वही अग्नि होती है।
- **यत्र** सा धूर्ता वसति **तत्र** गम्यताम् ।जहाँ पर वह धूर्त रहती है वही जाइए।
- **यत्र** वातावरणं स्वच्छं भवति **तत्र** जीवनं सुकरं भवति । जहाँ पर वातावरण शुद्ध है वही पर जीवन अच्छा होता है।

सर्वत्र - EVERYWHERE **सभी जगह**

- **सर्वत्र** निर्मलं जलम् अस्ति । सभी जगह निर्मल(स्वच्छ) जल है।

- **सर्वत्र** जलेपप्लवः सञ्जातः । सभी जगह जल से भरा है।
- **सर्वत्र** जनाः भ्रमन्ति । सभी जगह मनुष्यलोग घूमते हैं।
- वायु: **सर्वत्र** वहति । वायु सभी जगह बह रही है।
- भारते **सर्वत्र** संस्कृतं पाठ्यते ।भारत में सभी जगह संस्कृत पढाई जाती है।

अन्यत्र - SOMEWHERE ELSE **अन्य जगह**

- **अन्यत्र** जलम् अस्ति । अन्य जगह जल है।
- सः **अन्यत्र** गच्छति ।वह अन्य जगह जाता है।
- स: अत्र नास्ति **अन्यत्र** अन्वेषणं करोतु । वह यहाँ पर नहीं है, अन्य जगह खोजिए।
- मम गृहम् **अन्यत्र** अस्ति ।मेरा घर अन्य जगह पर है।
- मम पिता **अन्यत्र** कार्यं करोति ।मेरे पिता जी अन्य जगह पर कार्य करते हैं।

(नोट- "त्र" युक्तानि अव्ययानि स्थानबोधकानि भवन्ति) जैसे-अत्र,तत्र,यत्र सर्वत्र आदि।

कुतः - FROM WHERE ? **कहाँ से**

- व्याघ्रः **कुतः** आगच्छति ? बाघ कहाँ से आ रहा है?
- नदी **कुतः** प्रवहति? नदी कहाँ से बह रही है।
- युवां **कुतः** आगच्छथ: ? तुमदोनों कहाँ से आ रहे हो?
- **कुत:** आगच्छसि मातुलचन्द्र ! ? मातुलचन्द्र तुम कहाँ से आ रहे हो?
- त्वं **कुत:** संस्कृतं पठितवान् ? **तुम** कहाँ से संस्कृत पढे हो?

(नोट-: कुत: इति प्रश्नवाचकम् अव्ययम् अस्ति)

कुत्र -WHERE ? **कहाँ**

- भवान् **कुत्र** वसति ? आप कहाँ निवास करते हैं?
- सः **कुत्र** कार्यं करोति ? वह कहाँ पर काम करता है?
- व्याघ्रः **कुत्र** गर्जति ? बाघ कहाँ गरज रहा हैं?
- **कुत्र** गमिष्यसि मातुलचन्द्र ! ? मातुलचन्द्र कहाँ गया है?
- त्वं **कुत्र** गच्छसि ? तुम कहाँ जा रहे हो?

(नोट-:कुत्र इति प्रश्नवाचकम् अव्ययम् अस्ति)

कदा - WHEN ? **कब**

- कोकिलः **कदा** कूजति ? कोयल कब बोलती है?
- त्वं **कदा** विद्यालयं गमिष्यसि ? तुम कब विद्यालय जाते हो?
- सूर्यः **कदा** उदेति ? सूर्य कब उदित होता है?
- सः **कदा** ग्रामं गमिष्यति ? वह कब गाँव में जाता है?
- परीक्षा **कदा** भविष्यति ? परीक्षा कब होगी?

(नोट-:कदा इति प्रश्नवाचकम् अव्ययम् अस्ति)

च - AND **और /तथा**

- जम्बुकः व्याघ्रः **च** तत्र गच्छतः । भालू और बाघ वहाँ जाते हैं।
- लता मेधा **च** विद्यालयं गच्छतः।लता और मेघा विद्यालय जा रहे हैं।
- कृष्णः पठने वंशीवादने **च** कुशलः आसीत् ।कृष्ण पढने और वंशीवादन में कुशल है।
- सः पत्रं पुष्पं **च** नयति।वह पत्र और फूल लाता है।
- अहं संस्कृतं गणितं विज्ञानं **च** पठामि । मैं संस्कृत गणित और विज्ञान पढता हूँ।

अपि - ALSO **भी**

- सूर्यः शोभते । चन्द्रः **अपि** शोभते । सूर्य शोभित हो रहा है और चन्द्र भी शोभित हो रहा है।
- अहम् **अपि** विद्यालयं गमिष्यामि । मैं भी विद्यालय जाउँगा।
- लवः गायति । कुशः **अपि** गायति । लव गा रहा है कुश भी गा रहा है।
- **अपि** कुशलं महाराजस्य ?महाराज भी कुशल हैं?
- **अपि** गृहकार्यं कृतम् ? गृहकार्य को भी कर दिया।

(नोट-: अपि इति अव्ययं क्वचित् प्रश्नवाचकपदरूपेण अपि प्रयुज्यते ।)

उच्चैः - LOUDER / HIGH **ऊँचे**

- मेघानाम् **उच्चैः** स्थितिः भवति । मेघों के ऊँचे स्थिति (आकाश के ऊँचे स्थान में)होते हैं।
- सिंहः **उच्चैः** गर्जति ।सिंह ऊँचे स्वर (जोर) से गरजता है।
- छात्रः **उच्चैः** श्लोकालापनं करोति । छात्र ऊँचे आवाज में श्लोक का पाठ कर रहा है।

- क्रुद्धः राक्षसः **उच्चैः** आक्रोशति ।क्रोधी राक्षस ऊँचे स्वर से गुस्सा करता है।
- शिक्षिका **उच्चैः** वदति । शिक्षिका जोर से बोल रही है।

सहसा - SUDDENLY / UNEXPECTEDLY- **अचानक**

- मार्गे **सहसा** व्याघ्रः आगच्छत् । मार्ग में बाघ अचानक आ गया।
- ग्रामे **सहसा** वर्षा अभवत् । गाँव में अचानक वर्षा आ गई।
- **सहसा** विदधीत न क्रियाम् । कोई भी कार्य अचानक नहीं करनी चाहिए।
- ह्यः वर्षासु **सहसा** वृक्षः पतितः ।कल के बारिश में वृक्ष अचानक सा गिर गया।
- कक्षायां छात्राः **सहसा** अहसन् ।कक्षा में छात्र अचानक सा हस पडा।

वृथा - IN VAIN निरर्थक,**बेकार**

- **वृथा** वृष्टिः समुद्रेषु । समुद्र में बारिश होना निरर्थक है।
- **वृथा** तृप्तस्य भोजनम् । तृप्त को भोजन कराना निरर्थक है।
- सः **वृथा** उपदेशं करोति । वह बेकार उपदेश करता है।
- दिवा दीपप्रज्वालनं **वृथा** ।दिन में दीप जलाना निरर्थक है।
- गुरूपदेशः **वृथा** न स्यात् ।गुरु का उपदेश निरर्थक नहीं होता है।

इतस्ततः - HERE AND THERE-**इधर उधर**

- बालकः उद्याने **इतस्ततः** भ्रमति । बालक उद्यान में इधर-उधर घूमता है।
- वानराः **इतस्ततः** कूर्दन्ति ।बन्दर इधर-उधर कूँदते है।
- लीला कक्षायाम् **इतस्ततः** भ्रमति ।लीला कक्षा में इधर-उधर घूमती है।
- वने पशवः **इतस्ततः** चरन्ति ।वन में पशु इधर-उधर विचरन करते हैं।
- सिंहः भोजनार्थम् **इतस्ततः** अटति । सिंह भोजन के लिए इधर-उधर घूमता है।

यदि-तर्हि - IF-THEN (Used to combine two sentences into one) **यदि -तभी**

- **यदि** परिश्रमः क्रियते **तर्हि** सफलता प्राप्यते । यदी परिश्रम करेंगे तभी सफलता मिलेगी।
- **यदि** आत्मविश्वासः स्यात् **तर्हि** कार्यसिद्धिः भविष्यति ।यदि आत्मविश्वास है तभी कार्य पूर्ण होगी।

- **यदि** वृष्टिः भवति **तर्हि** शस्याः समृद्धाः भविष्यन्ति ।यदि बारिश होगी तभी खेत खलिहान समृद्ध होगा।
- **यदि** छात्र: सम्यक् पठेत् **तर्हि** परीक्षायां विजय: सुनिश्चित: भवति । यदि छात्र अच्छे से पढाई करेगा तभी परीक्षा मे विजय प्राप्त करेगा।
- **यदि** प्राचार्य: अनुमतिं यच्छेत् **तर्हि** छात्राणां विनोदयात्रा भविष्यति । यदि प्राचार्य अनुमति देंगे तभी मनोरंजनयुक्त यात्रा कर सकेंगे।

यावत्-तावत् - WHEN –TILL THEN **जब तक -तब तक**

- **यावत्** अध्यापकः कक्षां न प्रविशति **तावत्** छात्राः कोलाहलं कुर्वन्ति। जब तक अध्यापक कक्षा में नहीं आयेंगे,तब तक बच्चे कोलाहल (हल्ला) करते रहेंगे।
- **यावत्** भूमौ सरितः गिरयश्च स्थास्यन्ति **तावत्** रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति। जब तक भूमि पर नदी और पर्वत रहेंगे तब तक रामायण कथा का लोक में प्रसारित रहेगा।
- **यावत्** विजयं न प्राप्नोति **तावत्** परिश्रमं करोतु । जब तक विजय न प्राप्त न कर लो तब तक परिश्रम करते रहो।
- **यावत्** प्रकाशः न प्रसरति **तावत्** अन्धकारः भवति । जब तक रोशनी न आएगी तब तक अन्धकार रहेगा।
- **यावत्** परिश्रमं न करोषि **तावत्** कार्यं न प्राप्स्यसि । जब तक परिश्रम न करोगे तब तक कार्य प्राप्त नहीं होगा।

शनैः - SLOWLY **धीरे-धीरे**

- उष्ट्रः **शनैः** चलति ।ऊँट धीरे धीरे चलता है।
- गजः **शनैः** भारं वहति।हाथी धीरे धीरे भार ढोती है।
- कूर्म: **शनैः** गच्छति ।कछुआ धीरे धीरे चलता है।
- वृद्ध: **शनैः** चलति ।वृद्ध धीरे धीरे चलते हैं।

उपसर्ग

उपसर्ग शब्द उप+सृज् धातु से बना है ,उप=समीप सृज् =का अर्थ सृजन -रचना करना, जिन क्रियाओं के समीप जिन पदों को लाने से विशेष अर्थ का व्युत्पादन करे वे पद् उपसर्ग पद कहलाते हैं।

लौकिक संस्कृत में २२उपसर्ग होते हैं-१.प्र,२.परा,३.अप, ४.सम्, ५.अनु, ६.अव, ७.निस्, ८.निर्, ९.दुस्,१०.दुर्,११.वि, १२.आङ्, १३नि, १४.अधि,१५.अपि, १६.अति,१७.सु,१८.उत्, १९.अभि,२०.प्रति, २१.परि,२२.उप् । इन उपसर्गों का प्रयोग क्रिया से पूर्व तथा व्यवधानरहित होता है। क्रिया से ठीक पहले उपसर्ग होते हैं तथा इससे जुडे रहते हैं इस कारण क्रियावाची पद के अर्थ में बदलाव लाते हैं, इनकी विशेषता है कि एक ही क्रिया के साथ अनेक उपसर्ग जुडकर अनेक अर्थों को प्राप्त कराने में ये सहयोग प्रदान करते हैं।

जैसे- **हृ** धातु में आङ् उपसर्ग जुडने से **आहार**, वि उपसर्ग जुडने पर **विहार**, सम् उपसर्ग जुडने पर **संहार** आदि अनेकार्थ फलों को प्राप्त कराते हैं। परन्तु वेदों में उपसर्गों का क्रिया के साथ व्यवधानयुक्त प्रयोग भी देखा जाता है। उपसर्ग तथा क्रिया के बीच में अन्य पद भी आ जाते हैं और कभी-कभी क्रि के बाद भी इनका प्रयोग मिलता है -

जैसे- प्र तद् विष्णुः स्तवते, प्र पर्वतानामुशती, उपस्थादश्वे इव विजिते हासमाने, गावेव शुभ्रा मातरा रिहाणे विपाट् छुतद्री पयसा जवेते। इन्द्रौ हरीभ्यां याह्या।

काल-लकार- हिन्दी व्याकरण में प्रमुखरूप से तीन काल होते हैं- १.वर्तमानकाल, २.भूतकाल, ३.भविष्यत्काल।

१. **वर्तमानकाल**- जो समय वर्तमान में चल रहा है,जैसे-राम पढता है।

२. **भूतकाल**- जो समय बीत चुका है,जैसे-राम पढ लिया है,या पढा था।

३. **भविष्यत्काल**-जो समय या कार्य भविष्य में होने वाला है,जैसे-राम पढेगा।

संस्कृतवाङ्मय में भी मुख्य रूप में ३ ही काल स्वीकार किया गया है,परन्तु भेद रूप में १० प्रकार के काल को १० लकारों में उल्लेखित किया गया है-१ लट् २.लिट् ३.लुट् ४.लृट् ५.लेट् ६.लोट् ७.लङ् ८.लिङ् ९लुङ् १०.लृङ् । इनको कालों में इस प्रकार विभाजित किया जा सकता है-

१. **वर्तमानकाल के लिए**--- १.लट् लकार-उदाहरण-भवति

२. **भूतकाल के लिए**---२.लुङ्(अद्यतन भूत), ३.लङ्(अनद्यतनभूत),४.लिट्(परोक्षभूत) उदाहरण-अभूत्, अभवत्, वभूव।

३. **भविष्यत्काल के लिए**—५.लृट्(अद्यतन भविष्य),६.लुट्(अनद्यतन भविष्य) ७.लृङ्(पूर्व क्रिया पर आश्रित) उदाहरण-भविष्यति,अभविष्यत्

आशीष-आशीर्वाद अर्थ में- ८.लिङ्(भूयात्) ९.विधिलिङ्-(भवेत्),१०.लोट्-आज्ञार्थक-(भवतु)

विशेष- लेट् लकार वेद में प्रयुज्य होते हैं।

लिङ्ग परिचय-

जिसके द्वारा पुरुष,स्त्री,या किसी अन्य जाति के स्वरूप का ज्ञान होता है उसे पुल्लिङ्ग,स्त्रीलिङ्ग एवं नपुंसकलिङ्ग संज्ञा से जानते हैं। संस्कृत वाङ्मय में तीन प्रकार के लिङ्ग होते हैं,पुल्लिङ्ग,स्त्रीलिङ्ग एवं नपुंसकलिङ्ग।

सुबन्त - सुप् प्रत्ययान्त सुबन्त। सुबन्त, तिङन्त की पदसंज्ञा होती है। साथ ही सुबन्त की प्रातिपदिक संज्ञा भी होती है। यथा - वेद + सु (वेदः)। वेद प्रातिपदिक है तथा सु प्रत्यय है, इसमें लिङ्ग, विभक्ति और वचन होते हैं।

वास्तव में संस्कृत भाषा में शब्द क्रिया तथा प्रत्ययों के योग से बने हैं इन प्रत्ययों से लिंग का निर्धारण हो जाता है। यथा -

पुल्लिंग विधायक प्रत्यय -घञ् प्रत्यय से बने शब्द पुल्लिंग होते हैं, घञ् में केवल अ शेष रहता है तथा पूर्व में स्थित क्रिया के स्वर में वृद्धि हो जाती है -

रम् + घञ् = राम

पठ् + घञ् = पाठ

इमनिच् प्रत्यय से बने शब्द पुल्लिंग होते हैं -

मह + इमनिच् = महिमन् = महिमा

लघु + इमनिच् लघिमन् = लघिमा

स्त्रीलिंग विधायक प्रत्यय - क्तिन् प्रत्यय से बने शब्द स्त्रीलिंग होते हैं –

कृ + क्तिन् = कृतिः

गम् + क्तिन् = गतिः

नपुंसक लिंग विधायक प्रत्यय -

ल्युट् प्रत्यय से बने शब्द नपुंसकलिंग होते हैं -

पठ् + ल्युट्= यु= अन = पठनम्

गम् + ल्युट् = यु = अन = गमनम्

दृश् + ल्युट् = यु = अन = दर्शनम्, इत्यादि।

सप्तविभक्ति परिचय- संस्कृतभाषा में सुबन्त पदों के तीन लिङ्ग होते हैं।यथा- पुँल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग एवं नपुंसकलिङ्ग तथा स्पष्ट अर्थ अवबोध के लिए सप्त विभक्तियाँ भी होती हैं। प्रथमा विभक्ति, द्वितीया विभक्ति, तृतीया विभक्ति, चतुर्थी विभक्ति, पञ्चमी विभक्ति, षष्ठी विभक्ति और सप्तमी विभक्ति। सम्बोधन प्रथमा विभक्ति अवान्तर भेद होता है।

वचन-एकवचन, द्विवचन एवं बहुवचन सुबन्त पदों के तीन वचन भी होते हैं।

अर्थात् एक व्यक्ति या वस्तु का बोध कराने के लिए एक वचन, दो व्यक्तियों या वस्तुओं के लिए द्विवचन तथा दो से अधिक व्यक्तियों व वस्तुओं का बोध कराने के लिए बहुवचन का प्रयोग होता है

संधि प्रकरण-

संधि संस्कृत भाषा की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है और इस भाषा का यह सहज स्वभाव है। संधि का अभिप्राय है दो वर्णों का परस्पर मिलना है इन दोनों के संयोग से एक अन्य रूप बन जाता है। वर्णों की अत्यन्त समीपता को संधि या संहिता कहते हैं (परः सन्निकर्षः संहिता) वस्तुत: व्यवहार, बोलचाल में अपनी प्रकृति के अनुसार वर्णों में मिलना हो जाता है। इनका पृथक् पृथक् करके नहीं, अपितु सम्मिलित रूप में उच्चारण हो जाता है। यथा-

राम+अयनम् = रामायणम्, विद्या+आलयः= विद्यालयः, महा+ऋषि= महर्षिः, यदि+अपि =यद्यपि, सत्+आचार: + सदाचारः, तत्+लीनः= तल्लीनः

सहज भाव से उच्चारण हो जाता है। यह संधि एक पद में, धातु-उपसर्ग में तथा समाज में नित्यरूप से होती है, पर वाक्य में बक्ता की इच्छा पर निर्भर है वह वर्णों को पृथक् पृथक् रूप से भी उच्चारण कर सकता है, यथा इदम् आम्रफलम् अस्ति अथवा इदमाम्रफलमस्ति। संधि में पूर्व तथा उत्तरवर्ती दो वर्षों का संयोग होता है और पूर्ववर्ती वर्ण के अनुसार इस संधि का नामकरण होता है।

संहितैकपदे नित्याऽनित्या धातूपसर्गयोः।

नित्या समासे वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते॥

मुख्यरूप से संधि के तीन प्रकार -इस दृष्टि से यह संधि तीन प्रकार की होती है,

1. **स्वरसंधि** 2. **व्यञ्जनसंधि** 3. **विसर्गसंधि**

1. **स्वर सन्धि के प्रकार-** स्वरवर्ण के साथ स्वरवर्ण के मिलने से जो विकार होता है उसे स्वर सन्धि कहते हैं। यह सन्धि मूलत: आठ प्रकार की होती है, यथा-

दीर्घ सन्धि **गुण सन्धि** **वृद्धि सन्धि** **यण सन्धि**

अयादि सन्धि **पूर्वरूप, सन्धि** **पररूप सन्धि** **प्रकृति भाव।**

	सन्धिकार्य	**उदाहरण**
अकः सवर्णे दीर्घः	सवर्णदीर्घः	विद्यालयः, श्रीशः, होतृकारः
वृद्धिरेचि	वृद्धिसन्धिः	संहितैकपदे, तण्डुलौदनम्, वेदैश्वर्यम्
आद्गुणः	गुणसन्धिः	वेदोक्तः, शास्त्रोपदेशः
इको यणचि	यण्-सन्धिः	सुध्युपास्यः, अन्वगच्छत्, पित्रादेशः, लाकृतिः
एङि पररूपम्	पररूपम्	प्रेजते, उपोषति
एङः पदान्तादति	पूर्वरूपम्	एतेऽपि, जशोऽन्ते
प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्	प्रकृतिभावः	श्रुती इमे, बालिके एते, विष्णू इमौ
अचो रहाभ्यां द्वे	द्वित्वकार्यम्	गौर्य्यौ
उपसर्गादति धातौ	वृद्धिसन्धिः	प्रार्च्छति
एचोऽयवायावः	अयादिसन्धिः	कवये, भवनम्, गायकः

2. **व्यंजन अथवा हल् सन्धि** - व्यंजनवर्ण के साथ व्यंजन अथवा स्वरवर्ण का संयोग होने पर जो विकार होता है उसे व्यंजन सन्धि कहते हैं।

जैसे उद् +चारणम्= उच्चारणम्

व्यंजन सन्धि के कई भेद हैं। यहाँ पर कुछ मुख्य भेदों को प्रस्तुत किया जा रहा है।

१.श्चुत्व सन्धि **२.ष्टुत्वसंधि** **३.जश्त्व सन्धि**

इस सन्धि के दो रूप है **(क) पदान्त जश्त्व सन्धि (ख)अपदान्त जश्त्व सन्धि-**

४.अनुनासिक सन्धि **५. चर्त्व सन्धि** **६. अनुस्वार सन्धि** **७ . लत्व सन्धि**

८. छत्व सन्धि **९. तुगागम सन्धि** **१०. षत्व विधान-**

हल् सन्धि

सूत्र	सन्धि	उदाहरण
स्तोः श्चुना श्चुः	श्चुत्व सन्धि	रामश्शेते, रामश्चिनोति, सच्चित्
ष्टुना ष्टुः	ष्टुत्व सन्धि	रामष्षष्ठः, रामष्टीकते, तट्टीका
झलां जशोऽन्ते	जश्त्व सन्धि	वागीशः, सुबन्तम्
यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा	अनुनासिक सन्धि	एतन्मुरारिः, तन्मात्रम्
खरि च	चर्त्व सन्धि	उत्थानम्, लप्स्यते, सत्कारः
शश्छोऽटि	छत्व सन्धि	तच्छिवः
मोऽनुस्वारः	पदान्त-अनुस्वार सन्धि	हरिं वन्दे
नश्चापदान्तस्य झलि	अपदान्त-अनुस्वार सन्धि	यशांसि, आक्रंस्यते
वा पदान्तस्य	पदान्त-परसवर्ण सन्धि	त्वङ्करोषि, त्वं करोषि
अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः	अपदान्त-परसवर्ण सन्धि	शान्तः

विसर्ग सन्धि

सूत्र	सन्धि	उदाहरण
विसर्जनीयस्य सः	विसर्ग के स्थान पर सकारादेश	विष्णुस्त्राता
वा शरि	विसर्ग का विकल्प से विसर्गादेश	हरिः शेते, हरिश्शेते
ससजुषो रुः	सस्य रुः आदेशः	रामर्
अतो रोरप्लुतादप्लुते	रोः उः आदेशः	शिवोऽर्च्यः
रोऽसुपि	अह्नः रेफादेशः	अहर्गणः
रोरि	रेफस्य लोपादेशः	अन्ता राष्ट्रियः
ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः	अणः दीर्घादेशः	पुना रमते, शम्भू राजते,

एत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि	सोर्लोपादेशः	एष विष्णुः, स शम्भुः
सोऽचि लोपे चेत्पादपूरणम्	सोर्लोपादेशः	सैष दाशरथी रामः
हशि च	रोः उः आदेशः	रामो गच्छति

समास परिचय-

समास के पाँच भेद हैं (१)केवल समास (२) अव्ययी भाव समास, (३) तत्पुरुष समास, इसके भेद (अ) कर्मधारय समास, (आ) द्विगु समास. (४) द्वन्द्व समास, (५) बहुव्रीहि समास।

विस्तारूप में समस्त प्रकार के समासों का विवेचन आगे किया जा रहा है –

कारक परिचय-

"साक्षात् क्रियान्वित्वं कारकत्वम्। क्रियाजनकत्वं कारकत्वम्।क्रियानिष्पादकत्वं कारकत्वम्," अर्थात् क्रिया से साक्षात् सम्बन्ध रखने वाले विभक्ति युक्त पदों को कारक कहते हैं जैसे 'राम ने विद्यालय में मोहन के लिए कलम से पत्र लिखा।' इस वाक्य में लिखा क्रिया है। राम ने इसे सम्पन्न किया है। इसका फल 'पत्र' पर पड़ा है। 'कलम' इसमें सहायक है। 'विद्यालय' इसका आधार है तथा 'मोहन' इसका प्रयोजन है। इस प्रकार राम, पत्र, कलम, विद्यालय तथा मोहन का क्रिया से साक्षात् सम्बन्ध है, अतः ये सब कारक हैं।

हिन्दी भाषा में कारकों की संख्या 8 है लेकिन संस्कृत भाषा में 6 ही कारक माने गए हैं। जिनको संस्कृत भाषा में कारक नहीं माना गया है वे सम्बन्ध तथा सम्बोधन कारक हैं। इन दोनों का क्रिया से साक्षात् सम्बन्ध नहीं है, अतः इन दोनों को कारक की श्रेणी में नहीं रखा गया है। जैसे - 'कृष्ण ने पाण्डु के पुत्र अर्जुन से कहा।' इस वाक्य में पाण्डु का सम्बन्ध पुत्र से तो है लेकिन 'कहा' क्रिया से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है। अतः यह कारक नहीं कहा जाएगा। इस प्रकार संस्कृत भाषा में छ कारक (कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण) तथा सात विभक्तियाँ (प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी) होती हैं।

कर्ता कर्म च करणं सम्प्रदानं तथैव च।

अपादानाधिकरणमित्याहुः कारकाणि षट्॥

सामान्य रूप में इनके हिन्दी अर्थ नीचे लिखे जा रहे हैं -

विभक्ति	कारक	चिह्न (हिन्दी में)
प्रथमा	कर्ता	ने
द्वितीया	कर्म	को , TO
तृतीया	करण	से (के द्वारा) BY ,WITH
चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिए, को , FOR
पञ्चमी	अपादान	से (अलग होने के अर्थ में) FROM
षष्ठी	सम्बन्ध	का, की, के, ना, नी, ने, रा, रो, रे OF
सप्तमी	अधिकरण	में, पर, पै, ऊपर, IN /ON
सम्बोधन	सम्बोधन	हे, भो, अरे, ओ

साधारणतया उक्त कथन के अनुसार विभक्तियों का सम्बन्ध क्रिया से होता है, लेकिन कभी-कभी कुछ अव्ययों के योग में विशिष्ट विभक्तियाँ आती हैं। इन्हें 'उपपद विभक्ति' कहते हैं। जैसे- 'अहं रामेण सह विद्यालयं गच्छामि।' इसमें 'सह' के साथ आने के कारण 'रामेण' में तृतीया हुई है, अतः यह उपपद विभक्ति है।

हम यहाँ संक्षेप में कारकों तथा विभक्तियों की पुनरावृति करेंगे -

१. **कर्ता कारक- (प्रथमा विभक्ति)**
२. **कर्म कारक (द्वितीया विभक्ति)**
३. **करण कारक (तृतीया विभक्ति)**
४. **सम्प्रदान कारक (चतुर्थी विभक्ति)**
५. **अपादान कारक (पञ्चमी विभक्ति)**
६. **सम्बन्ध कारक (षष्ठी विभक्ति)**
७. **अधिकरण कारक (सप्तमी विभक्ति)**
८. **सम्बोधन कारक (प्रथमा विभक्ति)**

[इकाई 03]

वैदिक आख्यान का परिचय एवं प्रवचन कौशल का व्यक्तित्व विकास

(क) आख्यान की परिभाषा, महत्त्व एवं प्रयोजन

आख्यान की परिभाषा- "आङ् उपसर्ग पूर्वक 'ख्या-प्रकथन' धातु के संयोग से आख्यान शब्द बनता है। जिसका अर्थ है -मर्यादा पूर्वक किसी बात को बताना या कहना। इसका शाब्दिक अर्थ कथा,कहानी के रूप में भी समझा जाता है।आख्यान शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग **शुक्लयजुर्वेद संहिता** इस मन्त्र में सम्प्राप्त होता है-

मन्त्र- समख्येदेव्याधियासन्दक्षिण्योरुचक्षसा ।मामऽआयुःप्रमोषीर्मोऽअहन्तववीरंविदेयतवदेवि - संदृशि॥ (शु.य.मा.४/२३)

लौकिकशास्त्रों में आख्यान की परिभाषा एवं अर्थ निम्नवत् प्राप्त होता है-

"**वाचस्पत्यम्**" (तारानाथकृत) नामक कोश के प्रथमभाग में आख्यान की व्युत्पत्ति "**आख्यायते अनेनेति आख्यानम्**" की गई है। अर्थात्- जिसके द्वारा किसी के जीवनी से संबन्धित विषय का प्रतिपादन अथवा ईश्वर महिमा की बखान की जाए वह (आख्यान -कथा) कहलाती है।

साहित्यदर्पण में आख्यान को"**पुरावृत कथन**" कहा गया है।

कथा और आख्यान में अन्तर -

कथा - वास्तविक या अवास्तविक घटितों का एक अनुक्रम है,यह तार्किक,एक रैखिक और कालानुक्रम की दृष्टि से जुडा होता है,तथा चरित्रों को समाविष्ट करता है।

आख्यान-उन घटितों के अनुक्रम का पुन: प्रस्तुतीकरण करता है।

जैमिनीसूत्र **"आख्या-प्रवचनात्"** के अनुसार ऋषिओं के ध्यानावस्था में जो वेदस्वरूप का उन्हें दर्शन हुआ वह अन्तर्मुखी ज्ञान को बहिर्मुखी रूप में पुनर्पाठ किए, अत: उनका आख्यान -प्रवचन ही साक्षात वेद है।।

आख्यान का महत्त्व एवं प्रयोजन -

श्वेताश्वतरोपनिषद के अनुसार **"न वेदा:प्रलीयन्ते"**प्रलयावस्था में भी वैदिक आख्यान-कथा का नाश नहीं

होता है। **"यस्यनि:श्वसितंवेदा:"** वेद परमात्मा का श्वास -प्राण है।**"व्याप्तिमत्वात्तु शब्दस्य"** निरुक्त के अनुसार शब्दध्वनि नित्य रूप से आकाश में परिव्याप्त रहता है। शब्दध्वनि का कभी नाश नहीं होता अत वेदविद्या सनातन है नित्य है । निरुक्त वचन के अनुसार **"साक्षात्कृत-धर्माण ऋषयो वभूवु:। तेऽवरेभ्योऽसाक्षात्कृत-धर्मभ्य उपदेशेन मन्त्रान् सम्प्रादु:।"** वेद के परम धर्मतत्त्व को साक्षात दर्शन करने वालों को ऋषि कहते हैं , जिन धर्मजिज्ञासुओं को यह विशेष तपोबल प्राप्त नहीं था उनके लिए ही वेदों का प्रवचन -उपदेश दिए ,यही से वेद की प्रवचन परम्परा प्रारम्भ हुई। ये ऋषि अपने तपोबल से आकाश में व्याप्त शब्दध्वनि रूपी वेद को पुन: प्राप्त कर लेने से ऋषि कहलाए।

"ऋषि-दर्शनात् स्तोमान्। ददर्शेत्यौपमन्यव:। "तद्यदेनांस्तपस्यमानान् ब्रह्म स्वयम्भ्वभ्यानर्षत्त ऋषयोऽभवंस्तदृषीणामृषित्वम्"(निरुक्त-2अ./3पाद)

निरुक्त के अनुसार पुरुषविद्या यानी लौकिकविद्या "अनित्यविद्या " है। अनित्यविद्या में स्वर का प्रयोग नहीं होता है।इस प्रकार लौकिक पदों में स्वरपाठ न होने पर **कर्मसम्पत्ति -अर्थात्** अर्थ सम्पत्ति (यथार्थ क्रियाफल) का अभाव होता है।

अत: अर्थ एवं क्रियाफल की नित्योपस्थिति स्वरों में ही होने के कारण वेदों में सस्वर मन्त्रों का पाठविधान पूर्वक यागादिकर्म विधान करने का ईश्वरादेश है।

"पुरुषविद्याऽनित्यत्वात् कर्मसम्पत्तिर्मन्त्रोवेदे" । (निरुक्त-1अ./1पाद)

उपर्युक्त विषयों के अनुसार वेद-प्रवचन की विषेशता एवं महत्व सर्वशास्त्रोपरि सर्वमान्य है।

वेदों में प्रवचन परम्परा-

आचार्य द्वारा शिष्य को वेद प्रवचन की शिक्षा- कृष्णयजुर्वेद तैत्तिरीयशाखा के शिक्षावल्ली के अनुसार विद्या संबंधित महासंधि के विषय में आचार्य द्वारा अपने शिष्य को वेद प्रवचन की शिक्षा देना ही गुरु-शिष्य के मध्य जुडने का कारक है।गुरु द्वारा शिष्य को बताई गई यही विद्यारूपी प्रवचन विद्यासंधि,संहिता कहलाती है।**"आचार्यः पूर्वरूपम्। अन्तेवास्युत्तररूपम्। विद्या सन्धि:। प्रवचनꣳ सन्धानम्। इत्यधिविद्यम्॥ (तै. उ. शिक्षावल्ली)**

स्वाध्याय एवं प्रवचन (अध्यापन) में प्रमाद का निषेध -"स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्" तै. उ. शिक्षावल्ली में गुरु द्वारा शिष्य को उपदेश देने के सन्दर्भ में स्वाध्याय एवं प्रवचन में प्रमाद(आलस्य) न

करने का कठोर आदेश प्राप्त होता है ।

(ख) आख्यान का स्वरूप एवं वर्गीकरण (वैदिक एवं पौराणिक)

आख्यान को प्रमुख दो वर्गों में विभाजित किया गया है,१.वैदिक २.पौराणिक

१. **वैदिक आख्यान-** यह आख्यान परम्परा सृष्टि प्रारम्भ से पूर्व में ही प्रचलित थी, श्वेताश्वतरोपनिषद के अनुसार "यो ब्रह्माणं विदधातिपूर्वम्" परमपिता परमेश्वर ने सर्वप्रथम ब्रह्मा जी को वेदों का प्रवचन दिए।

२. **पौराणिक आख्यान-**वेदों की भाषा क्लिष्टता का अनुभव होने पर वेदव्यास द्वारा वेदों के सरलभाषा में अनुवाद कथा रूप में प्रचलन होना ही लौकिक या पौराणिक काथारूपी आख्यान कहलाता है।

(ग) प्रवचन हेतु शारीरिक एवं मानसिक सज्जता (वेशभूषा, हाव-भाव)

वक्ताको प्रवचन करनेके लिए एक दिन पहले ही क्षौर करा लेना चाहिए। प्रवचनकर्ता को सीले वस्त्र नहीं पहनना चाहिए, धौतवस्त्र अथवा रेशमी पीताम्बरी वस्त्र पहनकर, ललाट पर भस्म, चन्दन, धारणकर बिल्कुल सीधा बैठकर ही कथा या प्रवचन करे। वक्ता प्रतिदिन सूर्योदयसे पूर्व ही स्नानादि करके सन्ध्या वन्दनादिका नियम पूरा कर ले और कथामें कोई विघ्न न आये, इसके लिए नित्यप्रति गणेशजीका पूजन कर लिया करे। भागवतआदि सप्ताह-प्रारम्भ होनेके एक दिन पूर्व ही देवस्थापन, पूजनादि कर लेना उत्तम होता है।

कथा-व्यास के लक्षण :-

विरक्तो वैष्णवो विप्रो, वेदशास्त्र विशुद्धिकृत्। दृष्टान्तकुशलो धीरो, वक्ता कार्योऽतिनिःस्प हः॥

अनेकधर्मविधान ताः, स्त्रैणाः पाखण्डवादिनः। शुकशास्त्रकथोच्चारे, त्याज्यास्ते यदि पण्डिताः ॥

प्रथम लक्षण - वक्ता 'विरक्त हो। (संसार से अथवा मन से)

द्वितीय लक्षण - वैष्णव हो। यहाँ पर वैष्णव से तात्पर्य है कि वक्ता अपने जिस इष्ट -भगवान के विषय में कथा -प्रवचन करे उसका वह परम भक्त होना चाहिए। (बाह्य एवं आतंरिक दृष्टि से)

तृतीय लक्षण - विप्र हो। (ब्रह्मवित् हो) जो विशिष्ट प्रज्ञावान हो, सदाचारी हो

चतुर्थ लक्षण - वेद-शास्त्रों का विशुद्ध ज्ञाता हो ।

पञ्चम लक्षण - दृष्टांत (शास्त्रीय) देने में कुशल हो (अर्थात् ग्रन्थ की कथा में छिपे रहस्य को समझाने हेतु दिए गए छोटे दृष्टांत जिनसे प्रसंगान्तर प्रतीत न हो उनको सरल, सहज, सुगम बनाकर ऐसे समझाए जिससे खेत में कार्यरत कृषक अथवा पढ़े-लिखे लोगों को भी समझ में आ जाए।)

षष्ठ लक्षण - धीर हो अर्थात् धैर्यवान हो।

सप्तम लक्षण- अति निःस्पृही हो। (अर्थात् लोभी-लालची न हो)साथ ही जो कथा की दक्षिणा तय न करे, जिसका मन धन में न हो, व्यास-गद्दी की मर्यादा का जो ध्यान रखे। "असन्तुष्टाद्विजा:नष्टा:"(भागवत् पु.)

अष्टम लक्षण- अनेक धर्मों में जिसका चित्त भ्रमित न हो। वक्ताको असूया तथा परनिन्दा आदि दोषसे सर्वथा रहित निःस्पृह होना चाहिए।

(अर्थात् -जीवन के परम-चरम लक्ष्य उस अखंड सत्य सत्ता परमात्मा को एक पल भी न भूले)

नवम लक्षण - स्त्रीलोलुप न हो तथा कथावाचक पुरुष ही हो।

दशम लक्षण - पाखंडी न हो अर्थात् उच्चारण तथा आचरण में यथासंभव भेद न हो।

हमारे शास्त्र ही हैं, जो हमें बताते हैं कि पवित्रतम व्यासपीठ' का सच्चा अधिकारी कौन अथवा कैसा होना चाहिए।

विशेष-अगर किसी साधक में उपर्युक्त प्रमुख १० लक्षणों में से एक भी लक्षण कम है तो उसे 'व्यासपीठ' पर बैठकर इसकी मर्यादा को खण्डित नहीं करना चाहिए। यदि शास्त्रानुसार कोई साधक उपर्युक्त गुणों से युक्त होकर 'व्यासपीठ को ग्रहण करता है तो उसके द्वारा किये हुए उपदेश का प्रभाव श्रोताओं पर निःसंदेह होता है।

कथावाचक के गुण एवं नियम- कथावाचक विद्वान्, सर्वशास्त्रकुशल, दृष्टान्त देकर श्रोताओंको समझानेमें समर्थ, सदाचारी एवं सद्गुणसम्पन्न ब्राह्मण हों। उनमें सुशीलता, कुलीनता, गम्भीरता तथा श्रीकृष्णभक्तिका होना भी परमावश्यक है।

(घ) प्रवचनों में सहायक शब्दावलियाँ

कथावाचक द्वारा प्रवचन करते समय अपने श्रोतागणों तक अपनी कथा पहुचाने के लिए तथा उनको कथा में ध्यानाकृष्ट करने के लिए प्रवचन के मध्य-मध्य में सम्बोधनात्मक शब्दावलियों का प्रयोग करते हैं ,फलस्वरूप श्रोतागणों के ऊपर इसका प्रत्यक्ष प्रभाव दिखता है। ये शब्दसंग्रह

कथावाचकों द्वारा ही सुनकर लिखा जा रहा है।ऐसे सम्बोधनात्मक शब्दों को तीन विभागों में रखा जाता है।

प्रवचन शब्दावलियाँ-

१. **आराध्य-इष्ट के लिए संबोधन**-राधे-राधे ,जय श्री राधे, हे मेरे ठाकुर, मेरे भगवन्, करुणानिधान, हे नाथ, हे प्रभु, स्वामी इत्यादि।

२. **श्रोताओं के लिए संबोधन**-प्रियभक्तों, शास्त्रानुरागी, वेदानुरागी, कथा रसिकों , पूज्यमाताओं, प्रियबहनों, हे श्रद्धालुओं, श्रोताओं इत्यादि।

३. **कथावाचक स्वयं के लिए सम्बोधन**-दाश,सेवक,भक्त, कृपापात्र, इत्यादि।

(ङ) सर्वशास्त्रों का अतिसंक्षिप्त परिचय

याज्ञवल्क्यस्मृति के अनुसार सर्वशास्त्रों में प्रमुखरूप से चतुर्दश विद्याओं को ही प्रधान माना गया है।ये १४ विद्याएँ इस प्रकार से वर्णित किया गया हैं-

पुराणन्यायमीमांसा धर्मशास्त्राङ्ग मिश्रिताः ।
वेदाः स्थानानि विद्यानां धर्मस्य च चतुर्दश ॥ (याज्ञवल्क्य स्मृति १.३)

विष्णुपुराण के अनुसार कुल अष्टादश १८ विद्याओं को स्वीकार किया गया है।जिनके नाम प्राप्त हैं-

अङ्गानि वेदाश्चत्वारो मीमांसा न्यायविस्तरः।
पुराणं धर्मशास्त्रं च विद्या ह्येताश्चतुर्दश।।
आयुर्वेदो धनुर्वेदो गन्धर्वश्चेति ते त्रयः।
अर्थशास्त्रं चतुर्थं तु विद्या ह्यष्टादशैव तु।। (विष्णुपुराण -३/६/२८-२९)

चतुर्दश १४ विद्याओं को तीन विभागों में विभाजित किया गया है **१.वेद ,२.वेदाङ्ग, ३.शास्त्र** इस प्रकार नाम एवं इनके अतिसंक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है।

॥ १४ विद्याएँ॥

(वेदविभाग)	(वेदाङ्गविभाग)	(शास्त्रविभाग)
१. ऋक्	५. शिक्षा	11. पुराणम्

२. यजुः	६. कल्प	12.न्याय, आन्विक्षिकी
३.सामवेद	७. व्याकरण	13. मीमांसा
४.अथर्ववेद	८. ज्योतिष	14. धर्मशास्त्र, स्मृतितन्त्रम्
	९. निरुक्त	
	१०. छन्द्	

१. **वेदविभाग -**

१४ विद्याओं में **(१. ऋग्वेद,२.यजुर्वेद,३.सामवेद,४.अथर्ववेद)** इनका परिचय वेद परिचय में दिया जा चुका है,वहीं विस्तार से देखें।

२. **वेदाङ्गविभाग-**

जिस प्रकार मानव शरीर के सञ्चालन के लिए सभी अङ्गों का होना अनिवार्य है, ऐसे ही वेद को समझने के लिए वेद के अंङ्गो का ज्ञान होना भी आवश्यक है। ये सभी छः अङ्ग माने गये हैं – **शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, निरुक्त तथा छन्द** । वेद के अङ्ग होने के कारण इन्हें हम वेदाङ्ग शब्द से अभिहित करते हैं।

शिक्षा- शिक्षाशास्त्र हमें अकारादि वर्णोच्चारण ज्ञान, उदात्तादिस्वरोच्चारण ज्ञान, ,ह्रस्वादिमात्राएं, आभ्यन्तर-बाह्यादि बल-प्रयत्न, पाठ के गुण-दोष विचार,एवं वर्णों के सन्धि-सन्तान आदि का जो शिक्षा बतलावें वह **शिक्षा** कहलाती है। वेद-पाठ के शुद्ध उच्चारण तथा उचित स्वरोच्चारणज्ञान का होना आवश्यक है। शिक्षा को वेद पुरुष की **नासिका(नाक)** कहा गया है।

कल्प- "कल्पयन्तीति कल्पः" जिसके अन्तर्गत श्रौत-स्मार्त यागविधानों की परिकल्पना की गई है उसे कल्प कहते हैं। कल्पसूत्रों का निर्माण मानव जीवन के समस्त कामनाओं की पूर्ति हेतु की गई है, इस कल्पशास्त्र के विधि, नियम, न्याय और निर्दिष्टों का कठोर पालन करने से हमें पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति होती है। कल्प सूत्रों के चार मुख्य भाग हैं- (१) श्रौतसूत्र (२) गृह्यसूत्र (३) धर्मसूत्र।एवं (४)शुल्वसूत्र । कल्प को वेदपुरुष का हाथ माना गया है,क्योंकि हाथों से ही याग कर्मों का सम्पादन होता है।

व्याकरण – "मुखं व्याकरणं स्मृतम्" वेदपुरुष का मुख अङ्ग व्याकरण को कहा गया है।**"मुखं भवति मुख्यम्"** सभी वेदाङ्गों में व्याकरण को ही प्रधान माना जाता है।वेद एवं लोक व्यवहार में व्याकरण की महत्ता बहुत ही गरिमापूर्ण है।शब्दों की व्युत्पत्ति व्याकरणशास्त्र के द्वारा ही की जाती है। इस प्रकार

व्याकरणशास्त्र का प्रयोजन ५ प्रकार से बतलाए गए है। १.रक्षा,(वेदों की रक्षा)२.ऊह(विभक्ति का यथेच्छ प्रयोग),३.आगम(वेदार्थ),४.लघु(संक्षेपीकरण),५.असंदेह (संदेह का निवारण)। यहां पर व्याकरण शब्द से वैदिक व्याकरण-**प्रातिशाख्यग्रन्थ** का ग्रहण करनी चाहिए। इस प्रकार से वेदों के सम्यक् ज्ञान के लिए वेदाङ्गों का अध्ययन परमावश्यक है।

ज्योतिष- ज्योतिष को वेद का अयन (चक्षु) माना गया है। जिस प्रकार हमें लोक व्यवहार में कृषिकर्म के सम्पादनार्थ समय एवं मौसम की आवश्यकता होती है ऐसे ही यागों के सम्पादन हेतु उचित समय- मुहुर्त का ज्ञान होना अनिवार्य है। यह ज्ञान हमें "**ज्योतिषशास्त्र**" बतलाता है।

निरुक्त- अर्थ का अववोध व्याकरण शास्त्र कराता है, परन्तु व्याकरण के सिद्धान्तों का अनुकरण किए बिना ही दुरुह वैदिक शब्दों का अर्थ **निरुक्त** सुस्पष्ट कर देता है यही निरुक्त की अपनी विशेषता है। निरुक्तग्रन्थ के रचनाकार आचार्य यास्क है। इन्होनें वैदिक शब्द-संग्रह **निघण्टु** नामक प्राचीन ग्रन्थ पर ही "**निरुक्त**" नामक व्याख्यात्मक ग्रन्थ की रचना की है। निरुक्त को वेद पुरुष का श्रोत्र (कान) कहा गया है। निरुक्त वेदाङ्ग के माध्यम से हमें वेदों के अर्थों का तथा शब्दार्थ व्युत्पत्ति के नए आयामों का रसास्वादन यह कराता है।

छन्द- छन्दशास्त्र को वेद के चरण-पाद रूप में स्वीकार किया गया है। मुख्य रूप से १०० से भी ज्यादा छन्द हैं परन्तु ७ प्रमुख छन्दों का पठन-विवेचन किया गया है। ये क्रमश: १.गायत्री, २.उष्णिक्, ३अनुष्टुप्, ४.बृहती, ५.पङ्क्ति,६ ऋष्टुप्, ७ .जगती आदि छन्द आते हैं। वेदों के मन्त्र इन्हीं प्राचीन छन्दों में निबद्ध हैं। इनमें अक्षरों की संख्या गायत्रीछन्द के क्रमानुसार ४-४ सङ्ख्या के वृद्धिक्रम में है, ये क्रमश:२४, २८, ३२, ३६, ४०, ४४, ४८ ।

३. शास्त्रविभाग-

पुराण - (१८ पुराणों के बारे में इस ग्रन्थ में विस्तार से बताया गया है ,अत: वहीं पर देखें।

न्याय- भारतीय शास्त्रीय वाङ्मय में दर्शन का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यह दर्शन आस्तिक तथा नास्तिक के भेद से दो प्रकार का होता है। आस्तिक दर्शनों में न्याय,वैशेषिक,सांख्य,योग,मीमांसा,वेदान्त दर्शन प्रसिद्ध है। इन षड्विध दर्शनों में न्यायवैशेषिक दर्शन का अन्यतम स्थान है। भारतीय अर्थशास्त्र के प्रसिद्ध विद्वान् कौटिल्य ने इस दर्शन के विषय में अपना उद्गार व्यक्त करते हुए कहा है-

प्रदीपः सर्वविद्यानामुपायः सर्वकर्मणाम्।

आश्रयः सर्वधर्माणां विद्योद्देशे प्रकीर्तिता।। अर्थशास्त्र

इस न्याय दर्शन के प्रवर्तक आचार्य महर्षि गौतम हैं। जिन्होंने न्यायसूत्र का निबन्धन किया है। इस दर्शन में पाँच अध्याय, दश आह्निक, ८४ प्रकरण तथा ५२८ सूत्र हैं। महर्षि गौतम ने प्रमाण प्रमेय निग्रहस्थान नामक सोलह पदार्थों का निरूपण इस दर्शन में किया है। आत्मा, शरीर, इन्द्रिय, अर्थ, बुद्धि, मन, प्रवृत्ति, दोष, प्रेत्यभाव, फल, दुख तथा अपवर्ग इन द्वादश प्रमेयों की चर्चा इस दर्शन में हुई है। इसके साथ ही वैशेषिक सूत्रकार महर्षि कणाद के द्वारा प्रणीत वैशेषिक सूत्र में प्रतिपादित द्रव्यादि सात पदार्थों का तथा पृथिव्यादि नव द्रव्यों का भी सुचारु निरूपण किया गया है। प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान तथा शब्द प्रमाण का विशद विवेचन न केवल न्यायदर्शन के लिए अपितु समग्र दर्शनसम्प्रदाय के लिए उपकारी है। इस शास्त्र के लिए संशय को आधार माना गया है। निर्णीत अथवा अनुपलब्ध अर्थ में न्याय की प्रवृत्ति नहीं होती है अपितु सन्दिग्ध अर्थ में ही न्यायशास्त्र की प्रवृत्ति होती है। अतएव न्याय भाष्यकार ने कहा है—**नानुपलब्धे न निर्णीतेऽर्थेन्यायः प्रवर्तते अपितु संशयितेऽर्थे न्यायः प्रवर्तते।** इस प्रकार न्यायशास्त्र की उपयोगिता वर्तमान सन्दर्भ में अत्यन्त प्रायोगिक है।

मीमांसा - मीमांसक शब्द को नित्य मानते हैं और नैयायिक अनित्य मानते हैं। लोगों की यह एक भ्राँति है कि सांख्य और मीमांसा दोनों अनीश्वरवादी माने जाते हैं, लेकीन वेद की प्रामाणिकता दोनों ही स्वीकार करते हैं । परन्तु मीमांसादर्शन में इसके विपरीत ईश्वर को मानने के कई प्रमाण मिलते हैं।एक सूत्र वेदांतदर्शन में उल्लेखित है–

ब्राह्मणे जैमिनिरुपन्यासादिभ्यः॥ (वेदान्त ४/४/५)

(जैमिनि आचार्य का मत है कि मुक्ति में जीव ब्रह्म के आनंद आदि गुणों को धारण करता है।)

इससे सिद्ध है कि ऋषि जैमिनि जी आत्मा,परमात्मा,मुक्ति आदि मानते थे भले मीमांसदर्शन में यज्ञादि कर्म मूल विषय होने से इनका अधिक उल्लेख न हुआ हो। भेद इतना ही है कि सांख्य प्रत्येक कल्प में वेद का नवीन प्रकाशन मानता है, और मीमांसक उसे नित्य अर्थात् कल्पान्त में भी नष्ट न होनेवाला कहते हैं। परन्तु ये भी कोई परस्परविरोध नहीं है। मीमांसा के अनुसार शब्द नित्य है क्योंकि ईश्वर का ज्ञान नित्य है, और सांख्य के अनुसार हर कल्प के आरंभ में परमात्मा ऋषियों को वेदों का उपदेश करता है, जिसे वेदोत्पत्ति कहा जाता है।

धर्मशास्त्र- धर्मशास्त्र संस्कृत ग्रन्थों का एक वर्ग है, जो कि शास्त्र का ही एक प्रकार है। इसमें मनु,व्यास,याज्ञवल्क्यादि सभी स्मृतियाँ सम्मिलित हैं। यह वह शास्त्र है जो हिन्दुओं के धर्म का ज्ञान सम्मिलित किये हुए हैं, धर्म शब्द में यहाँ पारंपरिक अर्थ में धर्म तथा साथ ही कानूनी कर्तव्य भी सम्मिलित हैं।

धर्मशास्त्रों का बृहद् पाठ भारत की ब्राह्मण परंपरा का अंग है, तथा यह विद्वत्परंपरा की देन एवं एक विशद तंत्र है। इसके गहन न्यायशास्त्रीय विवेचन के कारण प्रारंभिक ब्रिटिश औपनिवेशिक प्रशासकों द्वारा यह हिंदुओं के लिए कानून के रूप में माना गया था, तब से लेकर आज भी धर्मशास्त्र को हिन्दू विधिसंहिता के रूप में देखा जाता है। धर्मशास्त्र में उपस्थित रिलीजन व कानून के बीच जो अंतर किया जाता है, दरअसल वह कृत्रिम है और बार-बार उसपर प्रश्न उठाये गये हैं।जबकि कुछ लोग, धर्मशास्त्र में धार्मिक व धर्मनिरपेक्ष कानूनों के बीच अंतर रखा गया है ऐसा पक्ष लेते हैं। धर्मशास्त्र हिन्दू परंपरा में महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि- यह एक आदर्श गृहस्थ के लिए धार्मिक नियमों का स्रोत है, तथा दूसरे यह धर्म विधि - आचारशास्त्र आदि से संबंधित हिंदू ज्ञान का सुसंहत रूप है।

[पाठ इकाई ०४]

शिक्षाप्रद वैदिक आख्यानों का प्राथमिक कथावाचन अभ्यास

ऋग्वेदीय-अग्निसूक्त (अग्निदेवता का वर्णन)

आज के परिप्रेक्ष्य में अग्नि यानी (ऊर्जा स्त्रोत) की आवश्यकता सर्वत्र आपेक्षित है। जब हम सुबह सोकर उठते हैं तब सूर्य-सविता देवता ही सभी को अपने अपने कार्यों को करने हेतु अभिप्रेरित करते हैं। **"स्वे स्वे कर्मणि नियोजयति अभिप्रेरयति इति सविता"** इस प्रकार सूर्य ,अग्नि एवं ऊर्जा का विपुल भण्डार रूप है, वह हमारे प्रातः जगने से लेकर रात्री शयन तक सहायता प्रदान करता है। प्रात:/सायं काल में अल्पाहार से भोजन तक का सभी पाककर्म अग्नि द्वारा ही सम्पादित होता है, इस प्रकार हम अग्नि के कार्यों को लोकप्रयोग अधोलिखित रूप में देख सकते हैं।

पूजन कार्य में -: दीपक जलाना, अग्निकुण्ड में सायं-प्रात: होमकर्म,यज्ञादिकर्म में अग्नि का प्रयोग।

गृह पाककर्म में-: प्रात:/सायंकालीन भोजन निर्माणकार्य में अग्नि का प्रयोग।

भोजन पचाने में-: जठराग्नि रूप में भोजन को पेट में पचाने कार्य में अग्नि का प्रयोग।

गृहोपयोगी यन्त्र -: लाइट, पंखा फ्रीज, कूलर, वाशिंगमशीन AC, मिक्सर इत्यादि मशीन का प्रयोग में विद्युत अग्नि का प्रयोग।

कारखाने में -: मशीन, बोरिन्ग, जेनरेटर आदि में विद्युत ऊर्जा (अग्नि)का प्रयोग, लोहे/सीसे आदि को गलाने मे अग्नि का प्रयोग ।

कार्यालयीय कार्यों में -: कम्प्यूटर, फोटोकापी, प्रिंटर मशीन, टी.वी., छोटा/वडा मशीन,का संचालन में अग्नि रूपी विद्युत का प्रयोग ,इन अनेकों कार्यों मे अग्नि का महत्व है। इसके अतिरिक्त हम जो कुछ देखना,पढना आदि कार्य कर रहें हैं ये सब अग्नि रूपीसूक्ष्म ऊर्जा का ही देन है ।उपर्युक्त समस्त पदार्थों को देने के कारण अग्नि को देवता रूप में मानते हैं।निरुक्त के अनुसार देवता की व्युत्पत्ति-**"दानात् द्योतनात् दीपनात् वा"** दान,प्रकाश आदि देने के कारण अग्नि आदि सभी देवता ,**देवता** कहलाते हैं,अत: अग्नि हमारे लिए देवतुल्य एवं पूजनीय है।

ऋग्वेद मुख्य रूप से ऋचाओं, स्तुतियों का वेद है। इसमें विभिन्न देवों की बहुत ही भव्य मनोरम प्रार्थनाएँ की गई हैं। इन देवों में अग्नि का बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। सम्पूर्ण ऋग्वेद में लगभग 2000 मन्त्रों में अग्निदेव की प्रार्थना की गई है। अग्नि पृथिवीलोक का देवता है। इसका शाब्दिक अर्थ है **अग्रणी -अग्रगामी** नेतृत्व करने वाला। इस देव को मनुष्य के रूपवत् शरीरधारी माना गया है। अतीव देदीप्यमान ज्योतिर्मय इसका स्वरूप है, इसके केश स्वर्णिम है। यज्ञकुण्ड में उठने वाली ज्वाला ही इसकी जिह्वा है। इसको देवताओं का मुख (**अग्निमुखा वै देवाः**) कहा गया है। यज्ञ में दी गई आहुतियों को देवगण इसी के माध्यम से प्राप्त करते हैं। यह अग्निदेव सभी देवताओं के कार्यों को करता है। अतः यह **पुरोहित** है तथा यज्ञ में उनको बुलाने के कारण होता है, समस्त प्राणियों के भीतर रहने से यह **वैश्वानर** है, सर्वज्ञ होने से **जातवेदस्** है, सभी द्वारा प्रार्थित होने से **नराशंस** हैं, सभी घरों में रहने से यह **दमूना** है। प्रार्थना करने वाले यजमान को वांछित फल सर्वाधिक रमणीयधनों को प्रदान करता है तथा पुत्र के लिए पिता की भाँति यह अग्नि सदैव सुलभ रहता है तथा यजमान का कल्याण करता रहता है। यही अग्नि मध्यम लोक में विद्युत् तथा द्यु लोक में आदित्य रूप में विद्यमान है। ऋग्वेद का प्रारम्भ इसी अग्नि की स्तुति से होता है।

ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ॥ ॥१॥

(यज्ञस्य) यज्ञ के (पुरोहितं) पुरोहित (ऋत्विजम्) ऋत्विक् (होतारं) यज्ञ में इन्द्रादि देवों को बुलाने वाले (रत्नधातमम्) सर्वाधिक रमणीय धनों को धारण करने वाले-देने वाले (देवम्) प्रकाशमय (अग्निम्) अग्नि की (ईळे) प्रार्थना करता हूँ।

१. यज्ञ में अग्रणी रहने वाले, दानादि गुणों से युक्त, यज्ञ में देवों को आवाहन करने वाले एवं यज्ञ के फलरूपी रत्नों को धारण करने वाले अग्नि की स्तुति करता हूँ

अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो नूतनैरुत । स देवाँ एह वक्षति ॥ ॥२॥

(अग्निः) अग्निदेव (पूर्वेभिः) प्राचीनकाल के (उत) और (नूतनैः) नवीन वर्तमान काल के (ऋषिभिः) ऋषियों के द्वारा (ईड्यः) प्रार्थना के योग्य हैं। (सः) वह (देवान्) इन्द्र, विष्णु आदि देवों को (इह) यहाँ पर हमारे यज्ञ में (अवक्षति) ले आवे।

२. जिस अग्नि की स्तुति प्राचीन तथा वर्तमान ऋषि भी करते हैं, वह अग्नि इस यज्ञ में देवों को बुलाएँ।

अग्निना रयिमश्नवत्पोषमेव दिवेदिवे । यशसं वीरवत्तमम् ॥३॥

(अग्निना) अग्नि के द्वारा (अनुग्रह से) यजमान (दिवेदिवे) दिन दिन-प्रतिदिन (पोषम् एव) केवल बढ़ने वाले (यशसं) यश-कीर्ति को देने वाले (वीरवत्-तमम्) श्रेष्ठ वीर-पुत्र-पौत्रादि से युक्त (रयिम्) धन(यश) को (अश्नवत्) प्राप्त करे।

३. अग्नि की कृपा से यजमान धन प्राप्त करता है तथा वह धन नित्य वृद्धि को प्राप्त करता है, उस धन से यजमान यश प्राप्त करता है।

अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि । स इद्देवेषु गच्छति ॥४॥

(अग्ने) हे अग्निदेव! (यं) जिस (अध्वरं यज्ञं) हिंसारहित यज्ञ को (विश्वतः) चारों तरफ से (परिभूः असि) परिव्याप्त करते हो अर्थात् जो यज्ञ निर्विघ्न पूर्ण हो जाता है (सः इत्) वह ही (देवेषु) देवों में- देवों के पास (गच्छति) चला जाता है प्राप्त हो जाता है।

४. राक्षस आदि की हिंसा न हो इसदृष्टि से आप यज्ञ की चारों दिशाओं से रक्षा करते हैं, देवताओं को तृप्ति देने वह यज्ञ स्वर्ग जाता है।

अग्निर्होता कविक्रतुः सत्यश्चित्रश्रवस्तमः । देवो देवेभिरा गमत् ॥ ५॥

(अग्निः) अग्निदेव (होता) (यज्ञ में देवताओं को) बुलाने वाला है (कविक्रतुः) कवि की प्रतिभा, प्रज्ञा वाला है। (सत्यः) सत्यस्वरूप है। (चित्रश्रवः-तमः) सर्वाधिक चयन के योग्य धनों से युक्त है। (देवः) अग्निदेव (देवेभिः) इन्द्र विष्णु इत्यादि अन्य देवों के साथ (आ-अगमत्) (हमारे इस यज्ञ में) आवे।

५. हे अग्नि देव ! आप इस यज्ञ में आइए दूसरे देवों के साथ, आप यज्ञ के होता, बुद्धि सम्पन्न, सत्यशील एवं परमकीर्ति वाले हैं।

यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि । तवेत्तत्सत्यमङ्गिरः ॥६॥

(अङ्ग-अङ्गिर अग्ने) हे अंगिरा अग्निदेव (यत्) जो (त्वम्) तुम (दाशुषे) (यज्ञ में चरु-पुरोडाश इत्यादि) प्रदान करने वाले यजमान के (भद्रं) मंगल-कल्याण (करिष्यति) करोगे। (तत् इत्) वह ही (तव) तुम्हारा (सत्यम्) सत्यस्वरूप है।

६. हे अग्नि देव! यज्ञ में हवि प्रदान करने वाले यजमान का आप जो मङ्गल करते हैं, वास्तव में वह आपकी ही प्रसन्नता का साधन बनता है।

उप त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम् । नमो भरन्त एमसि ॥७॥

राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम् । वर्धमानं स्वे दमे ॥८॥

(दोषा-वस्तः अग्ने) अन्धकार को प्रकाशित करने वाले हे अग्निदेव (दिवेदिवे) दिन-दिन-प्रतिदिन-निरन्तर (धिया) बुद्धि के द्वारा (नमः भरन्तः) नमस्कार करते हुए (त्वा) तुम्हारे (उप) समीप (आ+इमसि) आते हैं। (अध्वराणां) हिंसारहित यज्ञों के (राजन्तम्) प्रकाशक (ऋतस्य) दिव्य नियम के (गोपाम्) रक्षक (दीदिविम्) अतिशयप्रकाशक ज्योतिर्मय देदीप्यमान । (स्वे दमे) यज्ञकुण्ड में (वर्धमानं) बढ़ने वाले (हे अग्नि देव हम नमस्कार करते हुए तुम्हारे पास आते हैं।)

७. हे अग्नि ! हम आप को नित्य प्रातः सायं नमस्कार करते हुए प्रतिदिन आपके निकट आते हैं।

८. हे अग्नि ! आप यज्ञ की रचना करने वाले, प्रकाशवान् और कर्मफल के द्योतक हैं, आप यज्ञशाला में वृद्धि को प्राप्त करने वाले हैं।

स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव । सचस्वा नः स्वस्तये ॥९॥

(अग्ने) हे अग्निदेव ! (सूनवे) पुत्र के लिए (पिता इव) पिता की भाँति (सः) वह तुम (नः) हमारे लिए (सु-उपायनः) सुलभप्रकार से समीप आने योग्य (भव) हमें प्राप्त हो जाओ (नः) हमारे (स्वस्तये) कल्याण के लिए (सचस्व) हमसे जुड़े-मिले रहो अर्थात् हमारा कभी परित्याग न करें।

९. हे अग्नि ! जिस प्रकार पुत्र अपने पिता को सरलता से प्राप्त कर लेता है, उसी प्रकार हम भी आप को सहज ही प्राप्त कर सकें। आप मङ्गल करने के लिए हमारे सन्निकट रहें।

(ख) ऋग्वेदीय -नासदीय सूक्त-

बच्चों ! प्रायशः हमारे मानस पटल पर यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि सृष्टि रचना से पूर्व की क्या स्थिति रही होगी? इस सृष्टि को किसने बनाया होगा? सृष्टि रचना से पूर्व में क्या जल ,आकाश ,वायु, अग्नि थे?, क्या सूर्य,चन्द्र, नक्षत्र,तारा,दिन,रात आदि थे ? उभरते हुए ये सभी प्रश्न आज के युगकाल में सभी के लिए अत्यन्त ही प्रासङ्गिक हैं। वैज्ञानिकों के लिए यह विषय बहुत ही चुनौतीपूर्ण भरा हुआ है। इस विषय में वैज्ञानिकों द्वारा युगों से अन्वेषण (खोज)कार्य चल रहा है, वैज्ञानिकों द्वारा इन कार्यों में बहुत सारे धनों का भी व्यय हुआ है ,परन्तु धन्य है हमारा भारतवर्ष ,भारतवर्ष की संस्कृति एवं हमारे वैदिक संस्कृतग्रन्थ, जिनमें ऐसे जटिल प्रश्नों के उत्तर सहज रूप में दिया जा चुका है। छात्रों ! इन सभी प्रश्नों के उत्तर पाने के लिए

हमें ऋग्वेद के नासदीय सूक्त का आश्रय लेना पडेगा। आइए ! हम नासदीय सूक्त का व्याख्यात्मक अर्थ चिन्तन करें।

नामरूपात्मक इस सृष्टि का स्रष्टा एवं धर्ता परमात्मा ही है पर इसका स्वरूप अत्यन्त रहस्यात्मक है। ऋग्वेद के नासदीय (10.129) सूक्त में सृष्टि को प्राग्दशा का बहुत सुन्दर निरूपण किया गया है। इस प्राग्दशा में न तो सत् था और न ही असत्- था । इस प्रकार के तात्कालिक स्वरूप का चित्रण इस सूक्त में किया गया है ।

नासदासीन्नो सदासीत्तदानीं नासीद्रजो नो व्योमा परो यत्।
किमावरीव कुह कस्य शर्मन्नम्भः किमासीद्गहनं गभीरम्॥ ॥०१॥

अन्वय- तदानीम् असत् न आसीत् सत् नो आसीत् रजः न आसीत् व्योम नोयत् परः आवरीवः, कुह कस्य शर्मन् गहनं गभीरम् ।

शब्दार्थ - न = नहीं, असत् = नामरूपादि रहित अवस्था, आसीत् = थी, नो-नहीं, सत् = नामरूपात्मक अवस्था, आसीत् = थी, तदानीम् = उस समय, न = नहि, आसीत् = था, रजः = लोक, नो = नहीं, व्योम = आकाश, परः= ऊपर, यत् = जो है, किम् = कौन, आ अवरीवः = आवृत किया था, कुह = कहाँ, कस्य = किसकी, शर्मन् = सुरक्षा में, अम्भः = जल, किम् = क्या (प्रश्न वाचक शब्द), आसीत् = था, गहनम् = अपार, गभीरम् = गहरा ।

अनुवाद- उस समय अर्थात् सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व असत् अर्थात् अभावात्मक / सत् भाव तत्त्व भी नहीं था, लोक मृत्युलोक और पाताल लोक नहीं थे, अन्तरिक्ष नहीं था और ऊपर जो कुछ है वह भी नहीं था, वह आवरण करने वाला तत्त्व कहाँ और किसके संरक्षण में था? उस समय अपार गम्भीर जल था? अर्थात् वे सब नहीं थे।

न मृत्युरासीदमृतं न तर्हि न रात्र्या अह्न आसीत्प्रकेतः।
आनीदवातं स्वधया तदेकं तस्माद्धान्यन्न परः किं चनास ॥०२॥

अन्वय- तर्हि मृत्युः नासीत् न अमृतम्, रात्र्याः अह्नः प्रकेतः नासीत् तत् आनीत अवातम्, स्वधया एकम् ह तस्मात् अन्यत् किंचन न आस न परः।

शब्दार्थ- न = नहीं, मृत्युः = मृत्यु, आसीत् = थी, अमृतम् = अमृतत्व, न = नहीं, तर्हि = तब, रात्र्याः = रात्री का, अह्नः = दिन का, आसीत् = था, प्रकेतः = चिह्न या भेदात्मक ज्ञान, आनीत् = सांस ले रहा था, अवातम् = बिना वायु का, स्वधया = इच्छाशक्ति से, तत् = वह, एकम् = एक, तस्मात् = उससे, अन्यत् = अलग, न = नहीं, परः = बढ़कर, किम् = कुछ, चन =भी, आस = था।

अनुवाद - उस समय मृत्यु नहीं थी और अमृतत्व भी नहीं था। रात्रि और दिन का ज्ञान भी नहीं था। तब वह (ब्रह्म तत्त्व) ही केवल प्राणयुक्त, क्रियाशून्य और माया के साथ जुड़ा हुआ एक रूप में विद्यमान था, उससे पहले कुछ भी नहीं था।

तमं आसीत्तमंसा गूळ्हमग्रेंऽप्रकेतं सलिलं सर्वमा इदम्।
तुच्छ्येनाभ्वपिहितं यदासीत्तपंस्तन्मंहिनाजांयतैकम्॥ ०३ ॥

अन्वय - अग्रे तमसा गूढम् तमः आसीत्, अप्रकेतम् इदम् सर्वम् सलिलं, आः यत् आभु तुच्छ्येन अपिहितम् आसीत् तत् एकम् तपस महिना अजायत।

शब्दार्थ - तमः = अन्धकार, आसीत् = था, तमसा = अन्धकार से, गूळहम् = ढका हुआ, अग्रे = सृष्टि के पहले, अप्रकेतम् = चिह्नरहित / भेदात्मक ज्ञान-रहित, सलिलम् = जल, सर्वम् = सम्पूर्ण, आः = था, इदम् = यह जगत्, तुच्छ्येन = भावरूप अज्ञान से, आभु = सर्वव्यापी, अपिहितम् = आवृत, यत् = जो, आसीत् = स्थित था, तपसः = तपस्या की, तत् =वह , महिना = महिमा से, अजायत = उत्पन्न हुआ, एकम् = एक ।

अनुवाद - सृष्टि उत्पत्ति से पूर्व सर्वत्र अन्धकार था। यह सम्पूर्ण जगत् जलरूप में था। अर्थात् उस समय कार्य और कारण दोनों मिले हुए थे। वह स्थित था। सर्वव्यापी भावरूप अज्ञान था। यह जगत् ईश्वर के संकल्प एवं तप से उत्पन्न हुआ।

कामस्तदग्रे समंवर्ततांधि मनंसो रेतंः प्रथमं यदासींत्।
सतो बन्धुमसंति निरंविन्दन्हृदि प्रतीष्यां कवयों मनीषा॥ ०४ ॥

अन्वय -अग्रे तत् कामः समवर्तत यत् मनसः अधि प्रथमं रेतः आसीत्, सतः बन्धुं कवयः मनीषा हृदि प्रतीष्य असति निरविन्दन् ।

शब्दार्थ - कामः = इच्छा, तत् = उसमें, अग्रे = सर्वप्रथम, समवर्तत = उत्पन्न हुआ, अधिमनसः = मन का, रेतः = विकार, प्रथमम् = प्रथम, यत् = जो, आसीत् = था, सतः = नामरूपात्मक जगत् का, बन्धुम् = बन्धन, सम्बन्ध, असति = नामरूपरहित तत्त्व में, निरविन्दन् =पाया, हृदि = अन्तःकरण में, प्रतीष्य = विचार कर, कवयः = बुद्धिमानों ने, मनीषा = प्रज्ञा से।

अनुवाद – सृष्टि उत्पत्ति के समय सर्वप्रथम काम अर्थात् सृष्टि रचना करने की इच्छाशक्ति उत्पन्न हुई, जो परमेश्वर के मन में सबसे पहला बीजरूप कारण हुआ। बुद्धिमानों ने प्रज्ञा से विचारकर नामरूपात्मक जगत् का कारण नामरूप रहित तत्त्व में पाया।

तिरश्चीनो विततो रश्मिरेषामधः स्विदासी३दुपरि स्विदासी३त्।
रेतोधा आसन्महिमान आसन्त्स्वधा अवस्तात्प्रयतिः परस्तात्॥ ०५ ॥

अन्वय - एषाम् रश्मिः विततः तिरश्चीन अधः स्वित् आसीत्, उपरि स्वित् आसीद्रेतोधाः आसन् महिमानः आसन् स्वधा अवस्तात् प्रयति परस्तात् ।

शब्दार्थ - तिरश्चीनः = तिरछा जाने वाला अर्थात् मध्य में, विततः = फैला हुआ था, रश्मिः = किरणों की तरह, एषाम् = उनका, स्वित् = सम्भावित, आसीत् = था, उपरि = ऊपर, स्वित् = सम्भावित, आसीत् = था, रेतोधाः = सृष्टि का बीज धारण करने वाले, आसन् = थे, महिमानः= आकाशादि महाभूत, आसन् = थे, स्वधा=भोग्य पदार्थ, अवस्तात् = नीचे, प्रयतिः=भोक्ता तत्व परस्तात् = ऊपर।

अनुवाद - उनका (कार्यजाल जो) किरणों के समान शीघ्र फैला हुआ था, क्या वह मध्य में था? अथवा, क्या वह नीचे था? अथवा, क्या वह ऊपर था ? (सृष्टि का) बीज धारण करने वाले, (आकाशादि) महाभूत थे, नीचे भोग्य था, ऊपर भोक्ता।

को अद्धा वेद क इह प्र वोचत्कुत आजाता कुत इयं विसृष्टिः।
अर्वाग्देवा अस्य विसर्जनेनाथा को वेद यत आबभूव॥ ०६ ॥

अन्वय- कः अद्धा वेद कः इह प्रवोचत् इयं विसृष्टिः कुतः कुतः आजाता, देवा अस्य विसर्जनेन अर्वाक् अथ कः वेद यतः आ बभूव ।

शब्दार्थ- कः = कौन, अद्धा = सत्य रूप में, वेद = जानता है, कः = कौन, इह = यहाँ, प्र वोचत् = कहेगा, कुतः = कहाँ से, आजाता = उत्पन्न हुई है, कुतः = कहाँ से, इयम् = यह, विसृष्टिः = विविध

प्रकार की सृष्टि, अर्वाक् = अर्वाचीन, देवाः = देवता, अस्य = इस, विसर्जनेन = विविधरूपा सृष्टि से, अथ = तब, कः = कौन, वेद = जानता है, यतः = जहाँ से, आबभूव = उत्पन्न हुई है।

अनुवाद - कौन इस बात को यथार्थरूप से जानता है? और कौन इस लोक में सृष्टि के उत्पन्न होने के विवरण को बता सकता है? देवता भी इस विविध प्रकार की सृष्टि उत्पन्न होने के परवर्ती हैं। अतः ये देवगण भी स्वावस्था से पूर्व के विषय में नहीं बता सकते। इसलिए कौन मनुष्य जानता है, जिस कारण यह समस्त संसार उत्पन्न हुआ।

इयं विसृष्टिर्यत आबभूव यदि वा दधे यदि वा न।
यो अस्याध्यक्षः परमे व्योमन्सो अङ्ग वेद यदि वा न वेद॥ ०७॥

अन्वय - इयं विसृष्टिः यतः आबभूव यदि वा दधे यदि वा न। अस्य यः अध्यक्ष परमे व्योमन् अङ्ग सा वेद यदि न वेद।

शब्दार्थ - इयम् = यह, विसृष्टिः = विविधरूपा सृष्टि, यतः = जहाँ से, आबभूव = उत्पन्न हुई है, यदि = यदि वा = अथवा, दधे = धारण किया था, यदि = यदि, वा = अथवा, न = नहि, यः=जो, अस्य = इसका, अध्यक्षः = नियामक, परमे = ऊँचे, व्योमन् = आकाश में, सः = वह, अङ्ग = निश्चित अर्थ का वाचक निपात, वेद = जानता है, यदि = यदि, वा = अथवा, न = नहीं, वेद जानता है।

अनुवाद -यह विविध प्रकार की सृष्टि जिस प्रकार के उपादान और निमित्त कारण से उत्पन्न हुई इसका मुख्य कारण है ईश्वर के द्वारा इसे धारण करना। इसके अतिरिक्त अन्य कोई धारण नहीं कर सकता। इस सृष्टि का जो स्वामी ईश्वर है, अपने प्रकाश / आनन्दस्वरूप में प्रतिष्ठित है। वह आनन्दस्वरूप परमात्मा ही इस विषय को जानता है तदतिरिक्त (इस सृष्टि उत्पत्ति तत्त्व को) कोई नहीं जानता है।

(ग) यजुर्वेदीय- शिवसंकल्प सूक्त

इस सूक्त में मन देवता की स्तुति की गई है, ब्रह्मविन्दूपनिषद के वचनानुसार –**"मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयो: ,बन्धाय विषयासक्तं मुक्त्यै निर्विषयं स्मृतम्"** किसी भी मनुष्य के लिए बन्धन एवं मोक्ष का कारण मन ही होता है।इसी सन्दर्भ में श्रीमद्भगवद्गीता के ६ ठें अध्याय के ३४ वे श्लोक में मन को बहुत ही चञ्चल बताया गया है,**"चञ्चलं हि मन: कृष्ण"** इसको निग्रह करना वायु को निग्रह करने जैसा दुष्कर है। अत: मन को अपने वश में करने के लिए तथा मन की वृत्ति को शुभ कल्याणकारी बनाने हेतु मन के देवता से इस "**शिवसङ्कल्पसूक्त**" में प्रार्थना की गई है।

शुक्लयजुर्वेदः शिवसङ्कल्पसूक्तम्

ऋषिः -याज्ञवल्क्यः, देवता -मनः, छन्दः -त्रिष्टुप्

यजाग्रतोदूरमुदैतिदैवन्तदुसुप्तस्यतथैवैति।
दूरङ्गमज्योतिषाज्योतिरेकन्तन्मेमन÷शिवसङ्कल्पमस्तु॥१॥

(यत् दैवं मनः) जो दिव्य मन (जाग्रतः) जागते हुए मनुष्य का (दूरम् उत् आएति) दूर चला जाता है अर्थात् बहिर्गामिनी ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से अनेक बाहरी विषयों से जुड जाता है। (तद उ) वही दिव्य मन (सुप्तस्य) सोए हुए मनुष्य का (तथा एवं एति) उसी प्रकार वापस आ जाता है अर्थात् जब मनुष्य सो जाता है तब इन्द्रियाँ कार्य नहीं करती अतः बाहरी विषयों से जुडने का माध्यम न होने से मन अन्तर्मुखी हो जाता है आत्मा से जुड जाता है इसीलिए मुषुप्ति में केवल आनन्दानुभूति होती हैं [जो दिव्य मन] (दूरम्-गमम्) दूरगामी है. भूत, वर्तमान एवं भविष्यत् त्रैकालिक, स्थूल-सूक्ष्म दूरस्थनिकटस्थ समस्त विषयों को ग्रहण करने वाला है (ज्योतिषां) ज्योतियों में, वस्तु को प्रकाशित करने वाली इन्द्रियों में (एकं ज्योतिः) एक अनुपम अद्वितीय प्रकाश है (मे तत् मनः) मेरा वही मन (शिव सङ्कल्पम् अस्तु) शुभसंकल्पों वाला हो - इसकी सदैव सत्पथ में प्रवृत्ति हो, कभी असन्मार्ग में नहीं।

१. जो अतीत, अनागत और वर्तमान तीनों कालों का ग्रहीता है। जो मन प्रकाश कों का अर्थात् श्रोत्रादि इन्द्रियों को भी प्रवर्तक है, वह मेरा मन कल्याणकारी संकल्प से युक्त हो।

येनकर्माण्यपसोमनीषिणोयज्ञेकृण्वन्तिविदथेषुधीराः॥
यदपूर्वंयक्षमन्तःप्रजानान्तन्मेमन÷शिवसङ्कल्पमस्तु॥२॥

(विदथेषु) यज्ञीय विधिविधानों-कर्मकाण्ड का ज्ञान हो जाने के बाद (येन) जिस दिव्य मन की सहायता से (अपसः मनीषिणः धीराः) कर्मनिष्ठ, मनीषी, बुद्धिमान् ऋषि लोग (यज्ञे) यज्ञ में (कर्माणि) अनेक प्रकार के कर्मों-विधि-विधानों को (कृण्वन्ति) करते हैं (यत् अपूर्व) जो अपूर्व-सर्वप्रथम है -इन्द्रियों में जिसकी उत्पत्ति सबसे पहले हुई है (प्रजानाम् अन्तः) प्राणियों के भीतर (यक्षं) जो रहस्यात्मक या पूजा के योग्य है (मे तत् मनः) मेरा वही दिव्य मन (शिवसङ्कल्पम् अस्तु) शुभ संकल्पों, विचारों वाला हो। इसकी सदैव सत्पथ में प्रवृत्ति हो, कभी असन्मार्ग में नहीं।

२. कर्मनिष्ठ वैदिक मनीषी पुरुष जिसके द्वारा यज्ञीय पदार्थ को जानकर, यागों में कर्म का विस्तार करते हैं, जो मन इन्द्रियों का पूर्वज है, जो पूजनीय है तथा जो समस्त प्रजा के उद्देश में निवसित है वह मेरा मन कल्याणकारी संकल्प से युक्त हो।

यत्प्रज्ञानमुतचेतोधृतिश्चयज्योतिरन्तरमृतम्प्रजासु।
यस्मानऽऋतेकिञ्चनकर्मक्रियतेतन्मेमन÷शिवसङ्कल्पमस्तु॥३॥

(यत्) जो दिव्य मन (प्र-ज्ञानम् उत चेतः धृतिः) प्रकृष्ट-श्रेष्ठ ज्ञान बाला और चेतन तथा धैर्यस्वरूप है (प्रजासु अन्तः) प्राणियों के भीतर (यत् अमृतं ज्योतिः) जो अमृत-नित्य अविनश्वर, शाश्वत् प्रकाश है (यस्मात् ऋते) जिस दिव्य मन की सहायता के बिना (किम् चन कर्म) कोई भी क्रिया (न क्रियते) नहीं की जाती, पूर्ण होती (मे तत् मनः) मेरा वही दिव्य मन (शिवसङ्कल्पम् अस्तु) शुभ संकल्पों-विचारों वाला बने।

३. जो विशिष्ट ज्ञान का कारण है तथा जो सामान्य ज्ञान का भी कारण है, जो धैर्यवान् है, जो सकल प्राणियों के हृत्कमल में अधिष्ठित होकर समस्त इन्द्रियों को प्रकाशित करता है, जो स्थूल देह का नाश होने पर भी अविनाशी रहता है और जिसके बिना कोई भी कार्य करना सर्वथा अशक्य है, ऐसा मेरा मन कल्याणकारी संकल्प से युक्त है।

येनेदम्भूतम्भुवनम्भविष्यत्परिगृहीतममृतेनसर्वम्।
येनयज्ञस्तायतेसप्तहोतातन्मेमन÷शिवसङ्कल्पमस्तु॥४॥

(येन अमृतेन) जिस अमृत-नित्यमन के द्वारा (भूतं भुवनं भविष्यत्) भूतकाल, वर्तमानकाल तथा भविष्यकाल (इदं सर्वं) यह सब कुछ, यह त्रैकालिक जगत् (परिगृहीतम्) अच्छी प्रकार से ग्रहण किया गया है परिव्याप्त है (सप्त होता यज्ञ) सात पुरोहितों द्वारा सम्पत्र होने वाला यज्ञ (येन) जिस दिव्य की सहायता से (तायते) फैलाया जाता है पूर्ण होता है (मे तत् मनः) मेरा वहीं दिव्य मन (शिवसङ्कल्पम् अस्तु) शुभ संकल्पों-विचारों वाला बने।

४. जिस अमृतस्वरूप मन के द्वारा भूत, भविष्यत् वर्तमान के संबंधी सभी विषयों का यथार्थ ज्ञान प्राप्त होता है, जिसके द्वारा सप्त होतात्मक अग्निष्टोम नामक याग सुसंपन्न किया जाता है वह मेरा मन कल्याणकारी संकल्प से युक्त हो।

यस्मिन्नृचः सामयजूꣳषियस्मिन्प्रतिष्ठितारथनाभाविवाराः।
यस्मिꣳश्चित ँ सर्व्वमोतम्प्रजानान्तन्मेमन÷शिवसङ्कल्पमस्तु॥५॥

(रथनाभौ) रथ की नाभि-चक्र के मध्य में (प्रतिष्ठिताः) स्थित-जुड़े हुए (अराः इव) अरो-तीलियों को भाँति (यस्मिन्) जिस दिव्य मन में (ऋचः साम यजूंषि) ऋचाएँ-ऋग्वेद के मन्त्र, साम-सामवेद के मन्त्र, यजुष्-यजुर्वेद के मन्त्र (प्रतिष्ठिताः) प्रतिष्ठित है (यस्मिन्) जिस दिव्य मन में (प्रजानां) प्राणियों का (सर्व चित्तं ओतम्) सम्पूर्ण चित्त ओत-प्रोत-अनुस्यूत है (में तत् मनः) मेरा वही दिव्य मन (शिवसङ्कल्पम् अस्तु) शुभ संकल्पों-विचारों वाला बनें।

५. जिसमें रथ के चक्र के नाभि में स्थित छडियों में ऋग्वेद और सामवेद सुप्रतिष्ठित हैं तथा यजुर्वेद भी जिसमें सुविद्यमान है, जिसमें सकल प्रजा को सम्बन्धित सम्पूर्ण ज्ञान ओतप्रोत भरा हुआ है, वह मेरा मन कल्याणकारी संकल्प से युक्त हो।

सुषारथिरश्वानिवयन्मनुष्यानेनीयतेभीशुभिर्वाजिनऽइव।
हृत्प्रतिष्ठन्यदजिरञ्जविष्ठन्तन्मेमन÷शिवसङ्कल्पमस्तु॥६॥

[इस मन्त्र में मन की द्विविध क्रियाओं का उल्लेख किया गया है - 1. सन्मार्ग में ले जाना 2. असन्मार्ग में जाने से रोकना]

(अश्वान् सुसारथिः इव) अश्वों को अच्छे मार्ग पर ले जाने वाले कुशल सारथि को भाँति (यत्) जो दिव्य मन (मनुष्यान्) मनुष्यों को (नेनीयते) चार-बार अच्छे मार्ग पर ले जाता है (अभीशुभिः) रश्मियों-प्रग्रह-लगाम के द्वारा (वाजिनः) घोड़ों को (खराब रास्ते पर जाने से रोकने वाले) (सुसारथिः इव) कुशल सारथि की भाँति [यत् मनः नियमयति] जो मन नियन्त्रित करता है, रोकता है (यत्) जो दिव्य मन (हत्-प्रतिष्ठम्) हृदय देश में स्थित है (अजिरम्) जरा दोष रहित है, शरीर को बाल्य-युवा-वृद्धावस्था सभी में समान रूप से रहने बाला है (जविष्ठम्) अतिशय वेगशाली सबसे तेज गमन करने वाला है (में तत् मनः) मेरा वही मन (शिवसङ्कल्पम् अस्तु) शुभ संकल्प-विचारों बाला बने अर्थात् सदैव इसकी सत्पथ में प्रवृत्ति हो, कभी असन्मार्ग में नहीं।

६. सारथिकर्म करने में श्रेष्ठ सारथी जैसे रथीय अश्वों का सुसञ्चालन करता है और लगाम द्वारा उन अश्वों को सुनियन्त्रित भी करता है उसी प्रकार जो समस्त प्राणियों को संचालित तथा नियन्त्रित करता है, वह मेरा मन कल्याणकारी संकल्प से युक्त हो।

(घ) वैदिकराष्ट्रसूक्त (आ ब्रह्मन्)

इस सूक्त में एक आदर्श एवं समृद्ध राष्ट्र का स्वरूपवर्णन है। आदर्श राष्ट्र के लिए यहाँ दस बातें कही गई हैं। संसार के समस्त साहित्य को देख लीजिए, परन्तु आदर्श राष्ट्र की कल्पना इससे सुन्दर,भव्य, और श्रेष्ठ हो ही नहीं सकती।

(मन्त्रपठनाभ्यास, भावार्थज्ञान एवं प्रवचनाभ्यास)

ॐ आब्रह्मन्ब्राह्मणोब्रह्मवर्चसीजायतामा राष्ट्रेराजन्यः शूरऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णूरथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम् निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्ताँ योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥ -(यजु० २२/२२)

हे परमेश्वर !

(1) हमारे राष्ट्र में ब्राह्मण (ब्रह्मवेत्ता) ब्रह्मतेज से युक्त हों, वे ज्ञान-दीप्ति से दीप्त हों। जो ब्रह्म को जानता हो, ऋषियों, मुनियों और मेधावियों का जो राष्ट्र को सन्मार्ग दिखाते हैं उनका ही नाम ब्राह्मण है ।

(2) क्षत्रीय शूरवीर, शस्त्र चलाने में निपुण, शत्रुओं को उद्विग्न करने वाले और महारथी हों। आन्तरिक और वाह्य शत्रुओं से युद्ध करने के लिए तथा देश की रक्षा के लिए राष्ट्र में क्षत्रिय वीर हों।

(3) प्रभूत दूध देने वाली गौएँ हों। देश के नागरिकों को स्वस्थ हृष्ट-पुष्ट और बलिष्ठ बनाने के लिए राष्ट्र में गौएँ होनी चाहिएँ। जो राष्ट्र गो-दुग्ध और गो-दुग्ध से बने पदार्थों का सेवन करते हैं वे प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति करते हैं।

(4) बैल भार उठाने वाले हों।

(5) घोड़े शीघ्रगामी हों।

(6) स्त्रियाँ नगर की रक्षिका हों।

(7) इस यज्ञशील राष्ट्र का युवक सभा-सञ्चालन में कुशल, विजयशील, वीर और महारथी हो। भारतमाता के नौनिहालों को,युवक और युवतियों को इन उपदेशों को हृदयंगम कर लेना चाहिए। राष्ट्र-रक्षा का उत्तरदायित्व देश के युवक और युवतियों पर ही निर्भर है।

(8) हमारी इच्छानुसार वृष्टि हो।

(9) ओषधियाँ हमारे लिए फलवती होकर पकें।

(10) हमारा योग-क्षेम सिद्ध हो। अप्राप्त की प्राप्ति का नाम है योग और प्राप्त वस्तु के रक्षण को क्षेम कहते हैं। भाव यह है कि राष्ट्र की आवश्यकताएँ सुगमता से पूर्ण होती रहें।

[पाठ इकाई 05]

ब्राह्मणग्रन्थ एवं उपनिषदों में प्राप्त लघु आख्यान

(क) ऐतरेय ब्राह्मण में वर्णित-बालक ऐतरेय जन्म की कथा

ऐतरेयब्राह्मण के कर्त्ता-ऐतरेयब्राह्मण की रचना का श्रेय 'महिदास ऐतरेय' को मिलता है। इनके जन्म की कथा दो प्रकार से मिलती है।

प्रथमकथा- षड्गुरुशिष्य ने ऐतरेयब्राह्मण की सुखप्रदावृत्ति में इन्हें किसी याज्ञवल्क्य नामक ब्राह्मण की इतरा नामक द्वितीय स्त्री का पुत्र बतलाया है।**"आसीद् विप्रो याज्ञवल्क्यो द्विभार्यस्तस्य द्वितीयामितरेति चाहु ।** - (इति०ऐ०ब्रा० षड्गुरुशिष्य प्रथम अध्याय, पृष्ठ-४)।

सायण ने भी ऐतरेय-ब्राह्मण के भाष्य के उपोद्घात में 'ऐतरेय' नाम की व्युत्पत्ति के सन्दर्भ में एक परम्परागत कथानक प्रस्तुत किया है। इसके अनुसार किसी महर्षि की अनेक पत्नियों में एक का नाम इतरा था, जिसके पुत्र महिदास थे।**"कस्यचिद् खलु महर्षेर्बह्वःपत्नयो विद्यन्ते स्म । तासां मध्ये कस्या चिदितरेति नामधेयम् । तस्या इतरायाः पुत्रो महिदास कुमारः** । - (ऐ०ब्रा० पर सायणभाष्य) पिता का स्नेह अन्य पत्नियों के पुत्रों पर अधिक था। उन्होंने किसी यज्ञसभा में महिदास को हटाकर अन्य पुत्रों को गोद में बैठाया। खिन्नमुख महिदास को देखकर इतरा ने अपनी कुलदेवता भूमि का स्मरण किया। भूमि देवता दैवी स्वरूप धारण कर यज्ञसभा में प्रकट हुयी।**(३)ऐ०ब्रा० षड्गुरुशिष्य,** पृष्ठ-८।

उन्होने महिदास को एक दिव्य सिंहासन पर हो बैठाया और उनको अन्य कुमारों की अपेक्षा अधिक पाण्डित्य भी प्रदान किया साथ ही साथ यह वर भी दिया कि उन्हें ब्राह्मण प्रतिभासित होगा। इस अनुग्रह से महिदास के मन में ४० अध्याय का ब्राह्मण प्रादुर्भूत हुआ। इसके बाद आरण्यकरूप ब्राह्मण भी उन्हीं के मन से अविर्भूत हुआ ।

द्वितीयकथा-स्कन्दपुराण के एक अन्य कथानक के अनुसार हारीत ऋषि के वंश में माण्डूक ऋषि तथा इतरा नामक स्त्री से उत्पत्र होने के कारण इनका 'ऐतरेय' पड़ा।**"इति स्कन्दपुराण**-१.२४२.२८-३०" बचपन से ही ये 'ॐ नमो भागवते वासुदेवाय' मन्त्र का जप करने लगे थे। **"प्रादुर्वभूवभगवांस्तपसेतराया, नारायणो.. दासत्वतः स महिदास इति प्रसिद्धः "**

ये किसी से बोलते नहीं थे। इसलिए माण्डूक ने पिङ्गा नामक दूसरी स्त्री से विवाह किया जिससे उन्हें चार पुत्र हुए, जो बड़े ही विद्वान् थे। अतः उनका सम्मान हुआ। इतरा ने अपने पुत्र से कहा कि तेरे गुणवान् न होने के कारण तेरे पिता मेरा अपमान करते हैं। अतः अब मैं देह त्याग दूँगी। तब ऐतरेय ने उन्हें धर्म का उपदेश देकर देहत्याग के विचार पर परावृत्त कर दिया। अन्त में भगवान् विष्णु ने उन दोनों को साक्षात् दर्शन देकर आशीर्वाद दिया। बाद में भगवान् के आदेशानुसार कोटितीर्थ पर होने वाले हरिमेश्य के यज्ञ में जाकर वेदार्थ पर उन्होंने प्रवचन किया। हरिमेश्य ने इनका पूजन कर अपनी कन्या से इनका विवाह कर दिया। ऐतरेय आरण्यक में इनका अनेक बार उल्लेख है, किन्तु वहाँ कहीं भी उन्हें उस ग्रन्थ का कर्ता नहीं कहा गया है। **"ऐ०आ० षड्गुरुशिष्य, भूमिका।"**

ऐतरेय उपनिषद् भाष्य में भी इन्हें इतरा के तपोबल से उत्पन्न माना गया है। **"महिदासाभिज्ञो जज्ञे इतरायास्तपो बलात्।** "ऐ०आ०-२.१.८, ३.७"

ब्रह्मसूत्र के मध्यभाष्य में इनके सम्बन्ध में ब्रह्माण्डपुराण से एक श्लोक भी उद्धृत किया गया है। **"साक्षात् स भगवान् विष्णुस्तन्त्रं वैष्णवं धात् ।।** (इति ब्रह्माण्डपुराणे, द्र० बा०सू०भ० भा०)।

भागवत् पुराण के टीकाकार के अनुसार इन्हें हरि का अवतार कहा गया है। **"भागवतपुराण-** २.७.१९, विजयध्वज ।"

(ख) कठोपनिषद् में वर्णित-यक्ष-नचिकेता संवाद –

कठोपनिषद् कृष्णयजुर्वेद शाखा का उपनिषद् है। इस उपनिषद् के रचयिता कठ नाम के आचार्य मुनि वैश्म्पायन के शिष्य तथा यजुर्वेद की कठ शाखा के प्रवर्तक थे। इसमें दो अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय में तीन-तीन वल्लियाँ हैं, जिनमें वाजश्रवस उद्दालक ऋषि के पुत्र नचिकेता एवं यम के मध्य संवाद का उल्लेख मिलता है। एक बार महर्षि अरूण के पुत्र उद्दालक मुनि ने फल की कामना से विश्वजित महान यज्ञ किया। इस यज्ञ में उद्दालक मुनि ने ब्राह्मणों को धन, वस्त्र और ऐसी गाय दान की, वे बूढ़ी एवं बीमार थीं तथा प्रजनन क्षमता व दूध देने में असमर्थ थी। ऋषि पुत्र नचिकेता ने जब यह देखा तो वह पिता जी से बोले हे पिताजी! आप यह कैसी गायों को दक्षिणा में दे रहे हैं? जिन गायों का ब्राह्मण उपयोग नहीं कर सकेंगे। दान तो ऐसा होना चाहिए जो लेने वाले को लाभ पहुँचाए। आप तो पुण्य नहीं पाप कर रहे हैं। जो नरकगामी होगा। पिता उद्दालक ने पुत्र की बात को अनसुना कर दिया। पुत्र नचिकेता ने मन ही मन निश्चय किया कि वह अपने पिता को यह पाप नहीं करने देगा चाहे इसके लिए उसे अपने

प्राणों का बलिदान ही क्यों न करना पड़े। इसलिए उसने दृढ निश्चय करके कहा- पिताश्री! मैं भी तो आपका धन हूँ, आप मुझे किसे देगें ? जब नचिकेता ने बार-बार यह प्रश्न करने लगा तो उद्दालक क्रोधित होकर बोले तुझे मृत्यु को देता हूँ।

अपने पिता की आज्ञाका पालन करने के लिए नचिकेता यम के यहाँ चला गया। उस समय यमराज अपने आवास पर नहीं होते हैं इसलिए वह यम की प्रतिक्षा में तीन दिन तक भूखा-प्यासा यम के द्वार पर बैठा रहा। **"तिस्रोरात्रीर्यदवात्सीर्गृहे मेऽनश्नन्ब्रह्मन्नतिथिर्नमस्य, नमस्तेऽस्तु ब्रह्मन्स्वस्ति मेऽस्तु तस्मात्प्रतित्रीन्वरान्वृणीष्व"(कठोपनिषद् 1/1/9)**

जब तीन रात्रि के बाद जब यमराज लौटकर आएँ तो उनके कर्मचारियों ने वस्तुस्थिति से अवगत कराया, तो वे नचिकेता के साहस देखकर क्षमा माँगते हुए नचिकेता से तीन वरदान देने की बात कहते हैं।

प्रथम वरदान-तब नचिकेता प्रथम वरदान माँगते हुए कहते हैं -हे मृत्युदेव! जब मैं लौटकर घर जाऊँ तो मेरे पिता क्रोध त्यागकर, शान्त चित्त होकर मुझसे प्रेमपूर्वक व्यवहार करें और अपनी शेष आयु में उन्हें कोई चिन्ता नहीं हो तथा वे सुख से रहें। यमराज ने 'तथास्तु' कहकर पहला वरदान प्रदान कर दिया।

- **द्वितीय वरदान**-नचिकेता ने दूसरा वरदान मांगते हुए कहा 'हे मृत्युदेव ! आप मुझे स्वर्ग के साधनभूत उस अग्निज्ञान को प्रदान करें जिसके द्वारा स्वर्गलोक को प्राप्त हुए पुरुष अमरत्व को प्राप्त करते हैं। इस पर यमराज ने नचिकेता को विस्तार से अग्नियज्ञ की विधि भी बताई तथा उसमें उच्चारित किये जाने वाले मंत्रों को भी समझाया। उसके पश्चात नचिकेता की परीक्षा लेने के लिए यमराज ने यज्ञ की विधि तथा मंत्र दोनों को बताने के लिए कहा तो बालक नचिकेता ने अक्षरशः दोहरा दिया। यह सुनकर यमराज बालक की स्मरण शक्ति और प्रतिभा को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए और कहा-'हे नचिकेता! तीन वरदानों के अतिरिक्त मैं तुम्हें एक वरदान और देता हूँ कि मेरे द्वारा कही गई अग्निविद्या आज से तुम्हारे नाम से जानी जाएगी। इस विद्या का नाम **'नाचिकेताग्नि'** अर्थात् 'लिप्त न होने वाले की विद्या' पड़ा। कहते हैं कि इस विद्या का साधक जन्म-मुत्यु के दुष्चक्र से मुक्त हो जाता है।
- **तृतीय वरदान**-अब तृतीय वरदान मांगते हुए नचिकेता ने कहा 'हे मृत्युदेव ! आप मुझे कृपा कर यह बताएं कि मृत्यु के पश्चात आत्मा का क्या होता है अर्थात् आत्मा कहां प्रस्थान करती है? यमराज ने यह वरदान सुनकर नचिकेता से कहा "वत्स ! यह विषय अत्यन्त गूढ़ है, अगम्य है।

इसे जानना और समझना तेरे वश की बात नहीं है। इसके बदले में तुम चाहो तो मैं तुम्हें विश्व की समस्त सम्पदा, भोग और साम्राज्य दे सकता हूँ परन्तु नचिकेता यमराज के प्रलोभन में नहीं आया और अपने मांगे हुए वरदान पर अड़िग रहा। नचिकेता ने कहा- "हे सबका अन्त करने वाले यमराज ! आपने जिन भोग्य वस्तुओं एवं साम्राज्य की महिमा के विषय में बता रहे हैं वे सभी क्षणभंगुर हैं। इनके संयोग से प्राप्त होने वाला सुख वास्तविक सुख नहीं है, वह तो दुख ही है। ये भोग्य पदार्थ कोई लाभ तो देते नहीं अपितु मनुष्य की इन्द्रियों के तेज और धर्म का हरण कर लेते हैं। आपने जो दीर्घजीवन देना चाहा है, वह भी अनन्तकाल की तुलना में अत्यन्त अल्प ही है। जब ब्रह्मा आदि देवताओं कौ जीवन भी अल्पकाल का है, एक दिन उन्हें भी काल का ग्रास बनने के लिए विवश होना पड़ता है तब दूसरों की तो बात ही क्या है? अतएव मैं यह सब नहीं चाहता। ये आपके रथ, हाथी, घोड़े, ये रमणियां और नाच-गान आप अपने पास ही रखें। आप तो मुझे कृपाकर आत्म तत्व के बारे में ही बताने का अनुग्रह करें।' तब यमराम ने नचिकेता को बहुत समझाया पर वह नहीं माना। अन्त में यमराज ने नचिकेता के हठ को देखकर कहा - "वत्स जीवात्मा के समक्ष दो मार्ग हैं- एक है प्रेय मार्ग और दूसरा है श्रेय मार्ग। प्रेय मार्ग संसार की ओर ले जाता है जहां कांचन, कामिनी और कीर्ति है। **"श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतस्तौ संपरीत्य विविनक्ति धीरः। श्रेयो हि धीरोऽपि प्रेयसो वृणीत प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद् वृणीते॥ (कठो.1/2/2)** श्रेय मार्ग ईश्वर की ओर ले जाता है जहां मोक्ष है, समस्त दुखों की निवृति है। ज्ञानीजन श्रेय मार्ग का अनुसरण करते हैं। आत्मज्ञान श्रेय मार्ग की ओर ले जाता है। एक साधक मानव शरीर में स्थित आत्मा को ही जानने का प्रयत्न करता है। यमराज कहते हैं -

न जायते म्रियते व विपश्चिन्नायं कुतश्चिन्न बभूव कश्चित्।

अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ।। (1/2/18)

अर्थात् यह नित्य ज्ञानस्वरूप आत्मा न तो उत्पन्न होता है और न ही मृत्यु को ही प्राप्त होता है। यह आत्मा न तो किसी अन्य के द्वारा जन्म लेता है और न कभी उत्पन्न होता है। यह आत्मा अजन्मा, नित्य, शाश्वत और क्षय तथा वृद्धि से रहित है। शरीर के नष्ट हो जाने पर यह विनष्ट नहीं होता। यमराज ने कहा 'हे नचिकेता ! जो विवेकशील हैं, जिसने मन सहित अपनी समस्त इन्द्रियों को वश में कर लिया है, जो सदैव पवित्र भावों को धारण करने वाला है, वही उस आत्म-तत्व को जान पाता है-

एष सर्वेषु भूतेषु गुढात्मा न प्रकाशते ।

दृश्यते त्वग्रयया बुद्धया सूक्ष्मया सुक्ष्मदर्शिभिः ।। (1/3/12)

अर्थात् समस्त प्राणियों में व्याप्त यह आत्म-तत्व प्रकाशित नहीं होता, वरन् यह सूक्ष्मदृष्टि रखने वाले तत्वदर्शियों को ही सूक्ष्म बुद्धि से दिखाई देता है। इसके उपरान्त यमराज ने बताया कि मृत्यु के पश्चात आत्मा का क्या होता है अर्थात् वह कहां प्रस्थान करता है? इस गूढ़ रहस्य का वर्णन करते हुए यमराजजी महाराज कहते हैं -

योनिमन्ये प्रपद्यन्ते शरीरत्वाय देहिनः।

स्थाणुमन्येऽनुसंयन्ति यथाकर्म यथाश्रुतम् ।। (2/2/7)

अर्थात् अपने-अपने कर्म और शास्त्राध्यन के अनुसार प्राप्त भावों के कारण कुछ जीवात्मा तो शरीर धारण करने के लिए विभिन्न योनियों को प्राप्त करते हैं और अन्य अपने-अपने कर्मानुसार जड़-योनियों अर्थात् वृक्ष, लता, पर्वत आदि को प्राप्त करते हैं। यमराज नचिकेता को मोक्ष का मार्ग बताते हुए कहते हैं कि यह सम्पूर्ण विश्व उस प्राणरूप ब्रह्म से ही प्रकट होता है और निरन्तर गतिशील रहता है। जो ऐसे ब्रह्म को जानते हैं वे ही मोक्ष को प्राप्त करते हैं। इस परब्रह्म के भय से ही अग्निदेव तपते हैं, सूर्यदेव उदय और अस्त होकर अपने कर्तव्य पालन में संलग्न रहते हैं। इन्द्र, वायु और मृत्यु देवता भी इन्हीं के भय से गतिशील रहते हैं। वे आगे कहते हैं- 'हे नचिकेता! मृत्यु से पूर्व जो जीवात्मा ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त कर लेता है, वह जीव सदैव के लिए समस्त बन्धनों से मुक्त हो जाता है अन्यथा वह अनन्त काल तक विभिन्न योनियों में भटकता हुआ अपने कर्मों का फल भोगता रहता है।' **"उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत" (कठोपनिषद्-**1/3/14)

अन्त में यमराज नचिकेता को मनुष्य के मन की महत्ता को समझाते हुए कहते हैं कि मनुष्य का अन्तःकरण विशुद्ध दर्पण के समान है। इसमें ही परब्रह्म के दर्शन किये जा सकते हैं। जब मन के साथ सभी इन्द्रियां आत्मतत्व में लीन हो जाती हैं और बुद्धि भी चेष्टा रहित हो जाती है, तब इसे जीव की परमगति कहा जाता है। इन्द्रियों का संयम करके आत्मा में लीन होना ही योग है। हृदय की समस्त ग्रन्थियां खुल जाने से मरणधर्मा मनुष्य अमृतत्व अर्थात् मोक्ष को प्राप्त कर लेता है। उपनिषद् कहता है कि यमराज के श्रीमुख से ऐसी अलौकिक परम और दिव्य विद्या का ज्ञान प्राप्त कर नचिकेता बन्धनमुक्त होकर मोक्ष को प्राप्त हो गया। इसी प्रकार दूसरा भी जो कोई इस आध्यत्म विद्या को जानने वाला और

श्रद्धापूर्वक धारण करने वाला है. वह भी नचिकेता की तरह सब विकारों से रहित तथा जन्म-मृत्यु से मुक्त होकर परब्रह्म परमात्मा को प्राप्त हो जाता है। अतः जैसा कि कठोपनिषद् में कहा गया है -

मृत्युप्रोक्तां नचिकेताऽथ लब्धवा विद्यामेतां योगाविधिं च कृत्स्नम्।

ब्रह्मप्राप्तो विरजोऽभूद्विमृत्युरन्योऽरयेवं यो विद्यात्मेव ।। (3/2/18)

(मन्त्रपठनाभ्यास, भावार्थज्ञान एवं प्रवचनाभ्यास) विचार करें।

[पाठ इकाई 06]

पौराणिक आख्यानों का आधार परिचय

(क) पुराण की परिभाषा-

"वाचस्पत्यम्"ग्रन्थ के अनुसार पुराण की परिभाषा इस प्रकार उल्लेखित है-

प्राचीनकाल(इतिहासविषयों) में जो लेकर जाता हो उसे पुराण कहते हैं **"पुराकाले-इतिहासकाले य:नीयते"**।

निरुक्तग्रन्थ के अनुसार इस अर्थ में निर्वचन प्राप्त होता है-

पुरा+न=**पुराकाले नवं** आसीत्। पुराण अर्थात् जो पुराना होकर भी नया हो, उसे पुराण कहते है।यहाँ पर नया-नवीन विषय से तात्पर्य है कि यह पुराण प्राचीन होने के बाद भी हमारे जीवनचर्या में कुछ न कुछ प्रतिदिन नया ज्ञान सिखाता है। अर्थात इसको प्राचीन समझकर छोडने के बजाय इसे नवीन-वैज्ञानिक अन्वेषणीयज्ञान मानकर इसे चरित्र में उतारने योग्य है, इस कारण पुराणों का हमारी सनातन संस्कृति में विशेष महत्त्व है। ।

(ख) अष्टादश पुराणों के नाम सहित अतिसंक्षिप्त परिचय

शास्त्र के अनुसार कुल अठ्ठारह पुराण होते हैं.साथ ही अट्ठारह उप-पुराण भी माने जाते हैं। पुनः पुराणों को दो भागों में विभक्त किया गया है- वैष्णव और शैव। जिन पुराणों में विष्णु की महिमा वर्णित है उन्हें वैष्णव पुराण और जिनमें शिव की महिमा का उल्लेख है उन्हें शैव पुराण कहा जाता है। सभी १८ पुराणों में वेदविषयों का लौकिक भाषा में सरलता एवं सहजता से प्रस्तुत किया गया है, १८ पुराण निम्नवत हैं,यथा-

पुराण के पञ्च लक्षण-

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।

वंशानुचरितञ्चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्॥ (विष्णुपुराण)

यथा १. सर्ग, २. प्रतिसर्ग, ३.वंश, ४. मन्वन्तर, ५. वंशानुचरित ।

१८ पुराणों के नाम की सूची

'म-द्वयं भ-द्वयञ्चैव ब्र-त्रयं व-चतुष्टयम् ।

अ-ना-प-लिङ्-ग-कू-स्कानि पुराणानि प्रचक्षते॥ (देवीभागवत)

१.ब्रह्म पुराण, २.पद्म पुराण, ३.विष्णु पुराण , ४.शिव पुराण, ५. भागवत पुराण

(क)श्रीमद्भागवत (ख)देवी भागवत

६.नारद पुराण, ७.मार्कण्डेय पुराण, ८.अग्नि पुराण, ९.भविष्य पुराण, १०.ब्रह्मवैवर्त पुराण, ११.लिंग पुराण, १२.वाराह पुराण, १३.स्कंद पुराण, १४.वामन पुराण, १५.कूर्म पुराण, १६.मत्स्य पुराण, १७.गरुड़ पुराण, १८.ब्रह्मांड पुराण।

१. ब्रह्म पुराण

ब्रह्म पुराण में कुल 243 अध्याय हैं। इसमें श्लोकों की संख्या 10,000 से ज्यादा है। ब्रह्म पुराण दो भागों में विभाजित है।

विष्णु पुराण में ब्रह्म पुराण को प्रथम पुराण माना गया है।

यह पुराण आदिपुराण के नाम से भी प्रसिद्ध है।

ब्रह्म पुराण में ब्रह्मा का विशेष रूप से उल्लेख है किंतु सूर्य से जगत की उत्पत्ति मानकर सूर्य को अधिक महत्व दिया गया है।

ब्रह्म पुराण में वर्णित है कि धर्म ही परम पुरुषार्थ है **(धर्मे मतिभवतु व पुरुषोत्तमाना)**।

वर्णित विषय –

पहला भाग – देव, असुर, प्रजापति, दक्ष इत्यादि की उत्पत्ति का वर्णन, भगवान सूर्य के वंश की कथा, भगवान रामचंद्र की कथा, द्वीप-द्वीपान्तर, समुद्र, वर्ष, पाताल और स्वर्ग का विस्तार से वर्णन, सभ नरकों के नाम, सूर्य की प्रशंसा, पार्वती के जन्म और विवाह की कथा आदि।

दूसरा भाग – तीर्थ यात्रा के विषय में बड़े विस्तार से कथा लिखी गई है। यमलोक का वर्णन करते हुए पितरों के लिए श्राद्ध की विधि बताई गई है। वैष्णव धर्म, चारों युगों की कथा, प्रलय की कथा इत्यादि।

२. पद्म पुराण

पद्म पुराण को पांच खंडों में विभाजित किया गया है। पांचों खंडों को मिलाकर इसमें श्लोकों की संख्या 55 हजार से ज्यादा है।

नारायण की नाभि से एक पद्म की उत्पत्ति तथा उस पर आसीन ब्रह्मा जी द्वारा इस पुराण की कथा का उद्घाटन करने के कारण इस पुराण् का नाम पद्मपुराण पड़ा।

पद्म पुराण विष्णु भक्ति का प्रधान पुराण है।

वर्णित विषय –

सृष्टि खंड – इतिहास के साथ विस्तारपूर्वक धर्म की कथाएं लिखी गई हैं। पुष्कर माहात्म्य, ब्रह्मयज्ञ विधान, वेदपाठी आदि के लक्षण, दान, व्रत, पार्वती विवाह, तारक की कथा, ग्रहों की पूजा इत्यादि।

भूमि खंड – माता-पिता आदि की पूजा, सुव्रत की कथा, वृत्रासुर के मारने की कथा, नहुष की कथा, ययाति की कथा, सूत-शौनक संवाद इत्यादि।

स्वर्ग खंड – ब्रह्मांड की उत्पत्ति, भूमि के साथ और लोकों के ठहरने की कथा, तीर्थों का वर्णन, नर्मदा की उत्पत्ति की कथा, कुरुक्षेत्र आदि पवित्र तीर्थों का वृत्तान्त, काशी, गया, प्रयाग का माहात्म्य वर्णन, वर्णाश्रम धर्मों की कथा, व्यास और जैमिनी का संवाद, समुद्र मंथन की कथा इत्यादि।

पाताल खंड – भगवान श्री राम के द्वारा अश्वमेध यज्ञ करना, राज्याभिषेक, जगन्नाथ और वृंदावन का माहात्म्य, कृष्ण अवतार की लीलाओं का वर्णन, माघ मास में स्नान, दान और पूजा पाठ का फल, पृथ्वी और वराह संवाद, यमराज और ब्राह्मण की कथा, दधीचि की कथा इत्यादि।

उत्तर खंड – गौरी के प्रति शिवजी का पर्वत वर्णन, जालंधर दैत्य की कथा, श्रीशैल माहात्म्य, राजा सगर की कथा, गंगा, प्रयाग, काशी और गया की कथा, 24 प्रकार की एकादशी की कथा, एकादशी माहात्म्य, विष्णु सहस्त्रनाम, जंबूद्वीप के अनेक तीर्थों की कथा, नृसिंह की उत्पत्ति, गीता माहात्म्य, श्रीमद्भागवत का माहात्म्य, मत्स्य आदि अवतारों की कथा इत्यादि।

३. विष्णु पुराण

विष्णु पुराण वैष्णव धर्म का मूल आधार है।

दार्शनिक दृष्टि से विष्णु पुराण को भागवत के बाद दूसरा स्थान प्राप्त है।

विष्णु पुराण में 6 अंश हैं। 6 अंशों को मिलाकर इसमें कुल 126 अध्याय हैं। इसमें श्लोकों की संख्या 7000 के लगभग है।

विष्णु पुराण का उत्तर खंड ही विष्णुधर्मोत्तर पुराण कहलाता है।

वर्णित विषय –

पहला अंश – सृष्टि की कथा, देव आदि की सृष्टि, चारों वर्णों की सृष्टि, भृगु की उत्पत्ति, इंद्र के प्रति दुर्वासा का शाप, प्रह्लाद चरित, नरसिंह अवतार इत्यादि।

दूसरा अंश – जंबूद्वीप का वर्णन, 6 द्वीपों का वर्णन, सातों पातालों का वर्णन, नरक का वर्णन, सूर्य आदि ग्रहों और सातों लोकों का वर्णन, वर्षा के होने के कारण, भरत की कथा इत्यादि।

तीसरा अंश – मनुओं और मन्वंतरों की कथा, वेदव्यास के 28 नामों का वर्णन, वेदव्यास का माहात्म्य, सामवेद और अथर्ववेद की शाखाओं का वर्णन, पुराणों के नाम और उनके लक्षण, गृहस्थ के सदाचार, श्राद्ध का फल इत्यादि।

चौथा अंश – वंश के विस्तार की कथा, ब्रह्मा और दक्ष आदि की उत्पत्ति, पुरूरवा का जन्म, इक्ष्वाकु का जन्म, गंगा का पृथ्वी पर अवतरण, विश्वामित्र के यज्ञ की कथा, सीता जी का जन्म, नहुष और ययाति की कथा, श्री कृष्ण के जन्म और विवाह की कथा, नंद राज्य, कलि की उत्पत्ति और राजाओं के चरित इत्यादि।

पांचवां अंश – भगवान विष्णु के कृष्ण अवतार की कथा का विस्तार से वर्णन किया गया है। इसमें कृष्ण की लीलाओं और उनके कार्यों की विस्तार से चर्चा।

छठा अंश – कलि के स्वरूप और कली के धर्मों का कथन, कल्प की कथा, प्रलय में ब्रह्मा की स्थिति, केशिध्वज की कथा, धर्मधेनु वध, आत्मज्ञान, देहात्मवाद की निंदा, विष्णु पुराण की प्रशंसा और विष्णु नाम स्मरण का माहात्म्य इत्यादि।

४. शिव पुराण

शिव पुराण को कहीं-कहीं वायु पुराण भी कहा गया है, इस पुराण में छह संहिताएं हैं। इन संहिताओं में लगभग 24000 श्लोक हैं। शिव पुराण में लगभग 112 अध्याय हैं।

शिव पुराण पुराणों के पंच लक्षणों को पूरा करता है।

वर्णित विषय –

ज्ञान संहिता – ब्रह्मा और नारद का संवाद, ज्योतिर्लिंग की उत्पत्ति, विभिन्न ज्योतिर्लिंगों का वर्णन, ओंकार की उत्पत्ति, शिव का शब्द महत्व, शिव पूजा की विधि, शिवलिंग पूजा की विधि, पार्वती की तपस्या और शिव के साथ विवाह, षोडशोपचार से शिव पूजा की विधि, गणेश के सिर कटने की कथा, शिवरात्रि का महत्व, काशी में मोक्ष प्राप्ति की कथा इत्यादि।

विद्येश्वर संहिता – ब्रह्मा और विष्णु के युद्ध, शिवलिंग का बनना, उसकी प्रतिष्ठा की विधि और मूर्ति पूजा का वर्णन, पंच महायज्ञ का वर्णन, शिव पर बेलपत्र चढ़ाने का माहात्म्य, रुद्राक्ष का माहात्म्य, प्रणव (ओंकार) का वर्णन, संन्यासियों के लिए अंत्येष्टि कर्म का कथन इत्यादि।

कैलाश संहिता – ओंकार के अर्थ का वर्णन, प्रणव का उद्धार और उसके पूजन की विधि, शंख पूजा, गुरु पूजा और शिव पूजा का विधान, संन्यासियों के लिए अंत्येष्टि कर्म का कथन इत्यादि।

सनत्कुमार संहिता – जगत की सृष्टि और सात दीपों का वर्णन, नरक आदि का वर्णन, रूद्र माहात्म्य और शिव की पांच मूर्तियों की कथा, सनत्कुमार का चरित्र और उनकी सिद्धि का वर्णन, तीर्थों की कथा, दान की महिमा, धर्म-कर्म का उपदेश, शिव के श्मशान भूमि में रहने का कारण, ध्यान का वर्णन, काशी माहात्म्य, मण्डूकी की कथा, नंदी की कठिन तपस्या का वर्णन, नंदी विवाह, त्रिपुर की कथा, शिवलोक का वर्णन इत्यादि।

वायवीय संहिता – शिव की कृपा से ब्रह्मा की जगत रचना, कृष्ण को पुत्र की प्राप्ति, शक्ति आदि की सृष्टि का वर्णन, शक्तिरूपिणी स्त्रियों की रचना, दक्ष यज्ञ की कथा, शिव-पार्वती संवाद, पशुपत व्रत का वर्णन, भस्म की महिमा, उपमन्यु की कथा, ओम नमः शिवाय मंत्र का महत्व, शिव पूजा विधि, शिव के 112 अवतारों का वर्णन इत्यादि।

धर्म संहिता – श्री कृष्ण की शिव मंत्र दीक्षा, त्रिपुरदाह का वर्णन, अंधक दैत्य का वध, काम के प्रकार, काम तत्व का निरूपण, नित्य नैमित्तिक शिव पूजा की विधि, धर्म की कथा, हाथी के दान की कथा, शिव के सहस्त्र नाम, परशुराम के तुलादान की कथा, पंचब्रह्म की कथा, अरुंधती और देवताओं का लाभ इत्यादि।

५. भागवत पुराण

भागवत दो हैं। एक श्रीमद्भागवत और दूसरा देवी भागवत। विष्णु के भक्त श्रीमद्भागवत को पुराणों में गिनते हैं जबकि देवी के भक्त देवी भागवत को।

श्रीमद्भागवत वैष्णव ग्रंथ है जबकि देवी भागवत शाक्त ग्रंथ है।

(क) श्रीमद्भागवत

श्रीमद्भागवत में 12 स्कंध हैं। सभी स्कंधों को मिलाकर 335 अध्याय हैं। इसमें 18000 श्लोक हैं।

वर्णित विषय –

पहला स्कंध – नैमिष क्षेत्र की कथा, अवतार कथा के प्रसंग में भगवान श्रीकृष्ण के चरित्र का वर्णन, श्री कृष्ण द्वारा परीक्षित की रक्षा, श्री कृष्ण का द्वारिका गमन, धृतराष्ट्र का स्वर्ग के लिए प्रस्थान इत्यादि।

दूसरा स्कंध – विष्णु की भक्ति की महिमा, विराट सृष्टि का वर्णन, विराट पुरुष की विभूति का वर्णन इत्यादि। दूसरे स्कंध से ही भागवत की कथा का आरंभ होता है।

तीसरा स्कंध – विदुर-उद्धव संवाद, कृष्ण द्वारा कंस का वध, विराट पुरुष की सृष्टि की कथा, ब्रह्मा की सृष्टि, भगवान विष्णु के वराह अवतार की कथा, कपिल मुनि का जन्म, ध्यान में योग के द्वारा आत्म स्वरूप का ज्ञान इत्यादि।

चौथा स्कंध – मनु की कन्याओं का वर्णन, दक्ष का यज्ञ, ध्रुव के पराक्रम का वर्णन, राजा पृथु द्वारा अश्वमेध यज्ञ इत्यादि।

पांचवां स्कंध – प्रियव्रत की कथा, भगवान विष्णु का जन्म, राजा भरत का विवाह, सुमेरु पर्वत के आसपास का वर्णन, समुद्र सहित छह द्वीपों का वर्णन, सूर्य की गति, चंद्रमा और उसकी गतियों, शेषनाग इत्यादि।

छठा स्कंध – प्रजा की रचना करने के लिए दक्ष का हरिभजन, इंद्र को नारायण कवच का उपदेश, वृत्रासुर की कथा, चित्रकेतु की कथा, दिति के पुंसवन व्रत की कथा इत्यादि।

सातवां स्कंध – भगवान विष्णु के नरसिंह अवतार की कथा और हिरण्यकशिपु का वध, चारों आश्रमों के धर्म का वर्णन इत्यादि।

आठवां स्कंध – स्वायंभुव, स्वारोचिष, उत्तम और तामस इन चार मनुओं का वर्णन, गजेंद्र मोक्ष का वर्णन, समुद्र मंथन का वर्णन, भगवान विष्णु का वामन अवतार एवं मत्स्य भगवान की लीलाओं का वर्णन इत्यादि।

नवां स्कंध – वैवस्वत मनु के पुत्र का वंश वर्णन, मांधाता के जामाता सौभरि की कथा, कुश और इक्ष्वाकु के पुत्र शशाद के कुल का वर्णन, निमि के वंश का वर्णन, परशुराम के पिता जमदग्नि का वध, विश्वामित्र के वंश की कथा, नहुष के पुत्र ययाति की कथा, दिवोदास की कथा, अनु द्रुह व तुर्वसु के वंश की कथा इत्यादि।

दसवां स्कंध – भगवान विष्णु के कृष्ण अवतार की कथा कही गई है। कृष्ण के जन्म, उनकी लीलाओं, कंस का वध, कृष्ण के विवाह, सुदामा की कथा, युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ, सुभद्रा हरण इत्यादि।

ग्यारहवां स्कंध – यदुवंश के विध्वंस के लिए मूसल के पैदा होने की कथा, श्री कृष्ण का वैकुंठ गमन, विष्णु के अवतारों की विभूति का वर्णन, ज्ञान की कथा, आत्मा और अन्य सब पदार्थों की उत्पत्ति और नाश, भक्ति योग का वर्णन, कुसंग से योग मार्ग में रुकावट इत्यादि।

बारहवां स्कंध – कलियुग का प्रभाव, वर्णसंकरता का वर्णन, मगध वंश के भविष्य के राजाओं की नामावली, कल्कि अवतार की कथा, राजा परीक्षित को मोक्ष की प्राप्ति, जनमेजय का सर्प यज्ञ, पुराणों के लक्षण, महापुरुषों का वर्णन, मार्कण्डेय की तपस्या इत्यादि।

(ख) देवी भागवत

श्रीमद्भागवत की तरह देवी भागवत में भी 12 स्कंध हैं। इसकी भी श्लोक संख्या 18000 है। इसमें कुल 317 अध्याय हैं।

वर्णित विषय –

पहला स्कंध – पुराण के लक्षण, 18 महापुराणों के नाम, उपपुराणों के नाम, शुकदेव जी के जन्म व जीवन की कथा, नारद-व्यास संवाद, हयग्रीव अवतार की कथा, मधु-कैटभ दैत्यों की कथा, बृहस्पति की स्त्री तारा के साथ चंद्रमा का मेल-मिलाप, पुरूरवा का जन्म, धृतराष्ट्र, विदुर व पांडु की उत्पत्ति की कथा इत्यादि।

दूसरा स्कंध – सत्यवती की कथा, मत्स्यगंधा की कथा, व्यासदेव के जन्म की कथा, महामिष राजा का वृतांत, राजा शांतनु की उत्पत्ति व गंगा से विवाह, कर्ण की जन्म कथा, धृतराष्ट्र की मृत्यु, श्रीकृष्ण का वैकुंठ गमन, परीक्षित की कथा, जन्मेजय का सर्प यज्ञ इत्यादि।

तीसरा स्कंध – निर्गुण सगुण की कथा, सगुण के लक्षण, सत्यव्रत ऋषि की कथा, देवदत्त ब्राह्मण की कथा, ध्रुवसंधि की कथा, जयद्रथ का द्रौपदी हरण, विश्वामित्र की कथा, सुदर्शन की कथा, श्री राम का जन्म एवं वन गमन, नवरात्र का व्रत-उपदेश इत्यादि।

चौथा स्कंध – कृष्ण अवतार की कथा का प्रश्न, कर्म फल की प्रधानता, वरुण का धेनु हरण, पुत्र के लिए दिति का व्रत, प्रहलाद का राज्यारोहण, शुक्राचार्य का पुत्र यज्ञ, देवासुर संग्राम इत्यादि।

पांचवां स्कंध – सभी देवों में शिव की प्रधानता का वर्णन, महिषासुर की कथा, मंदोदरी उपाख्यान, ध्रूमलोचन युद्ध, शुंभ-निशुंभ की कथा, चंड-मुंड का वध, रक्तबीज का युद्ध, महामाया का महात्म्य वर्णन, शिवलिंग की थाह लेने के लिए ब्रह्मा और विष्णु का उद्योग, सुरथ और समाधि की देवी उपासना इत्यादि।

छठा स्कंध – वृत्रासुर की कथा, इंद्र के स्वर्ग छोड़कर मानसरोवर जाने की कथा, इंद्र और नहुष की कथा, कलियुग महिमा, शुनःशेप की कथा, लक्ष्मी को शिव का वरदान, अगस्त्य और वशिष्ठ की उत्पत्ति, जनक की उत्पत्ति, हैहय-गण की कथा, नारद के पुत्र से जुड़ी कथा इत्यादि।

सातवां स्कंध – इंद्र और सूर्य वंश की कथा, च्यवन ऋषि की कथा, शर्याति की कथा, मांधाता के वंश का वर्णन, सत्यव्रत की कथा, हरिश्चंद्र एवं उसके पुत्र रोहित की कथा, शताक्षी देवी का महात्म्य, दक्ष के घर सती की उत्पत्ति, तारकासुर का वर्णन, योग का वर्णन, ब्रह्म ज्ञान का उपदेश, भक्ति और ज्ञान का वर्णन, देवी पूजा का विधान इत्यादि।

आठवां स्कंध – वराह अवतार की कथा, जंबूद्वीप का वर्णन, सुमेरु पर्वत का वर्णन, नद, नदी और देवी का वर्णन, सूर्य व चंद्रमा की गति का वर्णन, नरकों के नाम इत्यादि।

नवम स्कंध – देवी की अनेक मूर्तियों का वर्णन और पूजा विधि, विष्णु और महादेव की उत्पत्ति, सरस्वती कवच और स्तोत्र, कलि का वर्णन, कल्कि अवतार की कथा, पृथ्वी की उत्पत्ति, गंगा की उत्पत्ति व पूजा, तुलसी की कथा, विश्वध्वज का उपाख्यान, सीता हरण, सीता का द्रौपदी रूप से जन्म ग्रहण, द्रोपदी के पांच पति होने का कारण, शंखचूड और शिव का युद्ध, महालक्ष्मी की कथा, समुद्र मंथन की कथा, सती सावित्री और सत्यवान की कथा, जन्माष्टमी और शिवरात्रि व्रत का विधान, 86 कुंडों का वर्णन, मनसा देवी की कथा, सुरभि की कथा, दुर्गा और राधा का महात्म्य इत्यादि।

दसवां स्कंध – शिव द्वारा विंध्याचल की गति रोकना, चाक्षुष मनु की कथा, महाकाली चरित, मधु-कैटभ वध, शुंभ-निशुंभ वध, महिषासुर वध, भ्रामरी देवी की कथा इत्यादि।

ग्यारहवां स्कंध – सदाचार और नित्यक्रिया का वर्णन, रुद्राक्ष की महिमा, भस्म धारण का महात्म्य, त्रिपुंड का महात्म्य, गायत्री की 24 मुद्रा और गायत्री जाप के महात्म्य इत्यादि।

बारहवां स्कंध – गायत्री की अद्भुत महिमा का वर्णन, गायत्री सहस्त्रनाम, गायत्री स्तोत्र, गायत्री की कृपा से गौतम की सिद्धि की कथा इत्यादि।

६. नारद पुराण

नारद पुराण में वर्णित है कि इसमें 25000 श्लोक हैं। नारद पुराण के दो भाग हैं पूर्व और उत्तर। पूर्व में 125 और उत्तर में 82 अध्याय हैं।

यह पुराण वैष्णव पुराण की श्रेणी में आता है।

इस पुराण की विशेषता यह है कि इसके प्रत्येक अध्याय के अंत में श्लोकों की संख्या दी गई है।

वर्णित विषय –

पूर्व भाग – गंगा की उत्पत्ति और महात्म्य, भागीरथ के गंगा लाने की कथा, श्राद्ध विधि, यमलोक के मार्ग का वृतांत, मोक्ष धर्म का वर्णन, परलोक की व्याख्या, वेदांगों का वर्णन, शुकदेव जी की उत्पत्ति की कथा, नारद के पहले जन्म का वृतांत, मधु कैटभ की उत्पत्ति, सरस्वती का अवतार, पुराणों की अनुक्रमणिका इत्यादि।

उत्तर भाग – द्वादशी महात्म्य, मोहिनी चरित, मोहिनी और राजा रुक्मांगद की कथा, विभिन्न तीर्थ स्थानों यथा गया, काशी, पुरुषोत्तम, प्रयाग, कुरुक्षेत्र, हरिद्वार, बद्रिकाश्रम, कामाख्या, प्रभासतीर्थ, गोकर्ण, अवंती आदि का महात्म्य इत्यादि।

७. मार्कण्डेय पुराण

मार्कण्डेय पुराण में कुल 138 अध्याय हैं। इस में श्लोकों की संख्या लगभग 9000 है।

मार्कण्डेय पुराण में पक्षियों को प्रवचन का अधिकारी बनाकर उनके द्वारा सब धर्मों का निरूपण किया गया है।

इसमें संसार की असारता का वर्णन करते हुए भगवान का चरित वर्णन है।

वर्णित विषय –

पक्षियों की धर्मसंज्ञा, पूर्व जन्म की कथा, बलदेव जी की तीर्थ यात्रा, द्रोपदेय कथा, हरिश्चंद्र चरित, दत्तात्रेय कथा, हैहय कथा, अलर्क चरित, 9 तरह की सृष्टि रचना, कल्प-कल्पांतरों की कथा, द्वीप-द्वीपांतरों की कथा, मनु का चरित, दुर्गा की कथा, वत्सप्रीति चरित, इक्ष्वाकु, तुलसी, रामचंद्र, कुरु वंश, सोम,वंश पुरूरवा, नहुष, ययाति श्री कृष्ण आदि।

८. अग्नि पुराण

अग्नि पुराण व वह्नि पुराण दो प्रकार का प्रचलित है।

अग्नि पुराण में 383 अध्याय हैं जबकि वह्नि पुराण में 181 अध्याय हैं। इस पुराण में 15000 श्लोक माने गए हैं।

वर्णित विषय –

अग्नि पुराण – समस्त अवतारों की कथा, शालग्राम आदि की पूजा, सर्वदेव प्रतिष्ठा, गंगा आदि तीर्थ का महात्म्य, द्वीपों का वर्णन, ऊपर और नीचे के लोकों की कथा, आश्रमों के धर्म, व्रत आदि का विधान, गायत्री का अर्थ वर्णन, लिंग स्तोत्र, राजाओं के अभिषेक का मंत्र, राजधर्म वर्णन, रत्नों के लक्षण, धनुर्विद्या और व्यवहार ज्ञान, देवासुर संग्राम की कथा, आयुर्वेद का वर्णन, पशु चिकित्सा, वेदांगों का वर्णन, योग शास्त्र और ब्रह्म ज्ञान का निरूपण, पुराण के सुनने का फल इत्यादि।

वह्नि पुराण – अग्नि और ब्रह्मा के स्तुति, स्नान और भोजन की विधि, वराह, नरसिंह और वामन अवतार की कथा, वृषदान का वर्णन, अन्नदान का महात्म्य, दिवाली की कथा, च्यवन और नहुष की कथा, गंगा अवतार की कथा, सीता स्वयंवर से लेकर भगवान श्री राम के लंका वापस आने तक की कथा इत्यादि।

०९. भविष्य पुराण

भविष्य पुराण में 4 पर्व और 585 अध्याय हैं। भविष्य पुराण शैव पुराण की श्रेणी में आता है।

वर्णित विषय –

ब्राह्म पर्व – राजा शातनिक को व्यास जी की आज्ञा से सुमन्त द्वारा धर्मशास्त्र सुनाया गया। इसमें ब्रह्मांड की सृष्टि, चातुर्वर्ण्य व्यवस्था, संस्कार, व्रतों का महात्म्य, सामुद्रिक शुभाशुभ लक्षण, नक्षत्र पूजा विधि इत्यादि। इसमें व्यास-भीष्म संवाद, ब्रह्मदेव-विष्णु संवाद और व्योम पूजा का विधान है।

मध्यम पर्व – लोक वर्णन, ब्राह्मण महात्म्य, बाग लगाने की विधि, यज्ञ की विधि, गृह-वास्तु की विधि, पीपल का पेड़ लगाने और जलाशय की प्रतिष्ठा करने की विधि, वृक्षों की उत्तम मध्यम और अधम श्रेणियों का वर्णन इत्यादि।

उत्तर पर्व – श्री कृष्ण-युधिष्ठिर संवाद, अनेक व्रतों का माहात्मय, दशावतार चरित्र, दान और पूजा का माहात्म्य, कृष्ण के द्वारकापुरी जाने का वर्णन इत्यादि।

प्रतिसर्ग पर्व – प्रतिसर्ग पर्व चार खंडों में विभाजित है।

पहला खंड – कृत युग के राजाओं के वर्णन में वैवस्वत मनु से लेकर सुदर्शन नरपति के राज्य काल तक का हाल, द्वापर युग के नरपतियों का विवरण, मलेच्छ यज्ञ का वृत्तांत, मलेच्छ भाषा और उनके देशों का हाल, आर्य देश में मलेच्छ आगमन के कारण, मगध राज का वर्णन, गौतम बुद्ध की उत्पत्ति, चार प्रकार के क्षत्रियों की उत्पत्ति का विवरण इत्यादि।

दूसरा खंड – विक्रम का यज्ञ, भर्तृहरि का वृत्तांत, सत्यनारायण की पूरी कथा, पाणिनी का वृत्तांत, महानन्दि नृप की कथा और व्याकरण महाभाष्यकार पतंजलि के वृतांत का उल्लेख इत्यादि।

तीसरा खंड – कौरवों, यादवों और पांडवों के पुनर्जन्म की कथा, शालिवाहन के द्वारा शकों के पराजय की कथा, राजा भोज की दिग्विजय यात्रा, जयचंद और पृथ्वीराज की कथा, संयोगिता स्वयंवर, पृथ्वीराज का क्षत्रियों से युद्ध, ईदल-पद्मिनी विवाह और कुतुब मीनार का उल्लेख इत्यादि।

चौथा खंड – बुंदेलखंड का वृतांत, जाटों का हाल, उदयपुर और कन्नौज का वृतांत, दिल्ली के मुसलमान राजाओं का हाल, मध्वाचार्य, वराहमिहिर, जयदेव, चैतन्य, शंकराचार्य, गोरखनाथ आदि की उत्पत्ति, कबीर, नरसी, पीपा, नानक आदि का साधु चरित्र, अकबर व औरंगजेब आदि मुगलों का वर्णन, शिवाजी का वर्णन, नादिरशाह के आक्रमण का वर्णन, अंग्रेजों का आर्य देश में आगमन इत्यादि।

१०. ब्रह्मवैवर्त पुराण

ब्रह्मवैवर्त पुराण चार खंडों में विभाजित है जिसमें अध्यायों की कुल संख्या 276 है।

वर्णित विषय –

ब्रह्म खंड – सृष्टि रचना, रासमंडल में राधा की उत्पत्ति, वेद आदि शास्त्रों की उत्पत्ति, कश्यप वंश का वर्णन, नारद का गंधर्व रूप में जन्म, नारद की उत्पत्ति कथा, बाणासुर कृत शिव स्तोत्र इत्यादि।

प्रकृति खंड – ब्रह्मांड की उत्पत्ति, देव और देवी-गणों की उत्पत्ति, सरस्वती पूजा विधान, पृथ्वी की उत्पत्ति, भागीरथ का गंगा को पृथ्वी पर लाना, भगवान शिव द्वारा शंखचूड वध, तुलसी पत्र का महत्व, सावित्री-सत्यवान की कथा, इंद्र के प्रति दुर्वासा का शाप, समुद्र मंथन और लक्ष्मी प्राप्ति, जरत्कारु का मनसा देवी के साथ विवाह, राधा-सुदामा विवाद, दुर्गा के 16 नामों की व्याख्या, दुर्गा स्तुति व प्रकृति पूजा का फल निरूपण इत्यादि।

गणेश खंड – पुण्यक व्रत कथा, गणेश जन्म की कथा, गणेश का मंगलाचार, कार्तिकेय का अभिषेक, लक्ष्मी चरित, कार्तवीर्य और जमदग्नि का युद्ध, ब्रह्मा-परशुराम संवाद, शंकर-परशुराम संवाद, गणेश-परशुराम संवाद, गणेश के एकदंत होने की कथा, राजा सुचंद्र-परशुराम युद्ध इत्यादि।

श्रीकृष्ण जन्म खंड – नारद-नारायण संवाद, राधा-सुदामा का परस्पर शाप, श्रीकृष्ण का जन्म, जन्माष्टमी व्रत का वर्णन, श्रीकृष्ण का नामकरण, राधा के 16 नाम, कालिया दमन, दुर्वासा का विवाह, अष्टावक्र की कथा, श्रीकृष्ण का संक्षिप्त चरित, इंद्र और अहिल्या की पाप-कथा, कंस का वध, कृष्ण का विवाह, शिशुपाल और दंतवक्र का वध, कौरव-पांडव युद्ध, उषा-अनिरुद्ध का गंधर्व विवाह, पांडवों का स्वर्गारोहण, महापुराण और उपपुराण के लक्षण और उनके नाम इत्यादि।

११. लिंग पुराण

लिंग पुराण के दो भाग हैं। इन दोनों भागों को मिलाकर कुल 163 अध्याय हैं। लिंग पुराण में लगभग एक 11000 श्लोक हैं।

लिंग पुराण में शिव के 28 अवतारों का वर्णन मिलता है।

वर्णित विषय –

पूर्व भाग – संसार की रचना का वर्णन, ब्रह्मांड की उत्पत्ति, योग मार्ग से शिव पूजा, लिंग पूजा विधि, ब्रह्मा और विष्णु के झगड़े मिटाने के लिए लिंग की उत्पत्ति, शिव द्वारा शैव-महिमा का वर्णन, जंबूद्वीप के नव वर्षों का वर्णन, शिव के मुख्य चार स्थानों का वर्णन, गंगा की उत्पत्ति, सूर्य और ग्रहों का वर्णन, पराशर की उत्पत्ति, कृष्ण अवतार कथा, त्रिपुर की कथा, प्रणव की महिमा, काशी महात्म्य, वराह और नरसिंह अवतार की कथा, पार्वती की तपस्या और शिव विवाह, गणेश की उत्पत्ति इत्यादि।

उत्तर भाग – कौशिक कथा, विष्णु महात्म्य, लक्ष्मी प्राप्ति के उपाय, शिव के पशुपति नाम का अर्थ, शिव स्तुति, शिव पूजा नियम, अघोर पूजा, तुलादान का वर्णन, अनेक प्रकार के दानों की विधि, मृत्युंजय विधि, लिंग पुराण के पढ़ने, सुनने और सुनाने का फल इत्यादि।

१२. वाराह पुराण

वाराह पुराण में कुल 218 अध्याय हैं। इसमें लगभग 24000 श्लोक हैं, इसमें मुख्य रूप से वराह भगवान की महिमा का वर्णन किया गया है।

वर्णित विषय –

सृष्टि कथा, वराह द्वारा रुद्र, सनत्कुमार और मरीचि आदि की उत्पत्ति, प्रियव्रत की कथा, अश्वशिरा की कथा, धर्मव्याध की कथा, सुप्रतीक की कथा, श्राद्धकाल और पितृ-गीता का वर्णन, अग्नि की उत्पत्ति, अश्विनी कुमार के जन्म की कथा, गौरी की उत्पत्ति, पार्वती-महादेव विवाह, गणेश जन्म कथा, नाग उत्पत्ति की कथा, कात्यायनी देवी की उत्पत्ति, वृत्रासुर वृत्तांत, कुबेर की उत्पत्ति, रुद्र की उत्पत्ति, नचिकेता की कथा, आरुणिक की कथा, एकादशी के व्रत की कथा, ग्रहण योग्य और त्याग योग्य स्त्री का वर्णन, अमरावती वर्णन, वैष्णवी चरित, अंधकासुर व्रत कथा, महिषासुर की कथा, पृथ्वी-सनत्कुमार संवाद, चांडाल-ब्रह्मराक्षस संवाद, बदरिकाश्रम, मथुरा, द्वारावती, चक्रतीर्थ का महात्म्य, कपिल चरित, श्राद्ध की उत्पत्ति, यमदूतों का स्वरूप, गोकर्णेश्वर व श्रृंगेश्वर महात्म्य, पुराण पाठ और श्रवण का फल इत्यादि।

१३. स्कंद पुराण

स्कंद पुराण सबसे बड़ा है, इसमें लगभग 81000 से भी ज्यादा श्लोक हैं। यह कितने खंडों में विभाजित है यह स्पष्ट नहीं है। नारद पुराण के अनुसार स्कंद पुराण सात खंडों में विभाजित है। यहां उन्हीं सात खंडों का उल्लेख किया गया है।

वर्णित विषय –

माहेश्वर खंड – दक्ष की कथा, शिव की कथा, शिव विवाह, शिव महात्म्य, रावण की शिव पूजा, समुद्र मंथन का वर्णन, नहुष और ययाति की कथा, वृत्रासुर की कथा, दधीचि की कथा, वलि और वामन अवतार की कथा, शिवरात्रि व्रत महात्म्य, शिव जी द्वारा जुए में पार्वती से हारना, दान का महात्म्य, सोमनाथ की उत्पत्ति, कर्मों का फल, घटोत्कच विवाह, काली चरित, गायत्री महात्म्य इत्यादि।

वैष्णव खंड – अयोध्या आदि नगरों का महात्म्य चैत्र आदि मासों का महात्म्य मार्कण्डेय की कथा, दुर्वासा की कथा, इंद्रादि अवतार कथा, नृसिंह स्तोत्र इत्यादि।

ब्रह्म खंड – धर्मारण्य की कथा, हयग्रीव की कथा, देवासुर युद्ध, रामचरित, शिव मंत्र का महात्म्य, गोकर्ण महात्म्य, रुद्राक्ष महात्म्य, काश्मीर राजा की कथा, पुराण के सुनने का फल इत्यादि।

काशी खंड – विंध्याचल का वर्णन, पतिव्रता की कथा, यमलोक का वर्णन, चंद्र और सूर्य लोक आदि लोकों का वर्णन, गंगा की महिमा, ज्ञानवापी (काशी) का वृत्तांत, सदाचार कथन, स्त्रियों के लक्षण, गृहस्थ

धर्म के वर्णन, मृत्यु के लक्षण, दिवोदास राजा का वर्णन, विशेश्वर की कथा, काशी के और शिवलिंगों की कथा, सती देह त्याग इत्यादि।

रेवा खंड – अवतार कथा, अनेक तीर्थों का वर्णन, मांधाता की कथा, कावेरी महात्म्य, दुर्वासा चरित, ओंकार की महिमा, नरक वर्णन, गोदान महात्म्य, शिवलोक का वर्णन, रेवा चरित की कथा इत्यादि।

तापी खंड – तापी के दोनों ओर के देवालयों का वर्णन, हरिहर क्षेत्र और अन्य तीर्थों के महात्म्य का वर्णन, तापी के सागर मिलन की कथा इत्यादि।

प्रभास खंड – मुख्यतः तीर्थों और क्षेत्रों का वर्णन है। इसके अतिरिक्त प्रभास क्षेत्र की महिमा, सरस्वती नदी की महिमा, सावित्री महात्म्य, च्यवन ऋषि की कथा, शिवरात्रि की महिमा इत्यादि।

१४. वामन पुराण

वामन पुराण में कुल 55 अध्याय हैं। इसमें लगभग 10000 श्लोक हैं, इसमें वामन अवतार की कथा विस्तार से कही गई है।

वर्णित विषय –

पुलस्त्य-नारद संवाद, शंकर की तीर्थ यात्रा, सती का देह त्याग, नर-नारायण के साथ प्रहलाद का युद्ध, सुकेशी राक्षस की कथा, पुष्कर द्वीप की कथा, शुंभ-निशुंभ दैत्य का वध, कुरु राजा की कथा, पार्वती की तपस्या और शिव-पार्वती विवाह, महिषासुर का वध, धूमलोचन, चंड, मुंड, रक्तबीज, मुर इत्यादि दैत्यों के विनाश की कथा, अंधकासुर-शंकर विवाद, दंडक राजा की कथा, वामन अवतार की कथा, 12 महीनों में विष्णु की पूजा का नियम, वृद्ध पुरुष की प्रशंसा इत्यादि।

१५. कूर्म पुराण

कूर्म पुराण के दो भाग हैं। पहले भाग में 52 अध्याय और दूसरे में 44 अध्याय हैं। मूल कूर्म पुराण में 17000 श्लोक हैं परंतु वर्तमान में प्रचलित कूर्म पुराण में लगभग 7000 श्लोक हैं।

वर्णित विषय –

पूर्व भाग – इंद्रद्युम्न की कथा, वर्णाश्रम धर्म निरूपण, संसार की उत्पत्ति, देवी का अवता,र भृगु और मनु आदि की सृष्टि रचना, हिरण्यकशिपु और अंधक की पराजय, वामन अवतार, सूर्यवंश का वर्णन, इक्ष्वाकु वंश का वर्णन, पुरूरवा और जयद्रथ के वंश की कथा, व्यास की तीर्थ यात्रा का वर्णन, प्रयाग महात्म्य, सात द्वीपों का वर्णन, यमुना महात्म्य, मन्वंतरों की कथा इत्यादि।

उत्तर भाग – ज्ञान की प्रशंसा, ज्ञान योग, ईश्वर की महिमा, अष्टांग योग का वर्णन, ब्रह्मचारी के धर्म, भोजन विधि, श्राद्ध के नियम, वानप्रस्थ और संन्यास धर्मों का वर्णन, प्रलय का वर्णन, अनेक प्रायश्चितों और अनेक तीर्थों के महात्म्य इत्यादि।

१६. मत्स्य पुराण

मत्स्य पुराण में 291 अध्याय हैं। इस पुराण में श्लोकों की संख्या लगभग 14000 है। इस पुराण में 18 पुराणों की सूची प्राप्त होती है।

वर्णित विषय –

जगत की सृष्टि, चंद्र और सूर्य वंश का वर्णन, पितृ वंश का वर्णन, श्राद्ध विधि, ययाति का चरित, कच को संजीवनी विद्या का लाभ, शर्मिष्ठा और देवयानी की कथा, यदुवंश की कथा, अग्नि वंश की कथा, अगस्त्य की उत्पत्ति, सूर्य व चंद्र ग्रहण में स्नान की विधि, कल्याण सप्तमी आदि व्रतों का वर्णन, शिव चतुर्दशी व्रत, विष्णु व्रत, प्रयाग महात्म्य, हिमालय का वर्णन, जम्बू दीप का वर्णन, खगोल वर्णन, त्रिपुर दाह की विस्तारपूर्वक कथा, तारक वध, कालनेमि की पराजय, देव-दानव युद्ध, हिरण्यकश्यप वध, कावेरी महात्म्य, नर्मदा महात्म्य, भृगु-अंगिरा के वंश का वर्णन, अत्रि, विश्वामित्र, वशिष्ठ, पराशर, अगस्त्य का वर्णन, सावित्री की कथा, वामन अवतार की कथा, मगध देश में भविष्य के राजाओं की कथा, अन्ध्र, यवन व मलेच्छगण के राज्यों का वर्णन, विविध दानों का फल और विधि, समुद्र मंथन की कथा इत्यादि।

१७. गरुड़ पुराण

गरुड़ पुराण 2 खंड में विभाजित है। दोनों खंडों को मिलाकर कुल 288 अध्याय हैं। इसमें 18000 श्लोक हैं। हिंदू समाज में श्राद्ध के समय गरुड़ पुराण कथा का वाचन होता है।

वर्णित विषय –

पूर्व खंड – सृष्टि रचना, विष्णु और लक्ष्मी की पूजा विधि, विष्णु सहस्त्रनाम, सूर्य पूजा, सर्प मंत्र, शिव पूजा, विषहरण, गायत्री महात्म्य, दुर्गा पूजा, देवी प्रतिष्ठा का वर्णन, प्रियव्रत वंश वर्णन, भारतवर्ष का वर्णन, पाताल और नरकों का वर्णन, स्त्रियों के शुभ-अशुभ लक्षण, रत्नों और मोतियों की पहचान, गया महात्म्य, 11 मनुपुत्रों का वर्णन, गृह शांति, वानप्रस्थ और संन्यासी के धर्म का वर्णन, शिवरात्रि और एकादशी आदि व्रतों का वर्णन, जन्मेजय के वंश का वर्णन, पतिव्रता महात्म्य, रामायण की कथा, विभिन्न रोगों की औषधि, पशुओं की चिकित्सा, विष्णु कवच का वर्णन, प्रलय का वर्णन, आठ प्रकार के योग का

वर्णन, ज्ञानामृत का वर्णन, ब्रह्म ज्ञान का वर्णन, आत्मज्ञान का कथन, गीतासार, योग का प्रयोजन इत्यादि।

उत्तर खंड – गरुड़ और विष्णु का प्रश्नोत्तर, मरणोत्तर गति का वर्णन, नरकों का वर्णन, शवदाह विधि, बभ्रुवाहन और प्रेत का संवाद, मनुष्य जन्म लाभ की महिमा, प्रेत योनि छुडाने का उपाय, यमलोक का मार्ग, मनुष्यों की आयु का निर्धारण, बाल मृत्यु का कर्म निर्णय, दान महात्म्य, जीव की उत्पत्ति, सांड़ को छोड़ने का फल और विधि, पूर्व जन्म के कर्मों का संबंध वर्णन, आत्महत्यारे के श्राद्ध करने का निषेध, वार्षिक श्राद्ध, गरुड़ पुराण को पढ़ने और सुनने का फल इत्यादि।

१८. ब्रह्मांड पुराण

ब्रह्मांड पुराण के दो भाग हैं। पहले भाग को प्रक्रियापाद और दूसरे को उपोद्घातपाद कहते हैं। ब्रह्मांड पुराण में कुल 142 अध्याय हैं। इस पुराण में श्लोकों की कुल संख्या 12000 है।

वर्णित विषय –

प्रक्रियापाद – सृष्टि वर्णन, देवों और असुरों की उत्पत्ति, योगधर्म, ओंकार की महिमा, कल्प संख्या, ब्रह्म की उत्पत्ति, ज्वर का वर्णन, भरत वंश वर्णन, जंबूद्वीप वर्णन, पर्वतों और नदियों का वर्णन, द्वीप-द्वीपांतरों का वर्णन, नीचे और ऊपर के लोकों का वर्णन, चंद्र, सूर्य और गृह-नक्षत्र आदि का वर्णन, पितरों का वर्णन, पर्वों का निर्णय, कलियुग का विशेष वर्णन, धर्म-अधर्म निरूपण, वेदों के विभाग का वर्णन, पृथु के वंश का वर्णन इत्यादि।

उपोद्घातपाद – श्राद्ध का वर्णन, वरुण, इक्ष्वाकु और मिथिला के वंशों का वर्णन, राजयुद्ध, परशुराम चरित, भविष्य कथा, वैवस्वत मनु का वंश, चंद्र वंश का वर्णन, भविष्य के मनुओं का वर्णन, 14 लोकों और नरकों का वर्णन, प्रलय और फिर संसार की रचना का वर्णन इत्यादि।

[पाठ इकाई 07]

श्रीमद्भगवद्गीता ग्रन्थ परिचय एवं गीता माहात्म्य पाठ

(क)श्रीमद्भगवद्गीता ग्रन्थ परिचय एवं महत्व

समस्त मानव जाति का कल्याणकारक धर्मग्रंथ ऋक्,यजु,सामाथर्व चारों वेद हैं, वेदों का सार उपनिषद् और उपनिषदों का सार गीता है।इस प्रकार गीता सभी ग्रंथों का सार है। इसीलिए श्रीमद्भगवद्गीता सभी मानव प्राणियों के लिए सर्वमान्य उपकारक ग्रंथ है। इसे वेद और उपनिषदों का पॉकेट संस्करण भी कह सकते हैं। महाभारत के १८ अध्यायों में से यह भगवद्गीता भीष्म पर्व का हिस्सा है । गीता में भी कुल १८ अध्याय हैं। १८ अध्यायों की कुल श्लोक संख्या ७०० हैं। आओ छात्रों ,जानते हैं कि गीता के १८ अध्यायों में मुख्य रूप से क्या क्या विषय वर्णित हैं?

१. **पहला अध्याय-** यह अध्याय"अर्जुनविषादयोग" नाम से जाना जाता है। इस अध्याय में दोनों सेनाओं के प्रधान-प्रधान शूरवीरों की गणना, सामर्थ्य और शंख ध्वनि का कथन, अर्जुन द्वारा सेना-निरीक्षण का प्रसंग और अपने ही बंधु-बांधवों को सामने खड़ा देखकर मोह से व्याप्त हुए अर्जुन के कायरता, स्नेह और शोकयुक्त वचन है। इसमें अर्जुन कहता है कि यदि मैं अपने ही बंधुओं को मारकर विजय भी प्राप्त कर लेता हूं तो यह मुझे सुख नहीं पश्चाताप ही देगी।

२. **दूसरा अध्याय-** "सांख्ययोग" नाम से है। इसमें श्री कृष्ण कहते हैं कि इस असमय यह बातें करना उचित नहीं, क्योंकि अब तो सामने युद्ध थोप ही दिया गया है। अब यदि तुम नहीं लड़ोंगे तो मारे जाओगे। अर्जुन हर तरह से युद्ध को छोड़कर जाने की बात कहता है तब श्रीकृष्ण कहते हैं कि अब युद्ध से विमुख होना नपुंसकता और कायरता है। इसी चर्चा में श्रीकृष्ण अर्जुन को आत्मा की अमरता के बारे में बताते हैं और कहते हैं कि आत्मा का कभी वध नहीं किया जा सकता और तू जिनके मारे जाने का शोक करने की बात कर रहा है वह उनका शरीर है जिसे आज नहीं तो कल मर ही जाना है। इसीलिए जय-पराजय, लाभ-हानि और सुख-दुख को समान समझकर, उसके बाद युद्ध के लिए तैयार हो जा। इसी अध्याय में श्रीकृष्ण संख्ययोग और स्थिरबुद्धि पुरुष के लक्षण का वर्णन करते हैं।

३. **तीसरा अध्याय-** "कर्मयोग" नाम से है। इसमें ज्ञानयोग और कर्मयोग के अनुसार जीवन में अनासक्त भाव से नियत कर्म करने की श्रेष्ठता का निरूपण किया गया है। इसमें कर्मों का गंभीर विवेचन किया गया है। अज्ञानी और ज्ञानवान के लक्षण तथा राग-द्वेष से रहित होकर कर्म करने के लिए प्रेरणा

की बातें कही गई है। इस अध्याय में ही हिन्दू धर्म के कर्म के सिद्धांत का निचोड़ लिखा हुआ है। इससे ही यह प्रकट होता है कि हिन्दू धर्म कर्मवादी धर्म है भाग्यवादी नहीं। श्रीकृष्ण कहते हैं कि वास्तव में सम्पूर्ण कर्म सब प्रकार से प्रकृति के गुणों द्वारा किए जाते हैं, जो कि कार्य और कारण की एक श्रृंखला है।

४. **चौथा अध्याय-** "ज्ञानकर्मसंन्यासयोग" नाम से है। इसमें ज्ञान, कर्म और संन्यास योग का वर्णन है। सगुण भगवान का प्रभाव और कर्मयोग का विषय, योगी महात्मा पुरुषों के आचरण और उनकी महिमा, फलसहित पृथक-पृथक यज्ञों का कथन और ज्ञान की महिमा का वर्णन किया गया है।

५. **पांचवां अध्याय-** "कर्मसंन्यासयोग" नाम से है। इसमें सांख्ययोग और कर्मयोग का निर्णय, सांख्ययोगी और कर्मयोगी के लक्षण और उनकी महिमा, ज्ञानयोग का विषय और भक्ति सहित ध्यानयोग का वर्णन का वर्णन किया गया है। उपरोक्त सभी योगों के वर्णन में अध्यात्म, ईश्वर, मोक्ष, आत्मा, धर्म नियम आदि का वर्णन है किसी भी प्रकार के युद्ध या युद्ध करने का नहीं।

६. **छठा अध्याय-** "आत्मसंयमयोग" नाम से है। इसमें कर्मयोग का विषय और योगारूढ़ पुरुष के लक्षण, आत्म-उद्धार के लिए प्रेरणा और भगवत्प्राप्त पुरुष के लक्षण, विस्तार से ध्यान योग का वर्णन, मन के निग्रह का विषय, योगभ्रष्ट पुरुष की गति का विषय और ध्यानयोगी की महिमा का वर्णन किया गया है।

७. **सातवां अध्याय-** "ज्ञानविज्ञानयोग" नाम से है। इसमें विज्ञान सहित ज्ञान का विषय, संपूर्ण पदार्थों में कारण रूप से ईश्वर की व्यापकता का कथन, आसुरी स्वभाव वालों की निंदा और भगवद्भक्तों की प्रशंसा, भगवान के प्रभाव और स्वरूप को न जानने वालों की निंदा और जानने वालों की महिमा का वर्णन किया गया है।

८. **आठवां अध्याय-** "अक्षरब्रह्मयोग" नाम से है। इसमें ब्रह्म, अध्यात्म और कर्मादि के विषय में अर्जुन के सात प्रश्न और श्रीकृष्ण के द्वारा दिए गए उनके उत्तर है। भक्ति योग का विषय और शुक्ल एवं कृष्ण मार्ग के रहस्य का वर्णन है।

९. **नौवां अध्याय-** "राजविद्याराजगुह्ययोग" नाम से है। इसमें प्रभावसहित ज्ञान का विषय है। इसमें जगत का ईश्वर से संबंध और प्रकृति तत्वों की चर्चा है। इसमें जगत की उत्पत्ति का विषय, भगवान का तिरस्कार करने वाले आसुरी प्रकृति वालों की निंदा और दैवी प्रकृति वालों के भगवद्भजन का प्रकार,

सर्वात्म रूप से प्रभाव सहित भगवान के स्वरूप का वर्णन, सकाम और निष्काम उपासना का फल और निष्काम भगवद् भक्ति की महिमा का वर्णन है।

१०. **दसवां अध्याय-** "विभूतियोग" नाम से है। इसमें भगवान की विभूति और योगशक्ति का कथन तथा उनके जानने का फल, फल और प्रभाव सहित भक्तियोग का कथन, अर्जुन द्वारा भगवान की स्तुति तथा विभूति और योगशक्ति को कहने के लिए प्रार्थना, भगवान द्वारा अपनी विभूतियों और योगशक्ति का वर्णन है। विभूति अर्थात सिद्धियां और शक्तियां।

११. **ग्यारहवां अध्याय-** "विश्वरूपदर्शनयोग" नाम से है। इसमें विश्वरूप के दर्शन हेतु अर्जुन की प्रार्थना, भगवान द्वारा अपने विश्व रूप का वर्णन, संजय द्वारा धृतराष्ट्र के प्रति विश्वरूप का वर्णन, अर्जुन द्वारा भगवान के विश्वरूप का देखा जाना और उनकी स्तुति करना, भगवान द्वारा अपने प्रभाव का वर्णन और अर्जुन को युद्ध के लिए उत्साहित करना, भयभीत हुए अर्जुन द्वारा भगवान की स्तुति और चतुर्भुज रूप का दर्शन कराने के लिए प्रार्थना, भगवान द्वारा अपने विश्वरूप के दर्शन की महिमा का कथन तथा चतुर्भुज और सौम्य रूप का दिखाया जाना, बिना अनन्य भक्ति के चतुर्भुज रूप के दर्शन की दुर्लभता का और फलसहित अनन्य भक्ति का वर्णन है।

१२. **बारहवां अध्याय-** "भक्तियोग" नाम से है। इसमें साकार और निराकार के उपासकों की उत्तमता का निर्णय और भगवत्प्राप्ति के उपाय का वर्णन है और इसमें भगवत्-प्राप्त पुरुषों के लक्षण बताए गए हैं।

१३. **तेरहवां अध्याय-** "क्षेत्र-क्षेत्रज्ञविभागयोग" नाम से है। इसमें ज्ञानसहित क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ के विषय का वर्णन है और ज्ञानसहित प्रकृति-पुरुष के विषय का विषद् वर्णन किया गया है। अर्थात स्थिति, ज्ञान, आत्मा, परमात्मा और पंच तत्वों का रहस्यमयी ज्ञान है।

१४. **चौदहवां अध्याय-** "गुणत्रयविभागयोग" नाम से है। इसमें ज्ञान की महिमा और प्रकृति-पुरुष से जगत् की उत्पत्ति का वर्णन है। सत्, रज, तम- तीनों गुणों का विषय का विषद् विवेचन है। इसके अलावा भगवत्प्राप्ति का उपाय और गुणातीत पुरुष के लक्षण बताए गए हैं।

१५. **पंद्रहवां अध्याय-**" पुरुषोत्तमयोग" नाम से है। इसमें संसार को उल्टे वृक्ष की तरह बताकर भगवत्प्राप्ति के उपाय बताए गए हैं। इसमें जीवात्मा के विषय का विषद् विवेचन और प्रभाव सहित परमेश्वर के स्वरूप का वर्णन किया गया है और इसमें क्षर, अक्षर, पुरुषोत्तम के विषय के भी विषद् वर्णन है।

१६. **सोलहवां अध्याय-** "दैवासुरसम्पद्विभागयोग" नाम से है। इसमें फलसहित दैवी और आसुरी व्यक्ति और संपदा का कथन किया गया है। आसुरी संपदा वालों के लक्षण और उनकी अधोगति का विर्णन भी मिलेगा। इसके अलावा शास्त्रविपरीत आचरणों को त्यागने और शास्त्रानुकूल आचरणों के लिए प्रेरणा दी गई है।

१७. **सत्रहवां अध्याय-** "श्रद्धात्रयविभागयोग" नाम से है। इसमें श्रद्धा का और शास्त्रविपरीत घोर तप करने वालों के विषय का वर्णन है। इसमें आहार, यज्ञ, तप और दान के पृथक-पृथक भेद बताए गए हैं। इसके अलावा ॐ तत्सत् के प्रयोग की व्याख्या की गई है।

१८. **अठारहवां अध्याय-** "मोक्षसंन्यासयोग" नाम से है। इसमें त्याग का विषद् वर्णन, कर्मों के होने में सांख्यसिद्धांत का कथन, तीनों गुणों के अनुसार ज्ञान, कर्म, कर्ता, बुद्धि, धृति और सुख के पृथक-पृथक भेद का वर्णन, फल सहित वर्ण धर्म के विषय का वर्णन, ज्ञाननिष्ठा का वर्णन, भक्ति सहित कर्मयोग का विवेचन और अंत में श्रीगीताजी के माहात्म्य का वर्णन है।

(ख) गीता माहात्म्य के सप्तश्लोकों का मूलपाठ कण्ठस्थीकरण एवं भावार्थज्ञान

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

अथ श्रीमद्भगवद्गीतामाहात्म्यम्

गीताशास्त्रमिदं पुण्यं यः पठेत्प्रयतः पुमान्। विष्णोः पदमवाप्नोति भयशोकादिवर्जितः ॥ १ ॥
गीताध्ययनशीलस्य प्राणायामपरस्य च। नैव सन्ति हि पापानि पूर्वजन्मकृतानि च ॥ २ ॥ मलनिर्मोचनं पुंसां जलस्नानं दिने दिने। सकृद्गीताम्भसि स्नानं संसारमलनाशनम् ॥ ३ ॥
गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः। या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिः सृता ॥ ४ ॥
भारतामृतसर्वस्वं विष्णोर्वक्त्राद्विनिः सृतम्। गीतागङ्गोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते ॥ ५ ॥ सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः। पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत् ॥ ६ ॥
एकं शास्त्रं देवकीपुत्रगीतमेको देवो देवकीपुत्र एव। एको मन्त्रस्तस्य नामानि यानि कर्माप्येकं तस्य देवस्य सेवा।।

अर्थ-

१. यह गीता शास्त्र पुण्य प्रदान करने वाली है ,इसका पाठ करने वाला मनुष्य भयशोकादि से मुक्त होकर भगवान विष्णु के पद को प्राप्त कराता है।

२. जो मनुष्य प्रतिदिन गीताध्ययन एवं प्राणायाम करने में तत्पर हो उसके इस जन्म एवं पूर्वजन्म के सभी पाप निश्चित ही मिट जाते हैं।

३. जल से प्रतिदिन जो मनुष्य स्नान करता है उसके शरीर का केवल मल नाश हो जाता है,परन्तु इस गीता ज्ञानग्रन्थ से कोई एकबार स्नान कर लेवे (अध्ययन कर आचरण में उतार लेवे) तो वह समस्त सांसारिक मलबन्धन (मोह -माया रूपी बन्धन)से मुक्त होकर परम पवित्रता को प्राप्त करेगा।

४. गीता- सुगीता का सम्यक् अध्ययन करके इसके बताए हुवे मार्ग पर अनुशरण करें, किसी अन्य शास्त्र का अनुशरण करने की आवश्यकता नहीं है,क्योंकि यह गीता सभी वेद-शास्त्रों का सार है साथ ही यह भगवान पद्मनाभ(विष्णु) के मुख से निकली हुई है।

५. यह गीता समस्त महाभारतग्रन्थ का साररूप में अमृत है जो कि भगवान विष्णु के मुखकमल से उच्चरित हुई है,अत: यह गङ्गाजल के सदृश है,इस अमृत-गङ्गाजल रूपी गीता का जो पान कर लेता है उसको मोक्ष प्राप्त हो जाता है, वह अमर हो जाता है।उसका पुनर्जन्म नहीं होता है।

६. समस्त उपनिषदें गायरूप में है उस गाय का दुग्ध दोहन स्वयं गोपालनन्दन कर रहा है, पार्थ - अर्जुन वत्स-बालक बनकर अपने सुन्दर बुद्धि से उस दूधरूपी महनीय अमृत गीता का पान कर रहा है।

७. देवकीपुत्र का एक ही गीतशास्त्र गीताशास्त्र है, देवकीपुत्र ही एकमात्र हमारे आराध्य देवता है, श्रीकृष्ण नाम ही एकमात्र नाममन्त्र है, श्रीकृष्ण नामस्मरण ही एकमात्र सर्वश्रेष्ठ कार्य सेवा है।

॥श्रीवाराहपुराणोक्त श्रीमद्भगवद्गीतामाहात्म्य॥

श्री वाराह पुराण में गीता का माहात्म्य बताते हुए श्री विष्णु जी कहते हैं कि-

१. प्रारब्ध को भोगता हुआ जो मनुष्य 'सदा' श्रीगीता के अभ्यास में आसक्त हो वही इस लोक में मुक्त और सुखी होता है तथा कर्म में लेपायमान नहीं होता ।

२. जिस प्रकार कमल के पत्ते को जल स्पर्श 'नहीं' करता उसी प्रकार जो मनुष्य श्रीगीता का ध्यान करता है उसे महापापादि पाप 'कभी' स्पर्श नहीं करते ।

३. जहाँ श्रीगीता की पुस्तक होती है और जहाँ श्रीगीता का पाठ होता है वहाँ प्रयागादि 'सर्व' तीर्थ निवास करते हैं ।

४. जहाँ श्रीगीता प्रवर्तमान है वहाँ 'सभी' देवों, ऋषियों, योगियों, नागों और गोपालबाल श्रीकृष्ण भी नारद, ध्रुव आदि सभी पार्षदों सहित 'जल्दी ही' सहायक होते हैं ।

५. जहाँ श्री गीता का विचार, पठन, पाठन तथा श्रवण होता है वहाँ मैं (श्री विष्णु भगवान) 'अवश्य' निवास करता हूँ ।

६. मैं (श्री विष्णु भगवान) श्रीगीता के आश्रय में रहता हूँ, श्रीगीता मेरा (श्री विष्णु भगवान) 'उत्तम' घर है और श्रीगीता के ज्ञान का आश्रय करके मैं (श्री विष्णु भगवान) तीनों लोकों का पालन करता हूँ ।

७. श्रीगीता 'अति' अवर्णनीय पदोंवाली, अविनाशी, अर्धमात्रा तथा अक्षरस्वरूप, नित्य, ब्रह्मरूपिणी और 'परम' श्रेष्ठ मेरी (श्री विष्णु भगवान) विद्या है इसमें सन्देह नहीं है।

८. वह श्रीगीता चिदानन्द श्रीकृष्ण ने अपने मुख से अर्जुन को कही हुई तथा तीनों वेदस्वरूप, परमानन्दस्वरूप तथा तत्त्वरूप पदार्थ के ज्ञान से युक्त है ।

९. जो मनुष्य स्थिर मन वाला होकर 'नित्य' श्री गीता के 18 अध्यायों का जप-पाठ करता है वह ज्ञानस्थ सिद्धि को प्राप्त होता है 'और' फिर परम पद को पाता है ।

१०. संपूर्ण पाठ करने में असमर्थ हो तो आधा पाठ करे, तो भी गाय के दान से होने वाले पुण्य को प्राप्त करता है, इसमें सन्देह नहीं ।

११. तीसरे भाग का पाठ करे तो गंगास्नान का फल प्राप्त करता है 'और' छठवें भाग का पाठ करे तो सोमयाग का फल पाता है ।

१२. जो मनुष्य भक्तियुक्त होकर 'नित्य' एक अध्याय का 'भी' पाठ करता है, वह रुद्रलोक को प्राप्त होता है और वहाँ शिवजी का गण बनकर 'चिरकाल तक' निवास करता है ।

१३. जो मनुष्य 'नित्य' एक अध्याय एक श्लोक अथवा श्लोक के एक चरण का पाठ करता है वह मन्वंतर तक मनुष्यता को प्राप्त करता है।

१४. जो मनुष्य गीता के दस, सात, पाँच, चार, तीन, दो, एक या आधे श्लोक का पाठ करता है वह 'अवश्य' दस हजार वर्ष तक चन्द्रलोक को प्राप्त होता है ।

१५. गीता के पाठ में लगे हुए मनुष्य की अगर मृत्यु होती है तो वह (पशु आदि की अधम योनियों में 'न' जाकर) पुनः मनुष्य जन्म पाता है।

१६. (और वहाँ) गीता का पुनः अभ्यास करके 'उत्तम' मुक्ति को पाता है। 'गीता' ऐसे उच्चार के साथ जो मरता है वह सद्गति को पाता है।

१७. गीता का अर्थ तत्पर सुनने में 'तत्पर' बना हुआ मनुष्य महापापी हो तो भी वह वैकुण्ठ को प्राप्त होता है 'और' विष्णु के साथ आनन्द करता है।

१८. अनेक कर्म करके 'नित्य' श्री गीता के अर्थ का जो विचार करता है उसे जीवन्मुक्त जानो। मृत्यु के बाद् वह परम पद् को पाता है।

१९. गीता का आश्रय करके जनक आदि 'कई' राजा पाप रहित होकर लोक में यशस्वी बने हैं 'और' परम पद् को प्राप्त हुए हैं।

२०. श्रीगीता का पाठ करके जो माहात्म्य का पाठ 'नहीं' करता है उसका पाठ निष्फल होता है 'और' ऐसे पाठ को श्रमरूप कहा है।

२१. इस माहात्म्यसहित श्रीगीता का जो अभ्यास करता है वह उसका फल पाता है 'और' दुर्लभ गति को प्राप्त होता है।

सूत जी बोलते हैं-

२२. जो 'अपने आप' श्रीविष्णु भगवान के मुखकमल से निकली हुई है गीता 'अच्छी तरह' कण्ठस्थ करना चाहिए। अन्य शास्त्रों के संग्रह से क्या लाभ?

२३. गीता धर्ममय, सर्वज्ञान की प्रयोजक तथा सर्व शास्त्रमय है, अतः गीता श्रेष्ठ है।

२४. जो मनुष्य 'घोर' संसार-सागर को तैरना चाहता है उसे गीतारूपी नौका पर चढ़कर 'सुखपूर्वक' पार होना चाहिए।

२५. जो पुरुष इस पवित्र गीताशास्त्र को 'सावधान होकर' पढ़ता है वह भय, शोक 'आदि' से रहित होकर श्रीविष्णुपद को प्राप्त होता है।

२६. जिसने सदैव अभ्यासयोग से गीता का ज्ञान सुना नहीं है फिर भी जो मोक्ष की इच्छा करता है वह मूढात्मा, बालक की तरह हँसी का पात्र होता है।

२७. जो 'रात-दिन' गीताशास्त्र पढ़ते हैं 'अथवा' इसका पाठ करते हैं 'या' सुनते हैं उन्हें मनुष्य नहीं अपितु 'निःसन्देह' देव ही जानें।

२८. हर रोज जल से किया हुआ स्नान मनुष्यों का मैल दूर करता है किन्तु गीतारूपी जल में 'एक' बार किया हुआ स्नान भी संसाररूपी मैल का नाश करता है ।

२९. जो मनुष्य स्वयं गीता शास्त्र का पठन-पाठन 'नहीं' जानता है, जिसने अन्य लोगों से वह 'नहीं' सुना है, स्वयं को उसका ज्ञान 'नहीं' है, जिसको उस पर श्रद्धा 'नहीं' है, भावना भी 'नहीं' है, वह मनुष्य लोक में भटकते हुए शूकर जैसा ही है । उससे अधिक नीच दूसरा कोई मनुष्य नहीं है, क्योंकि वह गीता को 'नहीं' जानता है ।

३०. जो गीता के अर्थ का पठन 'नहीं' करता उसके ज्ञान को, आचार को, व्रत को, चेष्टा को, तप को 'और' यश को धिक्कार है । उससे अधम और कोई मनुष्य नहीं है ।

३१. जो ज्ञान गीता में 'नहीं' गाया गया है वह वेद 'और' वेदान्त में निन्दित होने के कारण उसे निष्फल, धर्मरहित 'और' आसुरी जानें ।

३२. जो मनुष्य रात-दिन, सोते, चलते, बोलते और खड़े रहते हुए गीता का यथार्थतः सतत अध्ययन करता है वह 'सनातन' मोक्ष को प्राप्त होता है।

३३. योगियों के स्थान में, सिद्धों के स्थान में, श्रेष्ठ पुरुषों के आगे, संतसभा में, यज्ञस्थान में 'और' विष्णुभक्तोंके आगे गीता का पाठ करने वाला मनुष्य परम गति को प्राप्त होता है ।

३४. जो गीता का पाठ 'और' श्रवण 'हर' रोज करता है उसने दक्षिणा के साथ अश्वमेध 'आदि' यज्ञ किये ऐसा माना जाता है ।

३५. जिसने 'भक्तिभाव से' एकाग्र चित्त से गीता का अध्ययन किया है उसने 'सर्व' वेदों, शास्त्रों तथा पुराणों का अभ्यास किया है ऐसा माना जाता है।

३६. जो मनुष्य 'स्वयं' गीता का अर्थ सुनता है, गाता है 'और' परोपकार हेतु सुनाता है वह परम पद को प्राप्त होता है ।

३७. जिस घर में गीता का पूजन होता है वहाँ (आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक) तीन ताप से उत्पन्न होने वाली पीड़ा तथा व्याधियों का भय 'नहीं' आता है ।

३८. उसको शाप या पाप 'नहीं' लगता, 'जरा भी' दुर्गति नहीं होती 'और' छः शत्रु (काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर) देह में पीड़ा 'नहीं' करते ।

३९. जहाँ 'निरन्तर' गीता का अभिनंदन होता है वहाँ श्री भगवान परमेश्वर में 'एकनिष्ठ' भक्ति उत्पन्न होती है ।

४०. स्नान किया हो या न किया हो, पवित्र हो या अपवित्र हो फिर भी जो परमात्म-विभूति का 'और' विश्वरूप का स्मरण करता है वह 'सदा' पवित्र है ।

इति श्रीवाराहपुराण श्रीमद्गीतामाहात्म्य संपूर्ण।

महर्षिसान्दीपनिराष्ट्रियवेदविद्याप्रतिष्ठानम्, उज्जयिनी
यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्

[पाठ इकाई 08]

पौराणिक ग्रन्थों का परिचय एवं श्लोकों का शुद्ध उच्चारण-पठनाभ्यास-

(क) श्रीमद्भागवत महापुराण ग्रन्थ का अतिसंक्षिप्त परिचय

अठ्ठारह पुराणों में श्रीमद्भागवत महापुराण वैष्णव पुराण के रूप में प्रसिद्ध है। यह सम्पूर्ण देश में लोकप्रिय और प्रतिष्ठित है, इसमें धर्म, समाज, दर्शनादि विषयों का मनोहर वर्णन है। श्रीमद्भागवत में १२ स्कन्ध हैं, जिसमें प्रथम स्कन्ध में १८ अध्याय, द्वितीय स्कन्ध में १०, तृतीय स्कन्ध में ३३, चतुर्थ स्कन्ध में ३१, पंचम स्कन्ध में २६, षष्ठ स्कन्ध में १९, सप्तम स्कन्ध में १५, अष्टम स्कन्ध में २४, नवम स्कन्ध में २४, दशम स्कन्ध में ९०, एकादश स्कन्ध में ३१ और द्वादश स्कन्ध में १३ अध्यायों के संकलन से कुल ३३५ अध्याय हैं। दशलक्षण से लक्षित भागवत में भारतीय पुराण परम्परा में श्रीमद्भागवद् के बारह स्कन्धों को अंगीकृत किया गया है।

१. **प्रथम स्कन्ध-** इसको अधिकार स्कन्ध भी कहा जाता है। दस लक्षण से लक्षित भागवत में 'अधिकारी' (अध्येयता) किसी प्रकार का होना चाहिए । व धर्म का अधिकारी है, जो अपराधियों के प्रति विशाल हृदय में प्रेम रखकर उन्हें क्षमा कर सके और विपत्ति के समय भगवान् को स्मरण करें।

२. **द्वितीय स्कन्ध** - द्वितीय स्कन्ध को 'साधन स्कन्ध' कहा जाता है। जैसे भागवत को पढ़ने वाले अधिकारी का ज्ञान होना आवश्यक है, उसी प्रकार साधन के निरूपण के बिना परम तत्त्व का ज्ञान दुष्प्राप्य है। श्रीमद्भागवत रसिक इस स्कन्ध को साधन स्कन्ध' इस नाम से विभूषित करते हैं। इस स्कन्ध में दस अध्याय हैं, जिनमें भगवत प्राप्ति के तीन साधनों की व्याख्या है- 1. भगवत तत्त्व की ज्ञानविधि प्रथम एवं द्वितीय अध्याय । हृदय की निर्मलता तृतीय एवं

३. **तृतीय स्कन्ध-** इस स्कन्ध में दस लक्षणात्मक भागवत के प्रथम लक्षण सर्ग की विस्तारपूर्वक व्याख्या की गई है। इसीलिए इस स्कन्ध को सर्गस्कन्ध कहा गया है। इस स्कन्ध के पन्म अध्याय में 'विदुरमैत्रेय संवाद के द्वारा सृष्टिक्रम का निरूपण किया गया है। इसका बारहवें अध्याय तक अमूर्त सर्ग रूप के वर्णन के बाद प्रकृति के तीनों गुणों को स्पष्ट करने के लिए कुछ गाथाओं का एकत्रीकरण किया गया है। षड्विंश अध्याय में पुनः कपिलदेवहुति संवाद रूप में महातत्त्वादिभावों की उत्पत्ति से सर्ग (एव

व्याकृतः) कहा जाता है। इस प्रकार निष्कर्षतः यह कह सकते हैं, कि चतुर्दशाध्याय के आरम्भ से उन्नीस अध्याय तक द्वितीय कश्यप कथा-प्रसंग के अन्तर्गत तमोगुण प्रधान सृष्टि की चर्चा की गई है।

४. **चतुर्थ स्कन्ध** - इस स्कन्ध को 'विसर्ग स्कन्ध भी कहा जाता है। पूर्व वक्ताओं के अनुसार सृष्टि के विपरीत को विसर्ग कहा जाता है। इस स्कन्ध में ब्रह्माजी द्वारा ब्रह्माण्ड रूपी पात्र में प्रभूतात्मिका सृष्टि की चर्चा है तथा विपरीत दृष्टियों से विसर्ग की भी चर्चा है। इस स्कन्ध में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष पुरुषार्थ चतुष्टय का वर्णन है। श्रीमद्भागवत के अलग-अलग अध्यायों में उसकी व्याख्यान है।

सम्पूर्ण चतुर्थ स्कन्ध में एकत्रिंश अध्याय है, सम्पूर्ण चतुर्थ स्कन्ध में एकत्रिंश अध्याय है, जिसके प्रथम से सप्त अध्याय तक दक्षवर्णन के माध्यम से धर्म पुरुषार्थ की चर्चा की गई है। भगवान शिव का अपमान होने के कारण दक्षयज्ञ के ध्वंस होने से पुनः धर्म की स्थापना बताई गई है। इसके पश्चात् अष्टम से द्वादश अध्याय में ध्रुव कथा के माध्यम से पुरुषार्थ का निरूपण किया गया है। तत्पश्चात् ग्यारह अध्यायों में पृथुचरित का वर्णन, पृथ्वी के दोहन आदि कार्यों से कामपुरुषार्थ का सींत प्राप्त होता है। स्कन्ध के अन्तिम आठ अध्यायों में प्राचीनबर्हिनारद संवाद के अंतर्गत पुरर्निउपाख्यान के द्वारा मोक्ष रूपी पुरुषार्थ का सींत किया गया है।

५. **पंचम स्कन्ध**- इस स्कन्ध को स्थान स्कन्ध भी कहा जाता है। लक्षण के आधार पर भगवान् विष्णु से सम्बन्धित मर्यादा एवं उनके नियम, जो निश्चित ही सृष्टि के विस्तार में सहायक होंगे। पन्म स्कन्ध में निम्न वर्णन प्राप्त होते हैं-

1. भूगोलवर्णन - 16, 18, 19, 20 अध्यायों में।
2. खगोलवर्णन 3. पातालवर्णन - 21, 22, 23 अध्यायों में। - 24, 25 अध्यायों में।

इसके अतिरिक्त सृष्टि पालन से सम्बनिधत नियमों का पालन करते हुए प्रियव्रत अग्नीघ्रा आदि राजाओं का चरित्र बताया गया है।

६. **षष्ठ स्कन्ध**- इस स्कन्ध को पोषण स्कन्ध भी कहा जाता है। इस स्कन्ध का प्रथम प्रश्न जीव नरक आदि से कैसे मुक्त होगा, है-

'अधुनेह महाभाग यथैव नरकान्नरः ।

नानोग्रयातनान्नेयात्तन्में व्याख्यातुमर्हसि ।। 10

उक्त प्रश्न के समाधान श्रीशुकजी विविध प्रायश्चित अनुष्ठान आदि का उपदेश देने के पश्चात् सारभूत में सिद्धान्त निरूपित करते हैं-

'न तथा ह्यघवान् राजन् पूयेत तप आदिभि। यथा कृष्णर्पितप्राणस्तत्पूरुषनिषेवया ।।

षष्ठ स्कन्ध में उन्नीस अध्याय हैं, जिन्हें तीन भागों में विभाजित किया गया है-

'न तथा ह्यघवान् राजन् पूयेत तप आदिभि । यथा कृष्णर्पितप्राणस्तत्पूरुषनिषेवया ।।"

षष्ठ स्कन्ध में उन्नीस अध्याय हैं, जिन्हें तीन भागों में विभाजित

किया गया है-

1. प्रथम से तृतीय अध्याय पर्यन्त नाम' माहात्म्य।
2. चतुर्थ से द्वादश पर्यन्त - 'रूप' माहात्म्य ।
3. त्रयोदश से एकोनविंश पर्यन्त 'अर्चा पद्धति' माहात्म्य ।

इस प्रकार चौथे लक्षण से युक्त इस अध्याय को पोषण स्कन्ध कहा जाता है।

'ऊति' शब्द से जीव का वासना का ग्रहण किया जाता है। इसका सामान्य लक्षण विद्वानों द्वारा अविद्या बताया गया है। यह अविद्या पांच पर्वों में है अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेश, अभिनिवेश रूप में है। इसी प्रकार विद्या को भी पांच पर्वों में बताया गया है- विद्या, तप, वैराग्य, आराधना, तत्त्वज्ञान।

७. **सप्तम स्कन्ध-** में द्रौपदी के पाँच पुत्रों के हनन्कर्त्ता अश्वत्थामा को अर्जुन के द्वारा बन्दी बनाना, ब्रह्मास से पीड़ित उत्तरा का श्रीकृष्ण को बुलाना। इस स्कन्ध में अर्जुन की माता पृथा का कृष्ण दर्शन न होने के कारण दुःखी होने का वर्णन, केवल दुःख से भगवत की प्राप्ति नहीं हो सकती। श्रीकृष्ण की प्रसन्नता से ही मुक्ति की प्राप्ति और दर्शन होंगे, का वर्णन है। चतुर्थ अध्याय।

3. विचार की पराकाष्ठा मनन पंचम से दशम अध्याय ।

'तस्माद् भारत सर्वात्मा भगवानीश्वरो हरिः।

श्रोतव्यः कीर्तितव्यश्च स्मर्तव्यश्चयेच्छताऽभयम्।। 15

८. **अष्टम स्कन्ध-** इस स्कन्ध के प्रथम अध्याय में आरम्भ से लेकर स्वायम्भू आदि चार मन्वन्तरों का वर्णन है। फर्म अध्याय में रैवतचाक्षुष मन्वन्तर, त्रयोदश में भविष्य मन्वन्तर, इन सातों का वर्णन और चतुर्दश में मनु आदि के कर्मों का पृथक् पृथक् वर्णन है। अन्य अध्यायों में उचित धर्मों का प्रतिपादन

करने वाले यज्ञजित, मोहिनी, वामन, मत्स्यादि मन्वन्तरों का बताया गया है। गजेन्द्र मोक्ष का सींत करते हुए श्रीभगवान् के धर्मतत्त्वों में व्याख्यान की चर्चा की गई है।

९. **नवम स्कन्ध** -नवम स्कन्ध में चौबीस अध्याय हैं। इसके बारहश्रीमन्नारदीयपुराण में द्वादश स्कन्धों की कथानुक्र नवम स्कन्ध नवम स्कन्ध में चौबीस अध्याय हैं। इसके बारहअध्यायों में सूर्य प्रधान तथा शेष में सोम प्रधान भगवान् के अवतार के कुलों का वर्णन है। सूर्यवंशी के कुलों के गुणों का वर्णन एवं चन्द्रवंशी कुलों के गुणों का वर्णन भी किया गया है। चौबीस अध्यायों में भगवान् के चौबीस अवतारों का ज्ञान होता है। इस प्रकार इस स्कन्ध को 'ईशानुकथा स्कन्ध कहा जाता है।

१०. **दशम स्कन्ध**- इस स्कन्ध के भागवत के आठवें लक्षण निरोध' का वर्णन है। भागवत के अनुसार इस अविद्या चक्र का वास्तविक अवसान भागवत कथा श्रवण, मनन, ध्यान से उत्पन्न भगवत अनुराग से ही सम्भव है। भगवान् के उत्तम वर्णन उनके श्लोक में उपस्थित गुणों का अनुसरण ही संसार के रोगों का निवारण कर सकता है-

निवृत्ततर्वैरुपगीयमानाद् भवौषधाच्छोत्रमनोऽभिरामात्।

उत्तमश्लोकगुणानुवादात् पुमान् विरज्येत विना पशुघ्नात् ।। 18

अतः सम्यक् रूप से संसार के सभी बन्धनों का निरोध इस स्कन्ध के अन्तर्गत किया गया है। जीव की आत्मा, जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति आदि अवस्था से स्वयं को अलग करते हुए तुरीय अवस्था का निरूपण किया गया है। अतः इस इस स्कन्ध को निरोध' कहा गया है।

११. **एकादश स्कन्ध** - प्रस्तुत स्कन्ध में मुक्ति का तात्पर्य स्पष्ट किया गया है। सांसारिक बन्धनों से निवृत्ति होने के पश्चात् स्वयं में मणिका प्राप्त होती स्थित होना ही मुक्ति है। सांसारिक बन्धनों के मिथ्यात् का सीत इस स्कन्ध में किया गया है। इस स्कन्ध में मुक्ति के साधन तत्त्व को बताया गया है, यथा-

- वसुदेव के लिए नारद का उपदेश द्वितीय अध्याय।
- मायावी संसार को पार करने का उपाय बताया गया है, बह्म कर्म का निरूपण किया गया है- तृतीय अध्याय ।
- श्रीकृष्ण उद्धव सम्वाद में अवधूत उपाख्यान अध्याय । - 6, 7, 8, 9
- स्वयं को, संसार बन्धन को, बद्ध और मुक्ति के उचित लक्षणों का कथन और भक्ति उपाय का वर्णन किया गया है।

- भगवान् का हंस रूप में ब्रह्मा के लिए ज्ञानोपदेश आदि का वर्णन।

१२. **द्वादश स्कन्ध-** यह स्कन्ध श्रीमद्भागवत महापुराण का अन्तिम स्कन्ध है. जिसमें 'आभास' और 'विरोध' परम आश्रय भगवत स्वरूप कृष्ण के प्रमुख तत्त्वों को भागवतकार द्वारा प्रस्तुत किया गया है। यहाँ आभास, निरोध का पृथक् पृथक् विवेचन किया गया है-

- आभास- जिस प्रकार कटक, कुण्डल आदि स्वर्ण निर्मित आभूषण होने के बाद भी इनका पृथक् पृथक् नाम होता है। उसी प्रकार एक ही ब्रह्म को देव, असुर और मनुष्य आदि नामों से पृथक् पृथक् जाना जाता है।
- निरोध- जिस प्रकार अग्नि में सभी आभूषण अपने-अपने नाम को त्यागकर केवल स्वर्णमय हो जाते हैं, उसी प्रकार मनुष्य ज्ञान अग्नि के द्वारा स्वयं को अलग करते हुए ब्रह्ममय हो जाता है।
- आश्रय- आश्रय का तात्पर्य 'शरण' को जानना चाहिए। यह दो रूपों में दिखता है- साधनाश्रय और फलाश्रय।

(ख) श्रीमद्भागवत महापुराण का कथामाहात्म्य

(श्लोकों का शुद्ध उच्चारणसहित पाठ, भावार्थज्ञान एवं प्रवचनाभ्यास)

श्रीमद्भागवत-माहात्म्य (स्वयं श्रीभगवान्के श्रीमुखसे ब्रह्माजीके प्रति कथित)

श्रीमद्भागवतं नाम पुराणं लोकविश्रुतम् । श्रृणुयाच्छ्रद्धया युक्तो मम सन्तोषकारणम् ॥ १॥

अर्थ-लोकविख्यात श्रीमद्भागवत नामक पुराण का प्रतिदिन श्रद्धायुक्त होकर श्रवण करना चाहिए। यही मेरे संतोष का कारण है।

नित्यं भागवतं यस्तु पुराणं पठते नरः । प्रत्यक्षरं भवेत्तस्य कपिलादानजं फलम् ॥ २ ॥

जो मनुष्य प्रतिदिन भागवतपुराणका पाठ करता है, उसे एक-एक अक्षर के उच्चारण के साथ कपिला गौ दान देने का पुण्य होता है।

श्लोकार्थ श्लोकपादं वा नित्यं भागवतोद्भवम् । पठते श्रृणुयाद् यस्तु गोसहस्रफलं लभेत् ॥ ३ ॥

जो प्रतिदिन भागवत के आधे श्लोक या चौथाई श्लोकका पाठ अथवा श्रवण करता है, उसे एक हजार गोदान का फल मिलता है।

यः पठेत् प्रयतो नित्यं श्लोकं भागवतं सुत। अष्टादशपुराणानां फलमाप्नोति मानवः ॥ ४ ॥

पुत्र। जो प्रतिदिन पवित्रचित्त होकर भागवत के एक श्लोक का पाठ करता है, वह मनुष्य अठारह पुराणों के पाठ का फल पा लेता है।

नित्यं मम कथा यत्र तत्र तिष्ठन्ति वैष्णवाः । कलिबाह्या नरास्ते वै येऽर्चयन्ति सदा मम ॥ ५ ॥

जहाँ नित्य मेरी कथा होती है, वहाँ विष्णुपार्षद प्रह्लाद आदि विद्यमान रहते हैं। जो मनुष्य सदा मेरे भागवतशास्त्र की पूजा करते हैं, वे कलिके अधिकारसे अलग हैं, उनपर कलि का वश नहीं चलता।

वैष्णवानां तु शास्त्राणि येऽर्चयन्ति गृहे नराः। सर्वपापविनिर्मुक्ता भवन्ति सुरवन्दिताः ॥ ६॥

जो मानव अपने घरमें वैष्णवशास्त्रोंकी पूजा करते हैं, वे सब पापों से मुक्त होकर देवताओं द्वारा वन्दित होते हैं।

येऽर्चयन्ति गृहे नित्यं शास्त्रं भागवतं कलौ।आस्फोटयन्ति वल्गन्ति तेषां प्रीतो भवाम्यहम्॥७॥

जो लोग कलियुग में अपने घरके भीतर प्रतिदिन भागवतशास्त्र की पूजा करते हैं, वे [कलिसे निडर होकर] ताल ठोंकते और उछलते-कूदते हैं, मैं उनपर बहुत प्रसन्न रहता हूँ।

यावद्दिनानि हे पुत्र शास्त्रं भागवतं गृहे। तावत् पिबन्ति पितरः क्षीरं सर्पिर्मधूदकम् ॥ ८ ॥

पुत्र ! मनुष्य जितने दिनों तक अपने घरमें भागवत शास्त्र रखता है, उतने समयतक उसके पितर दूध, घी, मधु और मीठा जल पीते हैं।

यच्छन्ति वैष्णवे भक्त्या शास्त्रं भागवतं हि ये। कल्पकोटिसहस्राणि मम लोके वसन्ति ते ॥ ९ ॥

जो लोग विष्णुभक्त पुरुष को भक्ति पूर्वक भागवतशास्त्र समर्पण करते हैं, वे हजारों करोड़ कल्पों तक (अनन्तकालतक) मेरे वैकुण्ठधाममें वास करते हैं।

येऽर्चयन्ति सदा गेहे शास्त्रं भागवतं नराः। प्रीणितास्तैश्च विबुधा यावदाभूतसंप्लवम् ॥ १० ॥

जो लोग सदा अपने घरमें भागवतशास्त्र का पूजन करते हैं, वे मानो एक कल्पतक के लिए सम्पूर्ण देवताओं को तृप्त कर देते हैं।

श्लोकार्धं श्लोकपादं वा वरं भागवतं गृहे। शतशोऽथ सहस्रैश्च किमन्यैः शास्त्रसंग्रहैः ॥ ११ ॥

यदि अपने घरपर भागवत का आधा श्लोक या चौथाई श्लोक भी रहे, तो यह बहुत उत्तम बात है, उसे छोड़कर सैकड़ों और हजारों तर हके अन्य ग्रन्थोंके संग्रह से भी क्या लाभ है?

न यस्य तिष्ठते शास्त्रं गृहे भागवतं कलौ।न तस्य पुनरावृत्तिर्याम्यपाशात् कदाचन ॥ १२॥

कलियुगमें जिस मनुष्यके घरमें भागवतशास्त्र मौजूद नहीं है, उसको यमराज के पाश से कभी

छुटकारा नहीं मिलता।

कथं स वैष्णवो ज्ञेयः शास्त्रं भागवतं कलौ। गृहे न तिष्ठते यस्य श्वपचाधिको हि सः ॥ १३॥

इस कलियुग में जिसके घर भागवतशास्त्र मौजूद नहीं है, उसे कैसे वैष्णव समझा जाए? वह तो चाण्डाल से भी बढ़कर नीच है!

सर्वस्वेनापि लोकेश कर्तव्यः शास्त्रसंग्रहः ।वैष्णवस्तु सदा भक्त्या तुष्ट्यर्थं मम पुत्रक ॥ १४॥

लोकेश ब्रह्मा ! पुत्र ! मनुष्यको सदा मुझे भक्ति- पूर्वक संतुष्ट करनेके लिए अपना सर्वस्व देकर भी वैष्णवशास्त्रोंका संग्रह करना चाहिए।

यत्र यत्र भवेत् पुण्यं शास्त्रं भागवतं कलौ। तत्र तत्र सदैवाहं भवामि त्रिदशैः सह ॥ १५ ॥

कलियुगमें जहाँ-जहाँ पवित्र भागवतशास्त्र रहता है, वहाँ-वहाँ सदा ही मैं देवताओं के साथ उपस्थित रहता हूँ।

तत्र सर्वाणि तीर्थानि नदीनदसरांसि च। यज्ञाः सप्तपुरी नित्यं पुण्याः सर्वे शिलोच्चयाः ॥ १६ ॥

यही नहीं वहाँ नदी, नद और सरोवररूपमें प्रसिद्ध सभी तीर्थ वास करते हैं; सम्पूर्ण यज्ञ, सात पुरियाँ और सभी पावन पर्वत वहाँ नित्य निवास करते हैं।

श्रोतव्यं मम शास्त्रं हि यशोधर्मजयार्थिना। पापक्षयार्थं लोकेश मोक्षार्थं धर्मबुद्धिना ॥ १७॥

लोकेश! यश, धर्म और विजय के लिए तथा पापक्षय एवं मोक्षकी प्राप्ति के लिए धर्मात्मा मनुष्य को सदा ही मेरे भागवतशास्त्र का श्रवण करना चाहिए।

श्रीमद्भागवतं पुण्यमायुरारोग्यपुष्टिदम् । पठनाच्छ्रवणाद् वापि सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ १८ ॥

यह पावन पुराण श्रीमद्भागवत आयु, आरोग्य और पुष्टि को देनेवाला है; इसका पाठ अथवा श्रवण करने से मनुष्य सब पापोंसे मुक्त हो जाता है।

न शृण्वन्ति न हृष्यन्ति श्रीमद्भागवतं परम्। सत्यं सत्यं हि लोकेश तेषां स्वामी सदा यमः ॥ १९॥

लोकेश ! जो इस परम उत्तम भागवत को न तो सुनते हैं और न सुनकर प्रसन्न ही होते हैं, उनके स्वामी सदा यमराज ही हैं-वे सदा यमराजके ही वश में रहते हैं-यह मैं सत्य-सत्य कह रहा हूँ।

न गच्छति यदा मर्त्यः श्रोतुं भागवतं सुत। एकादश्यां विशेषेण नास्ति पापरतस्ततः ॥ २०॥

पुत्र! जो मनुष्य सदा ही- विशेषतः एकादशी को भागवत सुनने नहीं जाता, उससे बढ़कर पापी कोई नहीं है।

श्लोकं भागवतं चापि श्लोकार्धं पादमेव वा। लिखितं तिष्ठते यस्य गृहे तस्य वसाम्यहम् ॥ २१ ॥

जिसके घरमें एक श्लोक, आधा श्लोक अथवा श्लोकका एक ही चरण लिखा रहता है, मैं उसके घर में निवास करता हूँ।

सर्वाश्रमाभिगमनं सर्वतीर्थावगाहनम् । न तथा पावनं नृणां श्रीमद्भागवतं यथा ॥ २२ ॥

मनुष्यके लिए सम्पूर्ण पुण्य-आश्रमों की यात्रा या सम्पूर्ण तीर्थों में स्नान करना भी वैसा पवित्रकारक नहीं है, जैसा श्रीमद्भागवत है।

यत्र यत्र चतुर्वक्त्र श्रीमद्भागवतं भवेत्। गच्छामि तत्र तत्राहं गौर्यथा सुतवत्सला ॥ २३॥

चतुर्मुख। जहाँ-जहाँ भागवतकी कथा होती है, वहाँ वहाँ मैं उसी प्रकार जाता हूँ, जैसे पुत्रवत्सला गौ अपने बछड़ेके पीछे-पीछे जाती है।

मत्कथावाचकं नित्यं मत्कथाश्रवणे रतम्। मत्कथाप्रीतमनसं नाहं त्यक्ष्यामि तं नरम् ॥ २४॥

जो मेरी कथा कहता है, जो सदा उसे सुनने में लगा रहता है तथा जो मेरी कथा से मन-ही-मन प्रसन्न होता है, उस मनुष्य का मैं कभी त्याग नहीं करता।

श्रीमद्भागवतं पुण्यं दृष्ट्वा नोत्तिष्ठते हि यः। सांवत्सरं तस्य पुण्यं विलयं याति पुत्रक ॥ २५ ॥

पुत्र ! जो परम पुण्यमय श्रीमद्भागवतशास्त्र को देखकर अपने आसन से उठकर खड़ा नहीं हो जाता, उसका एक वर्षका पुण्य नष्ट हो जाता है।

श्रीमद्भागवतं दृष्ट्वा प्रत्युथानाभिवादनैः।सम्मानयेत तं दृष्ट्वा भवेत् प्रीतिर्ममातुला ॥ २६ ॥

जो श्रीमद्भागवतपुराण को देखकर खड़ा होने और प्रणाम करने आदि के द्वारा उसका सम्मान करता है, उस मनुष्यको देखकर मुझे अनुपम आनन्द मिलता है।

दृष्ट्वा भागवतं दूरात् प्रक्रमेत् सम्मुखं हि यः।पदे पदेऽश्वमेधस्य फलं प्राप्नोत्यसंशयम् ॥ २७ ॥

जो श्रीमद्भागवत को दूरसे ही देखकर उसके सम्मुख जाता है, वह एक-एक पगपर अश्वमेध यज्ञ के पुण्य को प्राप्त करता है- इसमें तनिक भी संदेह नहीं है।

उत्थाय प्रणमेद् यो वै श्रीमद्भागवतं नरः ।धनपुत्रांस्तथा दारान् भक्तिं च प्रददाम्यहम् ॥ २८ ॥

जो मानव खड़ा होकर श्रीमद्भागवत को प्रणाम करता है, उसे मैं धन, स्त्री, पुत्र और अपनी भक्ति प्रदान करता हूँ।

महाराजोपचारैस्तु श्रीमद्भागवतं सुत।श्रृण्वन्ति ये नरा भक्त्या तेषां वश्यो भवाम्यहम् ॥ २९ ॥

हे पुत्र ! जो लोग महाराजोचित सामग्रियों से युक्त होकर भक्तिपूर्वक श्रीमद्भागवत की कथा सुनते हैं, मैं उनके वशीभूत हो जाता हूँ।

ममोत्सवेषु सर्वेषु श्रीमद्भागवतं परम्। शृण्वन्ति ये नरा भक्त्या मम प्रीत्यै च सुव्रत ।॥ ३० ॥

पुष्पैर्धूपदीपोपहारकैः । वस्त्रालङ्करणैः वशीकृतो ह्यहं तैश्च सत्स्त्रिया सत्पतिर्यथा ॥ ३१॥

सुव्रत ! जो लोग मेरे पर्वों से सम्बन्ध रखनेवाले सभी उत्सवों में मेरी प्रसन्नता के लिए वस्त्र, आभूषण, पुष्प, धूप और दीप आदि उपहार अर्पण करते हुए परम उत्तम श्रीमद्भागवतपुराण का भक्तिपूर्वक श्रवण करते हैं, वे मुझे उसी प्रकार अपने वशमें कर लेते हैं, जैसे पतिव्रता स्त्री अपने साधुस्वभाववाले पति को वश में कर लेती है।

(इतिस्कन्दपुराण, विष्णुखण्ड, मार्गशीर्षमाहात्म्य अ० १६)

अथ परिशिष्ट

श्रीमद्भागवत सप्ताह की आवश्यक विधि

पुराणों में श्रीमद्भागवत के सप्ताहपारायण तथा श्रवण की बड़ी भारी महिमा बतलायी गयी है, अतः यहाँ श्रीमद्भागवत-प्रेमियोंके लिए संक्षेप से सप्ताह यज्ञ की आवश्यक विधि का दिग्दर्शन कराया जाता है।

मुहूर्तविचार - पहले विद्वान् ज्योतिषीको बुलाकर उनके द्वारा कथा प्रारम्भके लिए शुभ मुहूर्त का विचार करा लेना चाहिए। नक्षत्रोंमें हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, पुनर्वसु, पुष्य, रेवती, अश्विनी, मृगशिरा, श्रवण, धनिष्ठा तथा पूर्वाभाद्रपदा उत्तम हैं। तिथियों में द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी, षष्ठी, दशमी, एकादशी तथा द्वादशी को इस कार्य के लिए श्रेष्ठ बतलाया गया है। सोम, बुध, गुरु एवं शुक्र- ये बार सर्वोत्तम हैं। तिथि, वार और नक्षत्र का विचार करने के साथ ही यह भी देख लेना चाहिए कि शुक्र या गुरु अस्त, बाल अथवा वृद्ध तो नहीं हैं। कथारम्भ का मुहूर्त भद्रादि दोषों से रहित होना चाहिए। उस दिन पृथ्वी जागती हो, वक्ता और श्रोता का चन्द्रबल ठीक हो। लग्न में शुभ ग्रहों का योग अथवा उनकी दृष्टि हो। शुभ ग्रहों की स्थिति केन्द्र या त्रिकोण में हो तो उत्तम है। आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक और मार्गशीर्ष (अगहन)- ये मास कथा आरम्भ करनेके लिए श्रेष्ठ बतलाये गये हैं। किन्हीं विद्वानों के मत से चैत्र और पौषको छोड़कर सभी माह ग्राह्य हैं।

कथाके लिए स्थान एवं मण्डप की साज सज्जा- सप्ताहकथा के लिए उत्तम एवं पवित्र स्थानकी व्यवस्था हो। जहाँ अधिक लोग सुविधा से बैठ सकें, ऐसे स्थान में कथा का आयोजन उत्तम है। नदी का तट, उपवन (बगीचा), देवमन्दिर अथवा अपना निवास-स्थान- ये सभी कथा के लिए उपयोगी स्थल हैं, स्थान लिपा-पुता स्वच्छ हो। नीचे की भूमि गोबर और पीली मिट्टीसे लीपी गयी हो। अथवा पक्का आँगन हो तो उसे धो दिया गया हो। उसपर पवित्र एवं सुन्दर आसन बिछे हों। ऊपरसे चंदोवा तना हो। चंदोवा आदि किसी भी कार्य में नीले रंगके वस्त्र का उपयोग न किया जाय। यजमान के हाथ से सोलह हाथ लम्बा और उतना ही चौड़ा कथा-मण्डप बने। उसे केलेके खम्भोंसे सजाया जाय। हरे बाँस के खंभे लगाये जायें। नूतन पल्लवों की बंदनवारों, पुष्पमालाओं और ध्वजा पताकाओं से मण्डप को भलीभाँति सुसज्जित किया जाय। उस पर ऊपरसे सुन्दर चंदोबा तान दिया जाय। उस मण्डप के दक्षिण- पश्चिम भाग में कथावाचक और मुख्य श्रोता के बैठने के लिए स्थान हो। शेष भाग में देवताओं और कलश

आदिका स्थापन किया जाय। कथावाचक के बैठने के लिए ऊँची चौकी रखी जाय। उसपर शुद्ध आसन (नया गद्दा) बिछाया जाय। पीछे तथा पार्श्वभागमें मसनद एवं तकिये रख दिये जायें। श्रीमद्भागवत को स्थापित करनेके लिए एक छोटी- सी चौकी या आधारपीठ बनवाकर उसपर पवित्र वस्त्र बिछा दिया जाय। उसपर आगे बतायी जाने वाली विधि के अनुसार अष्टदल कमल बनाकर पूजन करके श्रीमद्भागवत की पुस्तक स्थापित की जाय।

कथावाचक के गुण एवं नियम- कथावाचक विद्वान्, सर्वशास्त्रकुशल, दृष्टान्त देकर श्रोताओंको समझाने में समर्थ, सदाचारी एवं सद्गुणसम्पन्न ब्राह्मण हों। उनमें सुशीलता, कुलीनता, गम्भीरता तथा श्रीकृष्णभक्ति का होना भी परमावश्यक है। वक्ताको असूया तथा परनिन्दा आदि दोष से सर्वथा रहित निःस्पृह होना चाहिए। वक्ता को व्रत ग्रहण करने के लिए एक दिन पहले ही क्षौर करा लेना चाहिए। सप्ताह-प्रारम्भ होने के एक दिन पूर्व ही देवस्थापन, पूजनादि कर लेना उत्तम है। वक्ता प्रतिदिन सूर्योदय से पूर्व ही स्नानादि करके संक्षेप से सन्ध्या वन्दनादि का नियम पूरा कर ले और कथा में कोई विघ्न न आये, इसके लिए नित्यप्रति गणेशजी का पूजन कर लिया करे।

श्रीमद्भागवतग्रन्थ की मण्डप में स्थापना एवं अन्य नियम- श्रीमद्भागवत की पुस्तकको रेशमी वस्त्रसे आच्छादित करके छत्र-चावर के साथ डोली में अथवा अपने मस्तक पर रखकर कथामण्डप में लाना और स्थापित करना चाहिए। उस समय गीत- वाद्य आदि के द्वारा उत्सव मनाना चाहिए। कथामण्डप से अनुपयोगी वस्तुएँ हटा देनी चाहिए। इधर-उधर दीवालों में भगवान् और उनकी लीलाओं के स्मारक चित्र लगा देने चाहिए। वक्ता का मुँह यदि उत्तर की ओर हो तो मुख्य श्रोता का मुख पूर्व की ओर होना चाहिए। यदि वक्ता पूर्वाभिमुख हो तो श्रोता को उत्तराभिमुख होना चाहिए।

यजमान का कर्तव्य एवं नियम-

सप्ताह-कथा एक महान् यज्ञ है। इसे सुसम्पन्न करने के लिए अन्य सुहृद्-सम्बन्धियों को भी सहायक बना लेना चाहिए। अर्थ की भी समुचित व्यवस्था पहले से ही कर लेना उत्तम है। पाँच-सात दिन पहले से ही दूर-दूर तक कथा का समाचार भेज देना चाहिए और सबसे यह अनुरोध करना चाहिए कि वे स्वयं उपस्थित होकर सप्ताह-कथा श्रवण करें। अधिक समय न दे सकें तो भी एक दिन अवश्य पधारकर कथाश्रवण का लाभ लें। दूरसे आये हुए अतिथियों के ठहरने और भोजनादिकी व्यवस्था भी करनी चाहिए।

कथासप्ताह के प्रथम दिन यजमान स्नान आदिसे शुद्ध हो नित्यकर्म करके आभ्युदयिक श्राद्ध करे। आभ्युदयिक श्राद्ध और पहले भी किया जा सकता है। यज्ञमें इक्कीस दिन पहले भी आभ्युदयिक श्राद्ध करने का विधान है। उसके बाद गणेश, ब्रह्मा आदि देवताओं सहित नवग्रह, षोडशमातृका, सप्त चिरजीवी (अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनुमान्, विभीषण, कृपाचार्य तथा परशुरामजी) एवं कलश की स्थापना तथा पूजा करे। एक चौकी पर सर्वतोभद्र मण्डल बनाकर उसके मध्यभाग में ताम्रकलश स्थापित करे। कलशके ऊपर भगवान् लक्ष्मीनारायण की प्रतिमा स्थापित करनी चाहिए। कलश के ही बगल में भगवान् शालग्राम का सिंहासन विराजमान कर देना चाहिए। सर्वतोभद्र- मण्डलमें स्थित समस्त देवताओं का पूजन करनेके पश्चात् भगवान् नर-नारायण, गुरु, वायु, सरस्वती, शेष, सनकादि कुमार, सांख्यायन, पराशर, बृहस्पति, मैत्रेय तथा उद्धवका भी आवाहन, स्थापन एवं पूजन करना चाहिए। फिर त्रय्यारुणि आदि छः पौराणिकोंका भी स्थापन-पूजन करके एक अलग पीठपर उसे सुन्दर वस्त्र से आवृत करके, श्रीनारदजी की स्थापना एवं अर्चना करनी चाहिए। तदनन्तर आधारपीठ, पुस्तक एवं व्यास (वक्ता आचार्य) का भी यथाप्राप्त उपचारों से पूजन करना चाहिए। कथा निर्विघ्न पूर्ण हो-इसके लिए गणेशमन्त्र, द्वादशाक्षरमन्त्र तथा गायत्री मन्त्र का जप और विष्णुसहस्त्रनाम एवं गौताका पाठ करने के लिए अपनी शक्ति के अनुसार सात, पाँच या तीन ब्राह्मणों का वरण करे। श्रीमद्भागवत का भी एक पाठ अलग ब्राह्मण द्वारा कराये। देवताओं की स्थापना और पूजाके पहले स्वस्तिवाचन पूर्वक हाथ में पवित्री, अक्षत, फूल, जल और द्रव्य लेकर एक महासंकल्प कर लेना चाहिए। गणपति आदि सभी देवताओं का पूजा षोडशोपचार पूजन करके ,पुरुषसूक्त से भगवान विष्णु-लक्ष्मी का पूजन करके आरती पश्चात कथा प्रारम्भ करते हैं।

श्रोताओंके स्थान -

वक्ता के सामने श्रोताओं के बैठनेके लिए आगे-पीछे सात पंक्तियाँ बना लेनी चाहिए। पहली पंक्ति का नाम **सत्यलोक** है, इसमें साधु-संन्यासी, विरक्त, वैष्णव आदि को बैठाना चाहिए। दूसरी पंक्ति **तपोलोक** कहलाती है, इसमें वानप्रस्थ श्रोताओं को बैठाना चाहिए। तीसरी पंक्तिको **जनलोक** नाम दिया गया है, इसमें ब्रह्मचारी श्रोता बैठाये जाने चाहिए। चौथी पंक्ति **महर्लोक** कही गयी है, यह ब्राह्मण श्रोताओंका स्थान है। पाँचवीं पंक्तिको **स्वर्लोक** कहते हैं। इसमें क्षत्रिय श्रोताओंको बैठाना चाहिए। छठी पंक्तिका नाम **भुवर्लोक** है, जो वैश्य श्रोताओंका स्थान है। सातवीं पंक्ति **भूर्लोक** मानी गयी है, उसमें अन्य

शेषजातीय कथा सेवकों श्रोताओंको बैठाना चाहिए। स्त्रियाँ वक्ता के वामभाग की भूमि पर कथा सुनें। ये स्थान उन लोगों के लिए नियत किये गये हैं, जो प्रतिदिन नियमपूर्वक कथा सुनते हैं। जो श्रोता कथा प्रारम्भ होनेपर कुछ समयके लिए अनियमित रूप से आते हैं, उनके लिए वक्ताके दक्षिण भागमें स्थान रहना चाहिए।

श्रोताओं के नियम - श्रोता प्रतिदिन एक बार हविष्यान्न भोजन करें। पतित, दुर्जन आदिका संग तो दूर रहा, उनसे वार्तालाप भी न करें। ब्रह्मचर्यपालन, भूमिशयन (नीचे आसन बिछाकर या तख्तपर सोना) सबके लिए अनिवार्य है। एकाग्रचित्त होकर कथा सुननी चाहिए। जितने दिन कथा सुनें- धन, स्त्री, पुत्र, घर एवं लौकिक लाभकी समस्त चिन्ताएँ त्याग दें। मल-मूत्रपर काबू रखनेके लिए हलका आहार सुखद होता है। यदि शक्ति हो तो सात दिनतक उपवास करके कथा सुनें। अन्यथा दूध पीकर सुखपूर्वक कथा सुनें। इससे भी काम न चले तो फलाहार या एक समय अन्न-भोजन करें। जिस तरह भी सुखपूर्वक कथा सुनने की सुविधा हो, वैसे कर लें। प्रतिदिन कथा समाप्त होनेपर ही भोजन करना उचित है। दाल, शहद, तेल, गरिष्ठ अन्न, भावदूषित अन्न तथा बासी अन्नका परित्याग करें। काम, क्रोध, मद, मान, ईर्ष्या, लोभ, दम्भ, मोह तथा द्वेषसे दूर रहें। वेद, वैष्णव, ब्राह्मण, गुरु, गौ, व्रती, स्त्री, राजा तथा महापुरुषों की कभी भूलकर भी निन्दा न करें। रजस्वला, चाण्डाल, म्लेच्छ, पतित, व्रतहीन, ब्राह्मणद्रोही तथा वेद बहिष्कृत मनुष्यों से वार्तालाप न करें। मनमें सत्य, शौच, दया, मौन, सरलता, विनय तथा उदारता को स्थान दें। श्रोताओं को वक्तासे ऊँचे आसनपर कभी नहीं बैठना चाहिए।

कुछ विशेष बातें - प्रत्येक स्कन्ध की समाप्ति होनेपर चन्दन, पुष्प, नैवेद्य आदिसे पुस्तक की पूजा करके आरती उतारनी चाहिए। शुकदेवजीके आगमन तथा श्रीकृष्णके प्राकट्यका प्रसंग आनेपर भी आरती करनी चाहिए। बारहवें स्कन्ध की समाप्ति होनेपर पुस्तक और वक्ताका भक्तिपूर्वक पूजन करना चाहिए। वक्ता गृहस्थ हों तो, उन्हें अपनी शक्तिके अनुसार उदारतापूर्वक वस्त्राभूषण तथा नकद रुपये भेंट देने चाहिए। मृदंग आदि बजाकर जोर-जोर से कीर्तन करना चाहिए। जय-जयकार, नमस्कार और शंख नाद करने चाहिए। ब्राह्मणों और याचकोंको अन्न एवं धन देना चाहिए।

वक्ता के हाथों से श्रोताओं को प्रसाद एवं तुलसीदल मिलने चाहिए। प्रतिदिन कथा के प्रारम्भ और अन्त में आरती होनी आवश्यक है।

कथा का विश्राम प्रतिदिन ग्रन्थ के नियत स्थलपर ही करना चाहिए। प्रथम दिन मनु-कर्दम-संवाद तक। दूसरे दिन भरत-चरित्र तक। तीसरे दिन सातवें स्कन्ध की समाप्ति तक। चौथे दिन श्रीकृष्ण के प्राकट्य तक। पाँचवें दिन रुक्मिणी-विवाह तक और छठे दिन हंसोपाख्यान तक की कथा बाँचकर, सातवें दिन अवशिष्ट भागको पूर्ण कर देना चाहिए।{ **मनुकर्दमसंवादपर्यन्तं प्रथमेऽहनि । भरताख्यानपर्यन्तं द्वितीयेऽहनि वाचयेत् ॥ तृतीये दिवसे कुर्यात् सप्तमस्कन्धपूरणम् । कृष्णाविर्भावपर्यन्तं चतुर्थे दिवसे वदेत् ॥ रुक्मिण्युद्वाहपर्यन्तं पञ्चमेऽहनि शस्यते । श्रीहंसाख्यानपर्यन्तं षष्ठेऽहनि वदेत् सुधीः ।। सप्तमे तु दिने कुर्यात् पूर्तिं भागवतस्य वै। एवं निर्विघ्नतासिद्धिर्विपर्यय इतोऽन्यथा ।।**}

स्कन्धके आदि और अन्तिम श्लोकको कई बार उच्च स्वरसे पढ़ना चाहिए।

सप्ताह-कथाके समाप्तिके आठवें दिन का नियम -कथा समाप्तिके दूसरे दिन वहाँ स्थापित हुए सम्पूर्ण देवताओंका पूजन करके हवनकी वेदीपर पंचभूसंस्कार, अग्निस्थापन एवं कुशकण्डिका करे। फिर विधिपूर्वक वृत ब्राह्मणों द्वारा हवन, तर्पण एवं मार्जन कराकर श्रीमद्भागवत की शोभायात्रा निकाले और ब्राह्मण- भोजन कराये। मधु-मिश्रित खीर और तिल आदिसे भागवतके श्लोकोंका दशांश (अर्थात् १,८००) आहुति देनी चाहिए। खीरके अभावमें तिल, चावल, जौ, मेवा, शुद्ध घी और चीनीको मिलाकर हवनीय पदार्थ तैयार कर लेना चाहिए। इसमें सुगन्धित पदार्थ (कपूर-काचरी, नागरमोथा, छड़छड़ीला, अगर-तगर, चन्दनचूर्ण आदि) भी मिलाने चाहिए। पूर्वोक्त अठारह सौ आहुति गायत्री मन्त्र अथवा दशम-स्कन्धके प्रति श्लोकसे देनी चाहिए। हवनके अन्तमें दिक्पाल आदिके लिए बलि, क्षेत्रपाल-पूजन, छायापात्र- दान, हवनका दशांश तर्पण एवं तर्पणका दशांश मार्जन करना चाहिए। फिर आरतीके पश्चात् किसी नदी, सरोवर या कूपादि पर जाकर अवभृथस्नान (यज्ञान्त-स्नान) भी करना चाहिए। इसके लिए समूहके साथ शोभायात्रा निकालकर गाजे बाजेके साथ कीर्तन करते हुए जाना चाहिए। यजमान श्रीमद्भागवत ग्रन्थ को अपने मस्तकपर रखकर उसकी शोभायात्रा निकाले, जिसमें वक्ता तथा सब श्रोता सम्मिलित हों। हरिकीर्तन होता चले। भागवत ग्रन्थपर बँवर-पंखे डुलते रहें। घड़ियाल, घण्टा, झाँझ, शंख आदि बाजे बजते रहें। जो पूर्ण हवन करनेमें असमर्थ हो, वह यथाशक्ति हवनीय पदार्थ दान करे। अन्त में कम-से-कम बारह ब्राह्मणोंको मधुयुक्त खीरका भोजन कराना चाहिए। व्रतकी पूर्तिके लिए सुवर्ण-दान और गोदान करना चाहिए। सिंहासनपर विराजित सुन्दर अक्षरोंमें लिखित श्रीमद्भागवतकी पूजा करके उसे दक्षिणासहित कथावाचक आचार्यको दान कर देना चाहिए। अन्तमें सब प्रकार की त्रुटियों की

पूर्ति के लिए विष्णुसहस्रनाम का पाठ कथावाचक आचार्य के द्वारा सुनना चाहिए। विरक्त श्रोताओं को 'गीता' सुननी चाहिए।

सप्ताह-कथाके प्रारम्भमें संग्रहणीय सामग्रीकी सूची

पूजन-सामग्री

गंगाजल, रोली (कुंकुम), मोली (रक्षासूत्र), चन्दन, शुद्ध केसर, कपूर, पुष्प, पुष्पमाला, तुलसीदल, बिल्वपत्र, दूर्वादल, धूप, शुद्ध अगरबत्ती, पंचामृत (दूध , दही, मधु , चीनी , दीप (यथासम्भव शुद्ध, गोघृत और रूई), पानका पत्ता , सुपारी, यज्ञोपवीत इलायची, लौंग, पेड़ा , मेवा , गुड़ ,चावल , गेहूँ , कुण्डे मिट्टीके गेहूँ बोनेके लिए, पीली सरसों, अबीर, गुलाल, ऋतुफल-केला संतरा आदि, कपड़ा सफेद , कपड़ा लाल , कपड़ा पीला , कपड़ा शुद्ध रेशमी , सर्वतोभद्रकी रचनाके लिए हरा, लाल, काला, पीला और गुलाबी रंग, गोबर, नारियल दो या सात, शुद्ध इत्र, कुशा, सिन्दूर, रुपये रेजगी पैसे, आरतीका पात्र, घण्टा, घड़ियाल, शंख झाँझ आदि, कोसा पचास, दियासलाई, चौकी एक सर्वतोभद्र के लिए, चौकी एक नारदजीके लिए, चौकी एक नवग्रह, षोडशमातृका और गणेशके लिए, चौकी एक व्यास, शुकदेव, सप्त-चिरजीवी तथा पौराणिकोंके लिए, पाटा एक शेष सनत्कुमारादिके लिए।

कलशस्थापन की सामग्री

कलश ताँबेका एक, ताँबे या काँसीका पात्र एक, कलश मिट्टीके पाँच, सप्तधान्य (जौ, गेहूँ, धान, तिल, कैंगनी, साँवा, चना), पंचपल्लव (आम, पीपल, पाकर, गूलर और बड़के पत्ते) दूर्वा, कुशा, सुपारी, दक्षिणा, चन्दन, अक्षत, फूल, तीर्थोदक, समुद्रजल, सप्तमृत्तिका (घुड़सालकी, हाथीशालाकी, दीमककी, नदी संगमकी, राजद्वारकी, गोशालाकी, तालाबकी), सर्वोषधि (कूट, जटामाशी, हल्दी गाँठ , राभट, मुरा, शैलेभ, चन्दन, बचा, चम्पक और नागरमोथा-अभावमें केवल हल्दी), नदीसंगमका जल, श्रीलक्ष्मी-नारायणकी प्रतिमा।

कथामण्डपके लिए सामग्री

चंदोवेका कपड़ा, चौकोर मण्डप, केलेके खम्भे चार, बाँसके खम्भे, मण्डप को चारों ओर से माला, फूल और पत्तोंसे सजाना, चारों दिशाओंमें झंडी लगाना, वस्त्र और गोटे आदि से सजाना, चौकी व्यासके लिए, गद्दी, मसनद, तकिये, कम्बल, चद्दर, पाँच झंडियाँ, पुस्तकका वेष्टन, पुस्तकके लिए चौकी, आम या अशोक के पत्तों के बंदनवार।

गणेशजी, देवता, श्रीमद्भागवत और आचार्य की पूजाके लिए प्रतिदिन चन्दन, पुष्प, पुष्पमाला, धूप, दीपादि सामग्री।

वरण की सामग्री

वक्त्ताके लिए चादर, धोती, गमछा, आसन, दक्षिणा, तुलसीमाला, जलपात्र आदि, जप करने वालों के लिए भी यथासम्भव वस्त्र द्रव्य आदि।

॥ श्रीमद्भागवत महापुराण का कथामाहात्म्य॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

अथमङ्गलाचरणम्

कृष्णं नारायणं वन्दे कृष्णं वन्दे व्रजप्रियम् । कृष्णं द्वैपायनं वन्दे कृष्णं वन्दे पृथासुतम् ।।

अथ प्रथमोऽध्यायः

देवर्षि नारदकी भक्ति से भेंट

सच्चिदानन्दरूपाय विश्वोत्पत्त्यादिहेतवे। तापत्रयविनाशाय श्रीकृष्णाय वयं नुमः ॥ १

यं प्रव्रजन्तमनुपेतमपेतकृत्यं द्वैपायनो विरहकातर आजुहाव ।

पुत्रेति तन्मयतया तरवोऽभिनेदु- स्तं सर्वभूतहृदयं मुनिमानतोऽस्मि ॥ २

नैमिषे सूतमासीनमभिवाद्य महामतिम्। कथामृतरसास्वादकुशलः शौनकोऽब्रवीत् ॥ ३

सच्चिदानन्दस्वरूप भगवान् श्रीकृष्णको हम नमस्कार करते हैं, जो जगत्की उत्पत्ति, स्थिति और विनाशके हेतु तथा आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक तीनों प्रकार के तापों का नाश करनेवाले हैं॥ १॥

जिस समय श्रीशुकदेवजीका यज्ञोपवीत-संस्कार भी नहीं हुआ था तथा लौकिक-वैदिक कर्मों के अनुष्ठान का अवसर भी नहीं आया था, तभी उन्हें अकेले ही संन्यास लेने के लिए घर से जाते देखकर उनके पिता व्यासजी विरहसे कातर होकर पुकारने लगे- 'बेटा ! बेटा ! तुम कहाँ जा रहे हो?' उस समय वृक्षों ने तन्मय होनेके कारण श्रीशुकदेवजी की ओर से उत्तर दिया था। ऐसे सर्वभूत-हृदयस्वरूप श्रीशुकदेवमुनिको मैं नमस्कार करता हूँ ॥ २ ॥

एक बार भगवत्कथामृत का रसास्वादन करनेमें कुशल मुनिवर शौनकजी ने नैमिषारण्य क्षेत्र में विराजमान महामति सूतजीको नमस्कार करके उनसे पूछा ॥ ३ ॥

शौनक उवाच

अज्ञानध्वान्तविध्वंसकोटिसूर्यसमप्रभ।सूताख्याहि कथासारं मम कर्णरसायनम् ॥ ४

भक्तिज्ञानविरागाप्तो विवेको वर्धते महान्। मायामोहनिरासश्च वैष्णवैः क्रियते कथम् ॥ ५

इह घोरे कलौ प्रायो जीवश्चासुरतां गतः । क्लेशाक्रान्तस्य तस्यैव शोधने किं परायणम् ॥ ६

श्रेयसां यद्भवेच्छ्रेयः पावनानां च पावनम् । कृष्णप्राप्तिकरं शश्वत्साधनं तद्वदाधुना ।।७

चिन्तामणिर्लोकसुखं सुरद्रुः स्वर्गसम्पदम् । प्रयच्छति गुरुः प्रीतो वैकुण्ठं योगिदुर्लभम् ॥८

शौनकजी बोले- सूतजी! आपका ज्ञान अज्ञानान्धकारको नष्ट करनेके लिए करोड़ों सूर्यों के समान है। आप हमारे कानों के लिए रसायन-अमृत- स्वरूप सारगर्भित कथा कहिये ॥ ४ ॥ भक्ति, ज्ञान और वैराग्यसे प्राप्त होनेवाले महान् विवेक की वृद्धि किस प्रकार होती है तथा वैष्णवलोग किस तरह इस माया-मोहसे अपना पीछा छुडाते हैं? ॥ ५ ॥ इस घोर कलि- कालमें जीव प्रायः आसुरी स्वभावके हो गये हैं, विविध क्लेशों से आक्रान्त इन जीवों को शुद्ध (दैवीशक्तिसम्पन्न) बनाने का सर्वश्रेष्ठ उपाय क्या है? ॥ ६ ॥ सूतजी। आप हमें कोई ऐसा शाश्वत साधन बताइये जो सबसे अधिक कल्याणकारी तथा परिय करनेवालोंमें भी पवित्र हो; तथा जो भगवान् श्रीकृष्ण को प्राप्ति करा दे॥ ७॥ चिन्तामणि केवल लौकिक सुख दे सकती है और कल्पवृक्ष अधिक से अधिक स्वर्गीय सम्पत्ति दे सकता है। परन्तु गुरुदेव प्रसन होकर भगवान्का योगिदुर्लभ नित्य वैकुण्ठधाम दे देते हैं॥ ८ ॥

सूत उवाच

प्रीतिः शौनक चित्ते ते ह्यतो वच्मि विचार्य च । सर्वसिद्धान्तनिष्पन्नं संसारभयनाशनम् ॥९

भक्त्योघवर्धनं यच्च कृष्णसंतोषहेतुकम् । तदहं तेऽभिधास्यामि सावधानतया शृणु ॥ १०

कालव्यालमुखग्रासत्रासनिर्णाशहेतवे । श्रीमद्भागवतं शास्त्रं कलौ कीरेण भाषितम् ॥ ११

एतस्मादपरं किंचिन्मनः शुद्धै न विद्यते। जन्मान्तरे भवेत्पुण्यं तदा भागवतं लभेत् ॥ १२

परीक्षिते कथां वक्तुं सभायां संस्थिते शुके । सुधाकुम्भं गृहीत्वैव देवास्तत्र समागमन् ॥ १३

शुकं नत्वावदन् सर्वे स्वकार्यकुशलाः सुराः । कथासुधां प्रयच्छस्व गृहीत्वैव सुधामिमाम् ॥ १४

एवं विनिमये जाते सुधा राज्ञा प्रपीयताम्। प्रपास्यामो वयं सर्वे श्रीमद्भागवतामृतम् ॥ १५

क्व सुधा क्व कथा लोके क्व काचः क्व मणिर्महान् । ब्रह्मरातो विचार्यैवं तदा देवाञ्जहास ह॥ १६

अभक्तांस्तांश्च विज्ञाय न ददौ स कथामृतम् । श्रीमद्भागवती वार्ता सुराणामपि दुर्लभा ॥ १७

सूतजीने कहा- शौनकजी। तुम्हारे हृदयों में भगवान्‌का प्रेम है; इसलिए मैं विचारकर तुम्हें सम्पूर्ण सिद्धान्तों का निष्कर्ष सुनाता हूँ, जो जन्म-मृत्युके भयका नाश कर देता है॥ ९ ॥ जो भक्तिके प्रवाह को बढ़ाता है और भगवान् श्रीकृष्णको प्रसन्नताका प्रधान कारण है, मैं तुम्हें वह साधन बतलाता हूँ। उसे सावधान होकर सुनो ॥ १० ॥ श्रीशुकदेवजीने कलियुगमें जीवोंके कालरूपी सर्पके मुखका ग्रास होनेके त्रासका आत्यन्तिक नाश करनेके लिए श्रीमद्भागवतशास्त्रका प्रवचन किया है॥ ११ ॥ मन की शुद्धि के लिए इससे बढ़कर कोई साधन नहीं है। जब मनुष्य के जन्म जन्मान्तरका पुण्य उदय होता है, तभी उसे इस भागवतशास्त्रकी प्राप्ति होती है॥ १२ ॥ जब शुकदेवजी राजा परीक्षित्‌को यह कथा सुनानेके लिए सभामें विराजमान हुए, तब देवतालोग उनके पास अमृतका कलश लेकर आये ॥ १३ ॥ देवता अपना काम बनानेमें बड़े कुशल होते हैं; अतः यहाँ भी सबने शुकदेवमुनि को नमस्कार करके कहा; 'आप यह अमृत लेकर बदलेमें हमें कथामृत का दान दीजिए ॥ १४॥ इस प्रकार परस्पर विनिमय (अदला-बदली) हो जानेपर राजा परीक्षित् अमृतका पान करें और हम सब श्रीमद्भागवतरूप अमृतका पान करेंगे' ॥ १५ ॥ इस संसारमें कहाँ काँच और कहाँ महामूल्य मणि तथा कहाँ सुधा और कहाँ कथा ? श्रीशुकदेवजी ने (यह सोचकर) समय देवताओंकी हँसी उड़ा दी ॥ १६॥ उन्हें भक्तिशून्य (कथाका अनधिकारी) जानकर कथामृतका दान नहीं किया। इस प्रकार यह श्रीमद्भागवतकी कथा देवताओं को भी दुर्लभ है॥ १७॥

राजो मोक्ष तथा वीक्ष्य पुरा धातापि विस्मितः । सत्यलोके तुलां बद्धातोलयत्साधनान्यजः ॥ १८

लघून्यन्यानि जातानि गौरवेण इदं महत्। तदा ऋषिगणाः सर्वे विस्मयं परमं ययुः ॥ १९

मेनिरे भगवद्रूपं शास्त्रं भागवतं कलौ।पठनाच्छ्रवणात्सद्यो वैकुण्ठफलदायकम् ॥ २०

सप्ताहेन श्रुतं वैतत्सर्वथा मुक्तिदायकम्। सनकाद्यैः पुरा प्रोक्तं नारदाय दयापरैः ।॥ २१

यद्यपि ब्रह्मसम्बन्धाच्छ्रुतमेतत्सुरर्षिणा। सप्ताहश्रवणविधिः कुमारैस्तस्य भाषितः ॥ २२

पूर्वकालमें श्रीमद्भागवतके श्रवणसे ही राजा परीक्षित् की मुक्ति देखकर ब्रह्माजी को भी बड़ा आश्चर्य हुआ था। उन्होंने सत्यलोक में तराजू बाँधकर सब साधनोंको तौला ॥ १८॥ अन्य सभी साधन तौलमें हलके पड़ गये, अपने महत्त्व के कारण भागवत ही सबसे भारी रहा। यह देखकर सभी ऋषियों को बड़ा विस्मय हुआ ॥ १९ ॥ उन्होंने कलियुगमें इस भगवद्रूप भागवतशास्त्रको ही पढ़ने-सुनने से तत्काल मोक्ष देनेवाला निश्चय किया ॥ २० ॥ सप्ताह-विधिसे श्रवण करनेपर यह निश्चय भक्ति प्रदान करता है। पूर्वकालमें इसे दयापरायण सनकादि ने देवर्षि नारद को सुनाया था ॥ २१ ॥ यद्यपि देवर्षि ने पहले

ब्रह्माजी के मुख से इसे श्रवण कर लिया था, तथापि सप्ताहश्रवणकी विधि तो उन्हें सनकादि ने ही बताई थी ॥ २२ ॥

शौनक उवाच -

लोकविग्रहमुक्तस्य नारदस्यास्थिरस्य च। विधिश्रवे कुतः प्रीतिः संयोगः कुत्र तैः सह ॥ २३

शौनकजीने पूछा- सांसारिक प्रपंचसे मुक्त एवं विचरणशील नारदजीका सनकादिके साथ संयोग कहाँ हुआ और विधि-विधानके श्रवणमें उनकी प्रीति कैसे हुई ? ॥ २३ ॥

सूत उवाच -

अत्र ते कीर्तयिष्यामि भक्तियुक्तं कथानकम्। शुकेन मम यत्प्रोक्तं रहः शिष्यं विचार्य च ॥ २४

एकदा हि विशालायां चत्वार ऋषयोऽमलाः । सत्सङ्गार्थं समायाता ददृशुस्तत्र नारदम् ॥ २५

सूतजीने कहा- अब मैं तुम्हें वह भक्तिपूर्ण कथानक सुनाता हूँ, जो श्रीशुकदेवजी ने मुझे अपना अनन्य शिष्य जानकर एकान्त में सुनाया था ॥ २४ ॥ एक दिन विशालापुरी में वे चारों निर्मल ऋषि सत्संगके लिए आये। वहाँ उन्होंने नारदजीको देखा ॥ २५ ॥

कुमारा ऊचुः -

कथं ब्रह्मन्दीनमुखः कुतश्चिन्तातुरो भवान् । त्वरितं गम्यते कुत्र कुतश्चागमनं तव ॥ २६

इदानीं शून्यचित्तोऽसि गतवित्तो यथा जनः । तवेदं मुक्तसङ्गस्य नोचितं वद कारणम् ॥ २७

सनकादि ने पूछा- ब्रह्मन् ! आपका मुख उदास क्यों हो रहा है? आप चिन्तातुर कैसे हैं? इतनी जल्दी-जल्दी आप कहाँ जा रहे हैं? और आपका आगमन कहाँ से हो रहा है?॥ २६ ॥ इस समय तो आप उस पुरुष के समान व्याकुल जान पड़ते हैं जिसका सारा धन लुट गया हो; आप-जैसे आसक्तिरहित पुरुषों के लिए यह उचित नहीं है। इसका कारण बताइये ॥ २७ ॥

नारद उवाच -

अहं तु पृथिवीं यातो ज्ञात्वा सर्वोत्तमामिति । पुष्करं च प्रयागं च काशीं गोदावरीं तथा ॥ २८

हरिक्षेत्रं कुरुक्षेत्रं श्रीरङ्ग सेतुबन्धनम् । एवमादिषु तीर्थेषु भ्रममाण इतस्ततः ॥ २९

नापश्यं कुत्रचिच्छर्म मनः संतोषकारकम् । कलिनाधर्ममित्रेण धरेयं बाधिताधुना ॥ ३०

नारदजीने कहा- मैं सर्वोत्तम लोक समझकर पृथ्वी में आया था। यहाँ पुष्कर, प्रयाग, काशी, गोदावरी (नासिक), हरिद्वार, कुरुक्षेत्र, श्रीरंग और सेतुबन्ध आदि कई तीर्थों में मैं इधर-उधर विचरता रहा; किन्तु

मुझे कहीं भी मन को संतोष देनेवाली शान्ति नहीं मिली। इस समय अधर्म के सहायक कलियुग ने सारी पृथ्वी को पीड़ित कर रखा है॥ २८-३० ॥

सत्यं नास्ति तपः शौचं दया दानं न विद्यते । उदरम्भरिणो जीवा वराकाः कूटभाषिणः ॥ ३१

मन्दाः सुमन्दमतयो मन्दभाग्या ह्युपद्रुताः । पाखण्डनिरताः सन्तो विरक्ताः सपरिग्रहाः ।। ३२

तरुणीप्रभुता गेहे श्यालको बुद्धिदायकः । कन्याविक्रयिणो लोभाद्दम्पतीनां च कल्कनम् ॥ ३३

आश्रमा यवनै रुद्धास्तीर्थानि सरितस्तथा। देवतायतनान्यत्र दुष्टैर्नष्टानि भूरिशः ॥ ३४

न योगी नैव सिद्धो वा न ज्ञानी सत्क्रियो नरः । कलिदावानलेनाद्य साधनं भस्मतां गतम् ॥ ३५

अट्टशूला जनपदाः शिवशूला द्विजातयः । कामिन्यः केशशूलिन्यः सम्भवन्ति कलाविह ॥ ३६

एवं पश्यन् कलेर्दोषान् पर्यटन्नवनीमहम् । यामुनं तटमापन्नो यत्र लीला हरेरभूत् ॥ ३७

तत्राश्चर्यं मया दृष्टं श्रूयतां तन्मुनीश्वराः । एका तु तरुणी तत्र निषण्णा खिन्नमानसा ।। ३८

वृद्धौ द्वौ पतितौ पार्श्वे निःश्वसन्तावचेतनौ । शुश्रूषन्ती प्रबोधन्ती रुदती च तयोः पुरः ॥ ३९

दशदिक्षु निरीक्षन्ती रक्षितारं निजं वपुः । वीज्यमाना शतस्त्रीभिर्बोध्यमाना मुहुर्मुहुः ॥ ४०

दृष्ट्वा दूराद्गतः सोऽहं कौतुकेन तदन्तिकम् । मां दृष्ट्वा चोत्थिता बाला विह्वला चाब्रवीद्वचः ॥ ४१

अब यहाँ सत्य, तप, शौच (बाहर भीतरकी पवित्रता), दया, दान आदि कुछ भी नहीं है। बेचारे जीव केवल अपना पेट पालनेमें लगे हुए हैं; वे असत्यभाषी, आलसी, मन्दबुद्धि, भाग्यहीन, उपद्रवग्रस्त हो गये हैं। जो साधु-संत कहे जाते हैं वे पूरे पाखण्डी हो गये हैं; देखनेमें तो वे विरक्त हैं, किन्तु स्त्री-धन आदि सभीका परिग्रह करते हैं। घरोंमें स्त्रियोंका राज्य है, साले सलाहकार बने हुए हैं, लोभसे लोग कन्या विक्रय करते हैं और स्त्री-पुरुषों में कलह मचा रहता है॥ ३१-३३॥ महात्माओं के आश्रम, तीर्थ और नदियोंपर यवनों (विधर्मियों) का अधिकार हो गया है; उन दुष्टोंने बहुत से देवालय भी नष्ट कर दिए हैं॥ ३४ ॥ इस समय यहाँ न कोई योगी है न सिद्ध है; न ज्ञानी है और न सत्कर्म करनेवाला ही है। सारे साधन इस समय कलिरूप दावानलसे जलकर भस्म हो गये हैं॥ ३५ ॥ इस कलियुगमें सभी देशवासी बाजारोंमें अन्न बेचने लगे हैं, ब्राह्मण लोग पैसा लेकर वेद पढ़ाते हैं और स्त्रियाँ वेश्या-वृत्ति से निर्वाह करने लगी हैं॥ ३६ ॥

इस तरह कलियुगके दोष देखता और पृथ्वी पर विचरता हुआ मैं यमुनाजी के तटपर पहुँचा जहाँ भगवान् श्रीकृष्ण की अनेकों लीलाएँ हो चुकी हैं॥ ३७ ॥ मुनिवरो ! सुनिये, वहाँ मैंने एक बड़ा आश्चर्य देखा।

वहाँ एक युवती स्त्री खिन्न मनसे बैठी थी ॥ ३८ ॥ उसके पास दो वृद्ध पुरुष अचेत अवस्थामें पड़े जोर-जोर से साँस ले रहे थे। वह तरुणी उनकी सेवा करती हुई कभी उन्हें चेत करानेका प्रयत्न करती और कभी उनके आगे रोने लगती थी ॥ ३९ ॥ वह अपने शरीर के रक्षक परमात्माको दशों दिशाओं में देख रही थी। उसके चारों ओर सैकड़ों स्त्रियाँ उसे पंखा झल रही थीं और बार-बार समझाती जाती थीं ॥ ४० ॥ दूरसे यह सब चरित देखकर मैं कुतूहलवश उसके पास चला गया। मुझे देखकर वह युवती खड़ी हो गयी और बड़ी व्याकुल होकर कहने लगी ॥ ४१ ॥

बालोवाच -

भो भोः साधो क्षणं तिष्ठ मच्चिन्तामपि नाशय। दर्शनं तव लोकस्य सर्वधाघहरं परम् ॥ ४२

बहुधा तव वाक्येन दुःखशान्तिर्भविष्यति । यदा भाग्यं भवेद्भूरि भवतो दर्शनं तदा ॥ ४३

युवतीने कहा-अजी महात्माजी। क्षणभर ठहर जाइए और मेरी चिन्ता को भी नष्ट कर दीजिए। आपका सर्वथा नष्ट कर देवर्णन तो संसार के सभी पापों को मेरे दुःखकी भी बहुत कुछ शान्ति हो जाएगी। मनुष्यका जब बड़ा भाग्य होता है, तभी आपके दर्शन हुआ करते हैं ॥ ४३ ॥

नारद उवाच -

कासि त्वं काविमौ चेमा नार्यः काः पद्मलोचनाः । बंद देवि सविस्तारं स्वस्य दुःखस्य कारणम् ॥ ४४

बालोवाच -

अहं भक्तिरिति ख्याता इमौ मे तनयौ मतौ। ज्ञानवैराग्यनामानौ कालयोगेन जर्जरौ ॥ ४५

गङ्गाद्याः सरितश्चेमा मत्सेवार्थं समागताः । तथापि न च मे श्रेयः सेविताया सुरैरपि ॥ ४६

इदानीं शृणु मद्वार्तां सचित्तस्त्वं तपोधन। वार्ता मे विततापास्ति तां श्रुत्वा सुखमावह ॥ ४७

उत्पन्ना द्रविडे साहं वृद्धिं कर्णाटके गता। क्वचित्कचिन्महाराष्ट्रे गुर्जरे जीर्णतां गता ॥ ४८

तत्र घोरकलेर्योगात्पाखण्डैः खण्डिताङ्गका। दुर्बलाहं चिरं याता पुत्राभ्यां सह मन्दताम् ॥ ४९

वृन्दावनं पुनः प्राप्य नवीनेव सुरूपिणी।जाताहं युवती सम्यक्श्रेष्ठरूपा तु साम्प्रतम् ॥ ५०

इमौ तु शयितावत्र सुतौ मे क्लिश्यतः श्रमात्। इदं स्थानं परित्यज्य विदेशं गम्यते मया ॥ ५१

जरठत्वं समायातौ तेन दुःखेन दुःखिता।साहं तु तरुणी कस्मात्सुतौ वृद्धाविमौ कुतः ॥ ५२

त्रयाणां सहचारित्वाद्वैपरीत्यं कुतः स्थितम् ।घटते जरठा माता तरुणौ तनयाविति ॥ ५३

नारदजी कहते हैं- तब मैंने उस स्त्री से पूछा-देवि! तुम कौन हो ? ये दोनों पुरुष तुम्हारे क्या होते हैं? और तुम्हारे पास ये कमलनयनी देवियाँ कौन हैं? तुम हमें विस्तारसे अपने दुःखका कारण बताओ ॥ ४४ ॥

युवतीने कहा- मेरा नाम भक्ति है, ये ज्ञान और वैराग्य नामक मेरे पुत्र हैं। समयके फेर से ही ये ऐसे जर्जर हो गये हैं॥ ४५ ॥ ये देवियाँ गंगाजी आदि नदियाँ हैं। ये सब मेरी सेवा करनेके लिए ही आयी हैं। इस प्रकार साक्षात् देवियोंके द्वारा सेवित होनेपर भी मुझे सुख-शान्ति नहीं है॥ ४६॥ तपोधन। अब ध्यान देकर मेरा वृत्तान्त सुनिये। मेरी कथा वैसे तो प्रसिद्ध है, फिर भी उसे सुनकर आप मुझे शान्ति प्रदान करें ॥ ४७ ॥

मैं द्रविड़ देश में उत्पन्न हुई, कर्णाटक में बढ़ी, कहीं-कहीं महाराष्ट्रमें सम्मानित हुई; किन्तु गुजरात में मुझको बुढ़ापेने आ घेरा ॥ ४८ ॥ वहाँ घोर कलियुगके प्रभावसे पाखण्डियोंने मुझे अंग भंग कर दिया। चिरकालतक यह अवस्था रहनेके कारण मैं अपने पुत्रोंके साथ दुर्बल और निस्तेज हो गयी ॥ ४९ ॥ अब जबसे मैं वृन्दावन आयी, तबसे पुनः परम सुन्दरी सुरूपवती नवयुवती हो गयी हूँ ॥ ५० ॥ किन्तु सामने पड़े हुए ये दोनों मेरे पुत्र थके-माँदे दुःखी हो रहे हैं। अब मैं यह स्थान छोड़कर अन्यत्र जाना चाहती हूँ ॥ ५१ ॥ ये दोनों बूढ़े हो गये हैं- इसी दुःखसे मैं दुःखी हूँ। मैं तरुणी क्यों और ये दोनों मेरे पुत्र बूढ़े क्यों ? ॥ ५२ ॥ हम तीनों साथ-साथ रहनेवाले हैं। फिर यह विपरीतता क्यों? होना तो यह चाहिए कि माता बूढ़ी हो और पुत्र तरुण ॥ ५३ ॥

अतः शोचामि चात्मानं विस्मयाविष्टमानसा। वद योगनिधे धीमन् कारणं चात्र किं भवेत् ॥ ५४

नारद उवाच -

ज्ञानेनात्मनि पश्यामि सर्वमेतत्तवानघे। न विषादस्त्वया कार्यो हरिः शं ते करिष्यति। ॥५५

इसी से मैं आश्चर्यचकित चित्तसे अपनी इस अवस्थापर शोक करती रहती हूँ। आप परम बुद्धिमान एवं योगनिधि हैं; इसका क्या कारण हो सकता है बताइये ? ॥ ५४ ॥

नारदजीने कहा- साध्वि। मैं अपने हृदयचे तुम्हें विषाद नहीं करना चाहिए। श्रीहरि तुम्हारा ज्ञानदृष्टिसे तुम्हारे सम्पूर्ण दुःखका कारण देखता है कल्याण करेंगे ॥ ५५॥

सूत उवाच -

क्षणमात्रेण तज्ज्ञात्वा वाक्यमूचे मुनीश्वरः ।। ५६

नारद उवाच -

शृणुष्वावहिता बाले युगोऽयं दारुणः कलिः ।तेन लुप्तः सदाचारो योगमार्गस्तपांसि च ॥ ५७

जना अघासुरायन्ते शाठ्यदुष्कर्मकारिणः । इह सन्तो विषीदन्ति प्रहृष्यन्ति ह्यसाधवः ।

धत्ते धैर्यं तु यो धीमान् स धीरः पण्डितोऽथवा ।। ५८

अस्पृश्यानवलोक्येयं शेषभारकरी धरा।वर्षे वर्षे क्रमाज्जता मङ्गलं नापि दृश्यते ॥ ५९

न त्वामपि सुतैः साकं कोऽपि पश्यति साम्प्रतम् ।उपेक्षितानुरागान्धैर्जर्जरत्वेन संस्थिता ।। ६०

वृन्दावनस्य संयोगात्पुनस्त्वं तरुणी नवा। धन्यं वृन्दावनं तेन भक्तिनृत्यति यत्र च ॥ ६१

अत्रेमौ ग्राहकाभावान्न जरामपि मुञ्चतः ।किञ्चिदात्मसुखेनेह प्रसुप्तिर्मन्यतेऽनयोः ॥ ६२

सूतजी कहते हैं-मुनिवर नारदजीने एक क्षणमें ही उसका कारण जानकर कहा ॥ ५६ ॥ नारदजीने कहा- देवि ! सावधान होकर सुनो।

यह दारुण कलियुग है। इसीसे इस समय सदाचार योगमार्ग और तप आदि सभी लुप्त हो गये हैं॥ ५७॥ लोग शठता और दुष्कर्ममें लगकर अघासुर बन रहे हैं। संसारमें जहाँ देखो, वहीं सत्पुरुष दुःखसे म्लान हैं और दुष्ट सुखी हो रहे हैं। इस समय जिस बुद्धिमान् पुरुषका धैर्य बना रहे, वही बड़ा ज्ञानी या पण्डित है॥ ५८ ॥ पृथ्वी क्रमशः प्रतिवर्ष शेषजी के लिए भाररूप होती जा रही है। अब यह छूनेयोग्य तो क्या, देखनेयोग्य भी नहीं रह गयी है और न इसमें कहीं मंगल ही दिखायी देता है॥ ५९॥ अब किसीको पुत्रों के साथ तुम्हारा दर्शन भी नहीं होता। विषयानुरागके कारण अंधे बने हुए जीवों से उपेक्षित होकर तुम जर्जर हो रही थी ॥ ६० ॥ वृन्दावनके संयोगसे तुम फिर नवीन तरुणी हो गयी हो। अतः यह वृन्दावनधाम धन्य है जहाँ भक्ति सर्वत्र नृत्य कर रही है॥ ६१ ॥ परंतु तुम्हारे इन दोनों पुत्रोंका यहाँ कोई ग्राहक नहीं है, इसलिए इनका बुढ़ापा नहीं छूट रहा है। यहाँ इनको कुछ आत्मसुख (भगवत्स्पर्शजनित आनन्द) की प्राप्ति होनेके कारण ये सोते से जान पड़ते हैं॥ ६२॥

भक्तिरुवाच -

कथं परीक्षिता राज्ञा स्थापितो ह्यशुचिः कलिः । प्रवृत्ते तु कलौ सर्वसारः कुत्र गतो महान् ॥ ६३ करुणापरेण हरिणाप्यधर्मः कथमीक्ष्यते। इमं मे संशयं छिन्धि त्वद्वाचा सुखितास्म्यहम् ॥ ६४

भक्ति ने कहा- राजा परीक्षित्ने इस पापी कलियुग को क्यों रहने दिया? इसके आते ही सब वस्तुओंका सार न जाने कहाँ चला गया ? ॥ ६३॥ करुणामय श्रीहरि से भी यह अधर्म कैसे देखा जाता है? मुने! मेरा यह संदेह दूर कीजिए, आपके वचनों से मुझे बड़ी शान्ति मिली है॥ ६४॥

नारदजीने कहा- बाले। यदि तुमने पूछा है तो प्रेमसे सुनी; कल्याणी। मैं तुम्हें सब बताऊँगा और तुम्हारा दुःख दूर हो जायगा ॥ ६५ ॥ जिस दिन भगवान् श्रीकृष्ण इस भूलोक को छोड़कर अपने परमधाम को पधारे उसी दिनसे यहाँ सम्पूर्ण साधनोंमें बाधा डालनेवाला कलियुग आ गया ॥ ६६ ॥ दिग्विजय के समय राजा परीक्षित्की दृष्टि पड़नेपर कलियुग दौनके समान उनकी शरण में आया। भ्रमरके समान सारग्राही राजाने यह निश्चय किया कि इसका वध मुझे नहीं करना चाहिए ॥ ६७ ॥ क्योंकि जो फल तपस्या, योग एवं समाधिसे भी नहीं मिलता, कलियुग में वही फल श्रीहरिकीर्तन से ही भलीभाँति मिल जाता है॥ ६८ ॥ इस प्रकार सारहीन होने पर भी उसे इस एक ही दृष्टिसे सारयुक्त देखकर उन्होंने कलियुगमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंके सुखके लिए ही इसे रहने दिया था ॥ ६९ ॥

नारद उवाच -

यदि पृष्टस्त्वया बाले प्रेमतः श्रवणं कुरु। सर्वं वक्ष्यामि ते भद्रे कश्मलं ते गमिष्यति ॥ ६५

यदा मुकुन्दो भगवान् क्ष्मां त्यक्त्वा स्वपदं गतः ।तद्दिनात्कलिरायातः सर्वसाधनबाधकः ।। ६६

दृष्टो दिग्विजये राज्ञा दीनवच्छरणं गतः। न मया मारणीयोऽयं सारङ्ग इव सारभुक् ॥ ६७

यत्फलं नास्ति तपसा न योगेन समाधिना। तत्फलं लभते सम्यक्कली केशवकीर्तनात् ॥ ६८

एकाकारं कलिं दृष्ट्वा सारवत्सारनीरसम्। विष्णुरातःस्थापितवान् कलिजानां सुखाय च ॥ ६९

कुकर्माचरणात्सारः सर्वतो निर्गतोऽधुना। पदार्थाः संस्थिता भूमौ बीजहीनास्तुषा यथा ।। ७०

विप्रैर्भागवती वार्ता गेहे गेहे जने जने।कारिता कणलोभेन कथासारस्ततो गतः ॥ ७१

अत्युग्रभूरिकर्माणो नास्तिका रौरवा जनाः। तेऽपि तिष्ठन्ति तीर्थेषु तीर्थसारस्ततो गतः ॥ ७२

कामक्रोधमहालोभतृष्णाव्याकुलचेतसः। तेऽपि तिष्ठन्ति तपसि तपः सारस्ततो गतः ॥ ७३

मनसश्चाजयाल्लोभाद्दम्भात्पाखण्डसंश्रयात्। शास्त्रानभ्यसनाच्चैव ध्यानयोगफलं गतम् ॥ ७४

पण्डितास्तु कलत्रेण रमन्ते महिषा इव। पुत्रस्योत्पादने दक्षा अदक्षा मुक्तिसाधने ॥ ७५

न हि वैष्णवता कुत्र सम्प्रदायपुरःसरा। एवं प्रलयतां प्राप्तो वस्तुसारः स्थले स्थले ॥ ७६

इस समय लोगों के कुकर्म में प्रवृत्त होने के कारण सभी वस्तुओं का सार निकल गया है और पृथ्वी के सारे पदार्थ बीजहीन भूसी के समान हो गये हैं॥ ७० ॥ ब्राह्मण केवल अन्न-धनादि के लोभवश घर-घर एवं जन-जन को भागवत की कथा सुनाने लगे हैं, इसलिए कथाका सार चला गया ॥ ७१ ॥ तीर्थों में नाना प्रकारके अत्यन्त घोर कर्म करनेवाले, नास्तिक और नारकी पुरुष भी रहने लगे हैं; इसलिए तीर्थोंका

भी प्रभाव जाता रहा ॥ ७२ ॥ जिनका चित्त निरन्तर काम, क्रोध, महान् लोभ और तृष्णासे तपता रहता है वे भी तपस्याका ढोंग करने लगे हैं, इसलिए तपका भी सार निकल गया ॥ ७३ ॥ मनपर काबू न होनेके कारण तथा लोभ, दम्भ और पाखण्डका आश्रय लेने के कारण एवं शास्त्र का अभ्यास न करनेसे ध्यानयोग का फल मिट गया ॥ ७४ ॥ पण्डितों की यह दशा है कि वे अपनी स्त्रियों के साथ पशु की तरह रमण करते हैं; उनमें संतान पैदा करनेकी कुशलता पायी जाती है, मुक्ति-साधन में वे सर्वथा अकुशल हैं ॥ ७५ ॥ सम्प्रदायानुसार प्राप्त हुई वैष्णवता भी कहीं देखने में नहीं आती। इस प्रकार जगह-जगह सभी वस्तुओं का सार लुप्त हो गया है॥ ७६ ॥

अयं तु युगधर्मो हि वर्तते कस्य दूषणम् ।अतस्तु पुण्डरीकाक्षः सहते निकटे स्थितः ॥ ७७

सूत उवाच -

इति तद्वचनं श्रुत्वा विस्मयं परमं गता।भक्तिरूचे वचो भूयः श्रूयतां तच्च शौनक ॥ ७८

भक्तिरुवाच -

सुरर्षे त्वं हि धन्योऽसि मद्भाग्येन समागतः । साधूनां दर्शनं लोके सर्वसिद्धिकरं परम् ॥ ७९

जयति जगति मायां यस्य कायाधवस्ते

वचनरचनमेकं केवलं चाकलय्य।

ध्रुवपदमपि यातो यत्कृपातो ध्रुवोऽयं

सकलकुशलपात्रं ब्रह्मपुत्रं नतास्मि ॥ ८०

यह तो इस युगका स्वभाव ही है, इसमें किसीका दोष नहीं है। इसीसे पुण्डरीकाक्षभगवान् बहुत समीप रहते हुए भी यह सब सह रहे हैं॥ ७७ ॥

सूतजी कहते हैं- शौनकजी। इस प्रकार देवर्षि नारदके वचन सुनकर भक्तिको बड़ा आश्चर्य हुआ: फिर उसने जो कुछ कहा, उसे सुनिये ॥ ७८ ॥

भक्तिने कहा- देवर्षे ! आप धन्य हैं। मेरा बड़ा सौभाग्य था जो आपका समागम हुआ। संसार में साधुओं का दर्शन ही समस्त सिद्धियों का परम कारण है॥ ७९ ॥ आपका केवल एक बारका उपदेश धारण करके कयाधूकुमार प्रह्लादने मायापर विजय प्राप्त कर ली थी। ध्रुवने भी आपकी कृपा से ही ध्रुवपद प्राप्त किया था। आप सर्वमंगलमय और साक्षात् श्रीब्रह्माजी के पुत्र हैं, मैं आपको नमस्कार करती हूँ ॥ ८० ॥

इति श्रीपद्मपुराणे उत्तरखण्डे श्रीमद्भागवतमाहात्म्ये भक्तिनारदसमागमो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

ग्रन्थ सूची

१. वेद पारिजात

२. सामान्य संस्कृत सम्भाषण (संस्कृत भारती पुस्तक)

३. अनुवाद चन्द्रिका (लेखक-चक्रधर नौटियाल-मितिलाल प्रकाशन)

४. व्याकरण वीथिः (NCERT 9th standard)

५. वेदनिपुण भाग १-४(म.सा.रा.वे.वि.प्र.)

६. वैदिक एवं संस्कृत साहित्य का इतिहास

७. ऋक् सूक्त संग्रह (अर्थ सहित)

८. यजुर्वेद सूक्त संग्रह (अर्थ सहित)

९. ऐतरेय ब्राह्मण हिन्दी टीका सहित

१०. कठोपनिषद् हिन्दी टीका सहित

११. पुराण परिचय (१८ पुराण)

१२. श्रीमद्भगवद्गीता हिन्दी अर्थसहित (गीता प्रेस)

१३. श्रीमद्भागवत महापुराण लघु परिचय (कथा माहात्म्य)

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)

(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार)

द्वारा सञ्चालित एवं प्रस्तावित राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय



महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)

(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार)

वेदविद्या मार्ग, चिन्तामण, पो. ऑ. जवासिया, उज्जैन - ४५६००६ (म.प्र.)

Phone : (0734) 2502266, 2502254, E-mail : msrvvpujn@gmail.com, website - www.msrvvp.ac.in